स्वाभिमान संकल्प–पत्र

हमारे सपनों का भारत

VISION FOR NATION BUILDING

कालाधन देश को दिलाकर, भ्रष्टाचार को मिटाकर एवं व्यवस्था परिवर्तन करके
हमें पुनः **अखण्ड भारत** का निर्माण करके भारत को विश्व की महाशक्ति बनाना है।

आन्दोलन को समर्थन हेतु मिस कॉल करें तथा संगठन से जुड़ें 022-33081122

संगठन की विस्तृत जानकारी व आन्दोलन से जुड़ने के लिए सम्पर्क करें :

केन्द्रीय कार्यालय, भारत स्वाभिमान (न्यास), पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार-249405, उत्तराखण्ड (भारत)

Phone : 01334-240008, 273000, 246888, 244107 Fax: 01334-244805, 240664

E-mail : bharatswabhimanheadoffice@gmail.com, Website: www.bharatswabhimantrust.org

Blog: www.swami-ramdev.com को निरन्तर पढ़ें

www.facebook.com/swami.ramdev को Like करें

www.twitter.com/yogrishiramdev को Follow करें

9 अगस्त, 2012 के दिल्ली के ऐतिहासिक आन्दोलन की एक झलक

आस्था

'आस्था' चैनल पर

प्रात: 5 से 8 बजे तक व सायं 8 से 9.30 बजे तक

संस्कार

'संस्कार' चैनल पर

प्रात: 4 से 5.30 व 8.40 से 9 बजे तक

सायं 9 से 10 बजे तक

पूज्य स्वामी जी व श्रद्धेय आचार्य जी के कार्यक्रम देखकर योग-आयुर्वेद व स्वदेशी को अपने जीवन में अपनाएँ तथा दूसरों को कार्यक्रम देखने के लिए प्रेरित करके वेदों व ऋषियों के ज्ञान को घर-घर तक पहुँचाएँ।

स्वाभिमान संकल्प–पत्र

हमारे सपनों का भारत

VISION FOR NATION BUILDING

भारत स्वाभिमान (न्यास)
युवा भारत
किसान पंचायत
पतंजलि योग समिति
महिला पतंजलि योग समिति

केन्द्रीय कार्यालय : भारत स्वाभिमान (न्यास), पतंजलि योगपीठ
महर्षि दयानन्द ग्राम, हरिद्वार-249405 (उत्तराखण्ड)
Telephone : 01334-240008, 273000
E-mail : bharatswabhimanheadoffice@gmail.com
Website : www.bharatswabhimantrust.org

विषय सूची

1. कालाधन

1. देश का सबसे बड़ा प्रश्न व मुद्दा कालेधन की अर्थव्यवस्था 5
2. कालेधन का पूरा सच 15
3. देश विदेश में जमा कालाधन देश को दिलाने के लिए केन्द्र सरकार को कौन से कानूनी प्रावधान करने पड़ेंगे? 22
4. एक बड़ी भ्रष्ट राजनैतिक पार्टी के आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक बड़े पाप क्या हैं? 27
5. देश की भलाई में सरकार को आपत्ति क्यों? 29

2. आन्दोलन

1. हमारे आन्दोलन व संगठन की मुख्य विचारधारा एवं सिद्धान्त 30
2. हम क्या चाहते है? 33

3. संगठन का सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक सिद्धान्त, लक्ष्य एवं विचारधारा

[भारत स्वाभिमान आन्दोलन व संगठन की त्रिसूत्रीय कार्य-योजना]

1. भारत स्वाभिमान आन्दोलन के तीन लक्ष्य 36
2. कालाधन वापस लाने के लिए तीन मुख्य प्रक्रियाएँ 36
3. भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए तीन मुख्य प्रक्रियाएँ 37
4. व्यवस्था-परिवर्तन के तीन मुख्य मुद्दे 37
5. महंगाई को दूर करने के तीन उपाय 39
6. बेरोजगारी दूर करने के तीन मुख्य मन्त्र 40
7. गरीबी को दूर करने के लिए तीन मन्त्र 40
8. भारत को विश्व की महाशक्ति बनाने की तीन योजनाएँ 42
9. संगठन के सेवा व आन्दोलन के तीन-तीन आयाम 42
10. युवाओं के लिए तीन सूत्र 43
11. राष्ट्र की तीन मूलभूत शक्तियाँ 43
12. आर्थिक व्यवस्था (जी.डी.पी.) के तीन मूल आधार 43
13. भारतीय अर्थव्यवस्था की तीन बड़ी वास्तविक सच्चाइयाँ 43
14. तीन प्रायोजित झूठ 44

15. तीन बड़े षड्यन्त्र 44
16. भारत का स्वर्णिम अतीत एवं अखण्ड भारत की सीमाएँ 45
17. धर्म व कर्म का मर्म 45
18. राष्ट्र के ज्वलन्त प्रश्न व मुद्दें 46
19. सभी राजनैतिक पार्टियों का प्रत्याशियों को एक शपथ पत्र देश को देना चाहिए 53

4. आदर्श ग्राम निर्माण का ग्यारह सूत्रीय कार्यक्रम

1. ग्यारह सूत्रीय कार्यक्रम 54
2. गाँव की बर्बादी व पिछड़ेपन के कारण 57

5. विषमुक्त कुदरती खेती

1. गौ का अर्थशास्त्र व धर्मशास्त्र 58
2. गाय का अर्थशास्त्र 59
3. खुद तो जहर मत खाइए तथा अपने बच्चों को भी थाली में विष मत परोसिए 59
4. कृषि व किसान से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य 59
5. कुदरती खेती के लिए कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ 60
6. फसल चक्र का विज्ञान 62
7. पतंजलि ग्रामोद्योग में विषमुक्त कुदरती खेती के व्यावहारिक प्रयोग 63
8. पतंजलि ग्रामोद्योग में कुदरती खेती के व्यावहारिक प्रशिक्षण (प्रेक्टिकल ट्रेनिंग) हेतु सुविधायें 63
9. कुदरती खाद निर्माण की अनुभूत मुख्य प्रक्रियाएँ 64
10. जैविक कीटनियन्त्रक निर्माण की प्रक्रियाएँ 66

6. आयुर्वेद

1. घरेलु उपचार 69
2. आयुर्वेद के अनुसार आहार-विहार एवं मुख्य रोगों के लिए श्रेष्ठ औषधियों का वर्णन 73

7. आज से लगभग 5 वर्ष पूर्व प्रकाशित भारत स्वाभिमान के व्यवस्था परिवर्तन पत्रक के कुछ अति महत्वपूर्ण अंश

1. भारत का स्वर्णिम अतीत व वर्तमान की चुनौतियां 77
2. मैकाले का षड्यंत्र 78
3. अपराधियों के लिए कठोर कानून जरूरी 78
4. देश की दुर्दशा व गलत नीतियों के लिए जिम्मेदार कौन? 78
5. मैंने यह अभियान क्यों शुरू किया? 79
6. एक सामूहिक भय या डर व स्वामीजी का उत्तर 79
7. हमारा संकल्प 80
8. वैदिक शौर्य मन्त्र 80
9. सद्विचार-प्रवाह 82
10. दान से जीवन-दान व राष्ट्र-उत्थान 85

8. तालिकाएं

1. विदेशी कम्पनियों की लूट के षड्यन्त्र का चक्रव्यूह 86
2. भारत में बड़ी विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ (एम.एन.सी.) 87

9. दैनिक योग का अभ्यास-क्रम

1. मुख्य प्राणायाम एवं सहयोगी क्रिया 90

10. श्रद्धेय स्वामीजी की भीष्म प्रतिज्ञा

1. श्रद्धेय स्वामीजी की भीष्म प्रतिज्ञा 91
2. संस्थान व संगठन की सेवाएँ 92

देश का सबसे बड़ा प्रश्न व मुद्दा कालेधन की अर्थव्यवस्था

कालेधन की अर्थव्यवस्था खत्म होने से आम लोगों व देश को क्या लाभ होगा?

1. कालाधन कितना है?

कालेधन की मात्रा को लेकर 1955-56 में **प्रोफेसर कैल्डोर** ने G.D.P. (सकल घरेलू उत्पाद) का 2%-4% कालाधन एस्टिमेट किया था। 1970 में **वांचु कमेटी** ने 7%, 1980-81 में **नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक फायनेंस एण्ड पॉलिसी** ने 18% से 21%, 1995-96 में **जे.एन.यू. के प्रोफेसर अरुण कुमार** व उनकी टीम ने 40% तथा अब प्रो. अरुण कुमार सहित कई शीर्ष अर्थशास्त्री मानते हैं कि 2012-13 में यह कालाधन हमारी G.D.P. का कम से कम 50% हो गया है।

इसका 10% से 16% हर वर्ष बाहर जाता है। यह भी भारतीय अर्थशास्त्रियों से लेकर G.F.I. (ग्लोबल फायनेंश्यल इंटेग्रिटी) व T.J.N. (टैक्स जस्टिस नेटवर्क) आदि सभी का मानना है।

अब तक G.F.I. के अनुसार देश के बाहर भारत का लगभग 25 लाख करोड़ तथा जे.एन.यू. के प्रोफेसर अरुण कुमार व अन्य भारतीय अर्थशास्त्रियों के अनुसार देश के बाहर 100 से 150 लाख करोड़ रुपये कालाधन है। क्योंकि G.F.I. के लोगों ने देश के बाहर कालेधन के अनुमान में अन्डर इन्वाइसिंग, ओवर इन्वाइसिंग तथा ट्रांसफर प्राइसिंग की ही गणना की है, इसमें हवाला व नार्कोटिक्स ट्रेफेकिंग आदि जो कि बाहर कालाधन भेजने के सबसे बड़े माध्यम हैं इसको उन्होंने नहीं जोड़ा है। यह सब जोड़ने पर G.F.I. से 4 से 6 गुना अधिक अर्थात् 100 से 150 लाख करोड़ रुपये का कालाधन देश के बाहर अब तक माना गया है। जब देश के बाहर हमारा 100 से 150 लाख करोड़ रुपये का कालाधन है, जिसको कि प्रोफेसर अरुण कुमार व अन्य भारतीय अर्थशास्त्री मानते हैं कि वह मात्र 10% ही है, तो शेष कालाधन अपने ही देश में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में लगा हुआ है। इस 90% कालेधन की मात्रा की यदि न्यूनतम मात्रा का भी अनुमान (एस्टिमेट) लगाये तो भी मोटे तौर पर वह 900 से 1350 लाख करोड़ बैठता है।

अर्थव्यवस्था में कालेधन को एस्टिमेट करने या अनुमान लगाने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। यह कोई तुक्केबाजी नहीं है, अनुमान प्रमाण भी उतना ही सत्य होता है जितना कि प्रत्यक्ष प्रमाण। ओपन मार्केट में कितना व्यापार बिल के द्वारा तथा कितना बिना बिल के होता है। इसी तरह से कितने रुपये में वास्तविक रूप में जमीन बिकती है तथा कितने रुपये में इसकी रजिस्ट्री होती है। इसी प्रकार कितना धन, सम्पत्ति (जमीन, सोना, जेवरात आदि) किसी व्यक्ति के पास वास्तविक रूप में है तथा कितना उसने सरकार की

Balance Sheet में दर्शाया है। इन सब बातों की यथार्थ जानकारी या जमीनी हकीकत का अनेक प्रकार से जाँचने-परखने के बाद ही पता लगाया जा सकता है। किस-किस क्षेत्र में कितना कालाधन है, उसका सर्वे आदि वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के द्वारा अनुमान लगाया जाता है। ओपन मार्केट, जमीन और सोने की तरह नशा उद्योग, राजनीति, टैक्स चोरी, रिश्वतखोरी एवं अवैध खननादि से लेकर बड़े-बड़े घोटालों से अर्जित धन को इस अनुमान में सम्मिलित किया है। इसी आधार पर प्रोफेसर कैल्डोर से लेकर प्रोफेसर अरुण कुमार, G.F.I., T.J.N., T.I. (ट्रांस्परेन्सी इन्टरनेशनल) आदि संस्थाएं तथा वर्ल्ड बैंक ने इस कालेधन का अनुमान लगाकर इसकी पूरी हकीकत से देश व दुनियाँ को अवगत कराया है।

I.I.M. बैंग्लोर के प्रतिष्ठित प्रोफेसर व देश के वरिष्ठ अर्थशास्त्री आर. वैद्यनाथन्जी ने कालाधन व भ्रष्टाचार पर एक सर्वे के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि भारत में प्रतिवर्ष रोजमर्रा के काम कराने के लिए जो देश के लोगों को रिश्वत- **ब्राइब टैक्स** देनी पड़ती है वह लगभग 1 लाख करोड़ है (जिसमें बड़े घोटाले, बड़ी रिश्वत, कमीशन, किक-बैक, सार्वजनिक विकास राशि का गबन आदि शामिल नहीं है)। इसी प्रकार प्रतिवर्ष यदि टैक्स चोरी का न्यूनतम मूल्यांकन करें, तो वह भी टैक्स कलेक्शन का कम से कम 20% होता है जो कि लगभग 3 लाख करोड़ रुपये होता है। इसी तरह से सालाना बड़े घोटालों से कम से कम लगभग 4 लाख करोड़ रुपये से अधिक देश का धन लूटा जा रहा है। इस प्रकार दोनों तरह के भ्रष्टाचार से जो कालाधन प्रतिवर्ष जमा होता है वह लगभग 8 लाख करोड़ रुपये हैं। यह अध्ययन 2010 व 2011 का है। अब जिस तरह से बोफोर्स घोटाले से लेकर C.W.G., 2G, कोल G, दामादजी से लेकर 48 लाख करोड़ के थोरीयम घोटाले तक स्कैम्स में रेकार्ड दर वृद्धि हो रही है, उसमें प्रतिवर्ष यह कालाधन भी 10 लाख करोड़ रुपये से भी अधिक हो सकता है।

इस प्रकार देश के बाहर व भीतर कुल लगभग 1000 से 1500 लाख करोड़ रुपये कालेधन की अर्थव्यवस्था चल रही है। देश का यह कालाधन इल्लीगल मनी या इल्लीगल असेट्स अर्थात् अवैध धन या अवैध सम्पत्ति के रूप में गोल्ड, लैंड, रीयल स्टेट, इन्फ्रास्ट्रक्चर, वायदा बाजार, राजनीति, दो नम्बर के अन्य काले धन्धे या माइनिंग आदि क्षेत्रों में लगा हुआ है। ये कालाधन देश को मिल सकता है और कालेधन के चोरों को हम हिन्दुस्तान में ही अर्थात् अपने देश में ही पकड़ सकते हैं। इसके लिए बाहर कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है, बस इसके लिए राजनैतिक ईमानदारी व दृढ़ इच्छाशक्ति व थोड़ा सा साहस चाहिए। इन कालेधन के कुबेरों पर कार्यवाही के लिए जब देश में ही ये पकड़े जायेंगे तो विदेश से तो अपने आप ले आयेंगे। एक हजार लाख करोड़ रुपये से अधिक के इस कालेधन के इतने गंभीर मुद्दों को एक राजनैतिक पार्टी मजाक की तरह लेती है।

यह कालाधन देश को मिलने से गरीबी, बेरोजगारी व महंगाई आदि तो एक ही दिन में खत्म हो जायेगी। इस कालेधन पर देश के 121 करोड़ लोगों का हक है। ये हम किसी भी कीमत पर लेकर रहेंगे। कांग्रेस कालेधन की मात्रा व यह कैसे देश को मिलेगा इसको लेकर लगातार झूठ बोलती रही है, देश के साथ धोखा, गद्दारी व विश्वासघात कर रही है। अब इनको सबक सिखाने का वख्त आ गया है।

लगभग एक हजार करोड़ से लेकर पन्द्रह सौ लाख करोड़ की अर्थव्यवस्था यह कालेधन की है। इसमें से 100 से 150 लाख करोड़ रुपये जहाँ विदेशों में जमा हैं, वहीं 900 से 1350 लाख करोड़ रुपये देश में अर्थ व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में लगा हुआ है। लेकिन अर्थव्यवस्था में इसकी गणना नहीं कि

जाती या गणना संभव नहीं हो पाती क्योंकि यह अकाउन्टेबल नहीं है इसीलिए तो इसे अनकाउन्टेड मनी, ब्लैक मनी, क्राइम मनी, डर्टी मनी, अन्डर ग्राउंड मनी या पैरेलल इकोनोमी आदि नामों से जाना जाता है अर्थात् मनी व असेट्स तो हैं पर ये इल्लिगल मनी या इल्लिगल असेट्स के रूप में है। पेपर पर धन नहीं होने से ये पकड़ में नहीं आ रहे हैं। इन्हें पकड़ने के लिए ही हम कुछ महत्वपूर्ण प्रावधान करने का मुद्दा आंदोलन के माध्यम से उठा रहे हैं।

इस अर्थव्यवस्था के ठीक न होने से ही देश में अनर्थ, पाप, अधर्म, अन्याय या नाइंसाफी हो रही है और देश कमजोर, तबाह व बर्बाद हो रहा है। देश के पूरे अनर्थ के मूल में यह काला अर्थ ही है।

देश-विदेश में जमा इस कालेधन की मात्रा का मोटे तौर एवं बीच का निर्विवादित आंकड़ा कम से कम एक हजार लाख करोड़ रुपये की ही इस कालेधन की अर्थव्यवस्था के खत्म होने पर अर्थात् विदेश से देश का धन वापस आने पर तथा देश के अन्दर का भी कालाधन मुख्य धारा की अर्थव्यवस्था में सम्मिलित होने पर देश व देशवासियों का इससे क्या लाभ होगा तथा इसका आर्थिक क्षेत्र से लेकर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर क्या असर (प्रभाव) पड़ेगा उसका एक संक्षिप्त विवरण हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। इस कालेधन व कालेधन के चोरों व गद्दारों से देश को मुक्ति दिलाने हेतु हम आपका आह्वान करते हैं।

2. कालेधन का आर्थिक क्षेत्र पर प्रभाव

अर्थव्यवस्था के मुख्य 10 आयाम हैं। जब यह कालाधन देश को मिलेगा और आगे से कालाधन जमा नहीं होगा तो उस समाधान की स्थिति में देश की अर्थव्यवस्था कैसी होगी? उसका एक तुलनात्मक संक्षिप्त अध्ययन अर्थव्यवस्था की **वर्तमान स्थिति** तथा कालेधन की समानान्तर अर्थव्यवस्था समाप्त होने पर **समाधान की स्थिति** में हमारी अर्थव्यवस्था के वास्तविक स्वरूप को हम यहाँ पूरे तथ्यों व प्रमाणों के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं-

1. **वर्तमान स्थिति:** G.D.P.- आज हमारा G.D.P. लगभग 100 लाख करोड़:

   समाधान स्थिति: *देश-विदेश में जमा यह कालाधन जब देश की मूलधारा की अर्थव्यवस्था में सम्मिलित होगा तब हमारी* G.D.P. *या अर्थव्यवस्था लगभग एक से डेढ़ हजार लाख करोड़ होगी जोकि अमेरिका से लगभग डेढ़ गुनी, चीन से दो से तीन गुनी तथा जापान से 5 से 7 गुनी बड़ी होगी। हमारी अर्थव्यवस्था निर्विवादित रूप से विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी।*

2. **वर्तमान स्थिति: ग्रोथ रेट**- आज हमारी ग्रोथ रेट 6% के आसपास है।

   समाधान स्थिति: *कालेधन के अर्थव्यवस्था की मूलधारा खत्म होने से या उसके मूल धारा में सम्मिलित होने से जो पैसा अभी गोल्ड व लैंड आदि में ब्लैक मनी के रूप में अनुत्पादक पड़ा हुआ तथा राजनीति, नशा उद्योग व अवैध खननादि विनाशकारी कार्य में लगा हुआ है जब वह खेती, उद्योग धन्धों, सेवा के विभिन्न क्षेत्रों, अनुसंधान, जल प्रबन्धन, शिक्षा व स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में लगेगा तो देश की हर क्षेत्र में अर्थात् एग्रीकल्चर, इंडस्ट्री एवं सर्विसेज में या कहें कुल जी.डी.पी., में इससे 4 गुना ग्रोथ होगी तब हमारी ग्रोथ रेट 15 से 20% विश्व में सर्वाधिक होगी।*

3. **वर्तमान स्थितिः बचत-** आज हमारे देश की G.D.P. की कुल बचत औसत रूप से 30 से 35% के लगभग रहती है।

समाधान स्थितिः *कालाधन अभी देश में मुख्य रूप से कुछ चन्द मुट्ठीभर भ्रष्ट नेता, कुछ भ्रष्ट अधिकारियों, कुछ भ्रष्ट व्यापारियों तथा अन्य क्षेत्रों में जो बहुत ही बड़ी हस्तियां मानी जाती हैं, उनके पास जमा है और यह कालाधन ज्यादातर अनप्रोडैक्टिव है। क्योंकि बुरे लोग इसका पता नहीं लग जाये इसीलिए छिपाकर रखते हैं। ये मुश्किल से देश की कुल आबादी के 1 से 3% लोग होंगे। जब यह कालाधन विकास के विभिन्न क्षेत्रों में पारदर्शिता के साथ यह पैसा गाँवों तक पहुँचेगा तब सभी समर्थ व असमर्थ लोग मिलकर जहाँ एक ओर देश को आगे बढ़ाने में देश की खुशहाली में साथ-साथ मिलकर काम कर सकेंगे, वहीं दूसरी ओर दोनों की खुशहाली बढ़ेगी। गरीबी व अमीरी का फासला कम होगा। साधारण लोगों को जब पूरा काम और उनकी मेहनत का न्यायपूर्ण हक मिलेगा तो उनको जीवन स्तर रहन-सहन, खानपान व शिक्षा आदि के स्तर में सुधार होगा और उनके पास पैसे की बचत भी होगी। अभी जो ब्लैक मनी पड़ी है या तो वह ब्लैक मनी के रूप में पड़ी है या कालाधन काले धन्धों, गलत कामों या विनाशकारी कामों में लगा हुआ है। इससे देश की बचत दर बहुत कम है। कालाधन खत्म होने पर यह बचत दर आज की तुलना में कम से कम डेढ़ से दुगनी होगी तथा इसकी मात्रा कुल अर्थव्यवस्था के आकार से लाखों करोड़ रुपये होगी। हमारे पास इतनी सरप्लस मनी होगी कि हम दुनियाँ को कर्ज दे सकेंगे। हमारा देश दुनियाँ का सबसे धनवान् देश होगा।*

4. **कर व्यवस्था** [टैक्सेशन] : करों की संख्या, उनका परिणाम व कुल प्राप्ति

क) **वर्तमान स्थितिः** आज भारत में वेट, सर्विस टैक्स, इन्कम टैक्स व एक्साइज से लेकर रोड टैक्स, रजिस्ट्री टैक्स (स्टैम्प ड्यूटी), हाऊस टैक्स एवं वाटर टैक्स आदि 32 प्रकार के प्रत्यक्ष व परोक्ष कर हैं। अधिक कर होने से गैस, डीजल, पैट्रोल आदि वस्तुएं उपभोक्ताओं या देश के नागरिकों को वस्तु के मूलभूत वास्तविक मूल्य से औसत रूप से दुगने मूल्य पर मिलती हैं। इससे एक तरफ जहाँ मंहगाई बढ़ती है वहीं दूसरी ओर लोग अधिक कर चुकाने की वजह से गरीब होते हैं उनके पास बचत (सेविंग) नहीं हो पाती।

समाधान स्थितिः *कालेधन की अर्थव्यवस्था खत्म होने से 25 से 50 वर्षों तक हमारे देश के लोगों को नाममात्र टैक्स देना पड़ेगा तथा न्यूनतम टैक्स लगाने से भी सरकार को कम से कम 25 से 50 लाख करोड़ रुपये की राशि कर के रूप में मिल सकती है।*

ख) **वर्तमान स्थितिः** संक्षेप में अधिक कर से मंहगाई व गरीबी सीधे तौर पर बढ़ती है।

समाधान स्थितिः *टैक्स कम होने से गैस 250 से 300 रुपये की, डीजल 30 से 35 रुपये तथा साबुन, साईकल व मोटरसाईकल, गाड़ी आदि भी 30 से 50% सस्ते मूल्य पर लोगों को उपलब्ध हो सकेंगे। महंगाई कम होने से लोगों की बचत बढ़ेगी। लोग गरीब नहीं होकर धनवान् होंगे।*

ग) **वर्तमान स्थितिः** अधिक टैक्स होने से लोग टैक्स की चोरी भी करते हैं। 90 से 99% अति अमीर लोग बहुत कम टैक्स चुकाते हैं तथा 90 से 99% साधारण लोग पूरा टैक्स चुकाते हैं, लेकिन यह

दिखता नहीं क्योंकि यह वैट व सर्विस टैक्स आदि परोक्ष रूप में होता है। इससे फिर कालाधन जमा होता है। अत: लगभग 32 प्रकार के डायरेक्ट इन्डायरेक्ट टैक्सों के स्थान पर दो-तीन प्रकार के टैक्स जैसे ट्रांजिक्शन टैक्स व निर्यात कर आदि लगाने चाहिए। इतने टैक्सों के बाद भी हमारा टैक्स कलेक्शन हमारी G.D.P. का लगभग 17 से 18% है, जबकि आदर्श रूप में पूरे विश्व में इसका अनुपात 25 से 50% तक है। उदाहरण के तौर पर यू.एस.ए. में 26 से 27%, यू.के. में 34 से 36% तथा डेनमार्क में 49 से 50% है।

समाधान स्थिति: *लोग टैक्स की चोरी नहीं करेंगे। कर व्यवस्था जटिल न होकर अत्यन्त सरल होगी। अतिरिक्त रूप से C.A., सेल टैक्स, इन्कम टैक्स व अन्य टैक्सों के झगड़ों के मुकद्मों में पैसे की बर्बादी नहीं होगी। न्यायालयों, पुलिस विभाग व सरकार के टैक्सेशन विभाग का अनावश्यक बोझ खत्म होगा।*

लोग ईमानदारी से पूरा टैक्स देंगे तथा कालाधन व भ्रष्टाचार की भ्रष्ट व्यवस्था का अन्त होने से देश के लोगों की मेहनत का पैसा देश के वास्तविक विकास, सामूहिक सेवाओं, गरीब व पिछड़े वर्ग के उत्थान की योजनाओं में देश का धन ईमानदारी से खर्च होगा।

5. **वर्तमान स्थिति: सरकारी बजट की स्थिति**- आज हमारी सरकार गैस, डीजल व पैट्रोलादि का दोगुना मूल्य लेकर तथा गैर जरूरी टैक्स लगाकर जल, जंगल, जमीन व भू-सम्पदा आदि सब कुछ अन्यायपूर्ण तरीके से नीलाम करके भी घाटे में चल रही है। मंहगाई पर काबू नहीं कर पा रही है। विकास की योजनाओं, गरीबों के कल्याण की योजनाओं का बुरा हाल है क्योंकि सरकार के पास पैसा नहीं है। दुनियाँ में देश की साख को बट्टा लग रहा है। गरीब इंसान व गरीब देश की दुनियाँ में कोई इज्जत नहीं होती है।

समाधान स्थिति: *विदेशों में जमा कालाधन देश को मिलने से तथा देश में कालेधन की अर्थव्यवस्था समाप्त होने से सरकार के पास अतिरिक्त धन होगा। सरकार के खजाने भरे हुए होंगे। पूअर गवर्नेन्स, डैफिसेट न होकर सरकार पावरफुल होगी तथा सर्प्लस में रहेगी।*

मंहगाई खत्म होगी, विकास योजनाओं के लिए भरपूर धन होगा, हमारे यहाँ विश्वस्तरीय विकास का ढांचा, विश्वस्तरीय शिक्षा व चिकित्सा संस्थान, तथा शोध व अनुसंधान संस्थान हर क्षेत्र में भारत विश्व में अग्रणी भूमिका में होगा। गरीबी वास्तविक रूप से खत्म होगी। विश्वस्तरीय संस्थाओं वर्ल्ड बैंक, आई.एम.एफ. डब्ल्यू.टी.ओ., यू.एन.ओ. तथा ऑक्सफोर्ड, हॉवर्ड, कैम्ब्रीज एवं नासा से भी उत्कृष्ट संस्थान भारत में घर बना सकेंगे।

6. **वर्तमान स्थिति: प्रति व्यक्ति आमदनी**- आज भारत का प्रति व्यक्ति आय विश्व के श्रेष्ठ देशों की तुलना में बहुत कम है। हाँ, विश्व के अमीर लोगों की सूचि में भारत के कुछ धनकुबेर लोग जरूर सम्मिलित हो जाते हैं। 84 करोड़ के लगभग लोगों की औसत आय 20 रुपये से भी कम है। पहले तो यहाँ एक सुदामा था आज तो 84 करोड़ सुदामा हैं। इनके उद्धार हेतु हम सबको खुद कृष्ण की भूमिका में खड़ा होना पड़ेगा।

समाधान स्थिति: *जब कालाधन देश को मिलेगा तथा उसका विकास के विभिन्न क्षेत्रों में बिना*

किसी पक्षपात व भेदभाव के विवेकपूर्वक न्यायपूर्ण निवेश व वितरण होगा तो देश के प्रत्येक व्यक्ति व परिवार की औसत आय आज से कम से कम 10 गुणा अधिक होगी। कोई भी बेबस, लाचार, दीन-हीन, दु:खी, दरिद्र व अशिक्षित नहीं रहेगा। सबको सम्मान व स्वाभिमान के साथ जीने का हक मिलेगा।

7. **वर्तमान स्थिति: निर्यात-आयात (Export-Import) तथा विदेशी मुद्रा व सोने का भण्डार (Reserves of Foriegn Exchange and Gold)** - आज भारत का कुल निर्यात लगभग 7 से 10 लाख करोड़ रुपये है, जबकि चीन का निर्यात लगभग 100 लाख करोड़ रुपये है। इसी प्रकार भारत का विदेशी मुद्रा व सोने का भण्डार लगभग 16.5 लाख करोड़ है और चीन का लगभग 180 लाख करोड़ है।

   समाधान स्थिति: *कालाधन की अर्थव्यवस्था समाप्त करके और उसका विभिन्न क्षेत्रों तथा प्रत्येक जिले में एक एक्सपोर्ट यूनिट स्थापित करने में निवेश करके हम निर्यात में चीन से भी आगे निकल सकेंगे तथा देश में बेरोजगारी आदि की समस्या से भी मुक्त हो जायेंगे। आज हमें खाने के तेल से लेकर दालें, कभी-कभी चीनी व दूध आदि तक का आयात करना पड़ता है। इससे देश का धन विदेशों में जाता है तथा हमारा विदेशी मुद्रा भण्डार भी कम हो जाता है। कालाधन समाप्त होने पर हमारा देश कृषि, उद्योग, उत्पादन व सेवा आदि हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनेगा। इसी तरह हमारा* Reserves of Foreign Exchange *भी आज से कई गुना अधिक होगा।*

8. **वर्तमान स्थिति: विश्व अर्थव्यवस्था में भारत की हिस्सेदारी-** इस समय विश्व अर्थव्यवस्था अर्थात् जी.डी.पी. में भारत की भागीदारी 1.5 की है।

   समाधान स्थिति: *कालाधन आने पर विश्व अर्थव्यवस्था में भारत की भागीदारी कम से कम 20 से 25% होगी। भारत विश्व की आर्थिक महाशक्ति बनने पर हमारे मित्र व शिष्य देशों की एक बहुत बड़ी ताकत हमारे साथ खड़ी होगी एवं अखण्ड भारत का सपना साकार होगा।*

9. **वर्तमान स्थिति: भारत की मुद्रा - रुपये का मूल्य-** आज कमजोर अर्थव्यवस्था के कारण डॉलर, पौंड, यूरो, येन व युवान के मुकाबले रुपये का लगातार अवमूल्यन हो रहा है। 1 डॉलर की कीमत रुपये के मुकाबले 50 गुना अधिक है। इसी तरह पौंड के मुकाबले भी हम औसत 80 गुना कमजोर हैं। 15 अगस्त 1947 को रुपये, डॉलर व पौंड की कीमत में एक-दो से लेकर अधिकतम पाँच तक का फासला था।

   समाधान स्थिति: *कालेधन की अर्थव्यवस्था खत्म होने से देश के रुपये की कीमत डॉलर व पौंड आदि के मुकाबले लगभग बराबर होगी। डॉलर व पौंड आदि विदेशी मुद्रा के लोभ में जो भी हमारे प्रतिभावान भारतीय विदेशों में काम कर रहे हैं वे डॉक्टर, वैज्ञानिक, शिक्षाविद एवं व्यापारी आदि भी भारत में आकर अपनी पूंजी व प्रतिभा का उपयोग करके देश को विश्व की महाशक्ति बनाने में बड़ी भूमिका निभायेंगे।*

10. **वर्तमान स्थिति: विदेशी निवेश-** जिस देश की अर्थव्यवस्था बहुत मजबूत होती है, उस ताकतवर

राष्ट्र में विश्व की सब आर्थिक शक्तियाँ निवेश के लिए लालायित रहती हैं। आज अमेरिका, चीन, दुबई, सिंगापुर आदि देशों को लाभकारी व सुरक्षित निवेश के लिए चुना जा रहा है। लेकिन वहाँ विकास की संभावनाएं क्षीण हो रही हैं, क्योंकि ये पहले से ही विकसित राष्ट्र हैं। विकासशील राष्ट्रों में ही निवेश अधिक लाभकारी होता है।

समाधान स्थिति: *कालाधन देश में आने से तथा टैक्स कम होने से पूरी दुनियाँ की बड़ी आर्थिक ताकतों का निवेश भारत की ओर आकर्षित होगा क्योंकि भारत ही सबसे अधिक लाभकारी व सुरक्षित निवेश का सबसे बड़ा केन्द्र होगा।*

लेकिन फिर भी हम विदेशी आर्थिक निवेश को कुछ गिने-चुने क्षेत्रों में जैसे- शिक्षा, स्वास्थ्य, इन्फ्रास्ट्रक्चर, उच्च तकनीकि वाले उद्योग व अनुसंधान आदि में अपनी शर्तों पर ही स्वीकार करेंगे। अपने देश की अर्थव्यवस्था को हम विदेशी हाथों में गुलाम नहीं होने देंगे तथा अपने देश के आम लोगों का हक नहीं मरने देंगे। उनके साथ अन्याय नहीं होने देंगे।

रिटेल आदि क्षेत्रों में विदेशी पूंजी निवेश को अनुमति देकर हम अपने देश के लोगों की रोजी, रोटी व खेती आदि पर आंच नहीं आने देंगे। निवेश तो आयेगा पर हमारी शर्तों पर! आज कालाधन के चलते विदेशी निवेश विदेशी ताकतों की शर्तों पर आ रहा है। वैसे अर्थव्यवस्था का यह भी एक बहुत बड़ा सत्य है कि कालाधन देश को मिलने पर विदेशी पूंजी की आवश्यकता नगण्य सी रह जायेगी तथा भारत के पास जो अतिरिक्त पूंजी होगी- भारत दूसरे देशों में निवेश करने वाली एक बड़ी ताकत के रूप में उभरेगा।

3. राष्ट्र के कुछ अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कालेधन का असर या प्रभाव

1. **राजनीति:** राजनीति में कालेधन का इस्तेमाल करके कुछ भ्रष्ट राजनैतिक लोग नोट के बदले वोट एवं शराब से वोट लेते हैं तथा अन्य बहुत से अवैध व अनैतिक कार्य भी इसी कालेधन से करते हैं। कालेधन पर अंकुश लगाने पर राजनीति का अपराधिकरण भी समाप्त हो जायेगा।
2. **बुनियादी सुविधाएं:** कालाधन देश को मिलने से रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पानी व सड़क से लेकर विश्वस्तरीय शिक्षा, स्वास्थ्य व सुरक्षा की सुविधाएं देश के सभी नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के समान रूप से मिल सकेंगीं। वर्तमान कालेधन के कारण ही इन सुविधाओं का बुरा हाल है तथा ह्यूमन डवलप्मेन्ट रिपोर्ट में भारत 124 स्थान पर है।
3. **आतंकवाद, नक्सलवाद, हिंसा व अपराध आदि:** इन सब कार्यों में व्हाईट मनी अर्थात् चैक व ड्राफ्ट के जरिये धन खर्च नहीं किया जाता है। कालेधन का इस्तेमाल इनके प्रशिक्षण, वेतन व अवैध हथियार आदि खरीदने में किया जाता है।
4. **महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी व गैर बराबरी:** इन सब समस्याओं के मूल में कालाधन, भ्रष्टाचार व अन्यायपूर्ण भ्रष्ट व्यवस्था है। अत: कालेधन के खत्म होते ही इन समस्याओं का भी अन्त स्वत: ही हो जायेगा। पिछड़े-अति पिछड़े, दलित, वाल्मीकी, वनवासी तथा अल्पसंख्यक आदि दबे-कुचले

कमजोर वर्ग के लोग हमेशा भ्रमित व आशंकित रहते हैं कि आखिर उनका उद्धार कैसे होगा? उनको समाज व देश में बराबरी का हक कैसे मिलेगा व उनके जीवन में खुशहाली कैसे आयेगी? इन सब प्रश्नों का एक ही समाधान है- कालाधन। कालाधन लाओ, भ्रष्टाचार मिटाओ और व्यवस्था को आध्यात्मिक व न्यायपूर्ण बनाओ। भौतिक जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति पैसे से होती है और देश का यह लाखों करोड़ का काला पैसा जब मिलेगा, तभी सबके जीवन में खुशहाली आ पायेगी। इसके सिवा कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं। **'नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।'**

5. **गाँवों की बर्बादी:** लाखों करोड़ रुपयों का यह कालाधन जब गाँवों के विकास हेतु खर्च होगा, तो एक-एक गाँव के विकास में औसत रूप से 100 से 200 करोड़ रुपये आयेगा तो गाँव अपने आप स्वर्ग बनेंगे। गाँवों का विकास होने से शहरों में बढ़ती आबादी का बोझ कम होगा। गाँव व शहर दोनों शहरों की तरह विकसित बनेंगे। आज तो पूरे वातावरण में जहर घुला हुआ है तथा देश का वातावरण गंदगी व नरक जैसा बना हुआ है इसी कालेधन के कारण।

6. **नशा व अन्य ड्रग्स, नार्कोट्रिक्स, ह्यूमन ट्रेफेकिंग आदि:** अवैध नशा का धन्धा तथा अन्य सभी अनैतिक कार्यों पर अंकुश लगेगा। व्हाईट मनी का लेन-देन पारदर्शी (ट्रांसपरेन्ट) होता है। उसका जहां भी नैतिक-अनैतिक, वैध-अवैध कार्यों में इस्तेमाल हुआ है, उसका पता लगाया जा सकता है और उस पर अंकुश भी लगाया जा सकता है। लेकिन कालेधन का पेपर पर कोई लेन-देन, हिसाब-किताब या बैंक आदि से ट्रान्जेक्शन नहीं होता है और यदि होता भी है, शेल कम्पनी, हेज फण्ड्स आदि बनाकर होता है तथा बैंकिंग सीक्रेसी लॉज़ के कारण इसका पता लगाना असंभव सा हो जाता है। परिणामतः आतंकवाद, नक्सलवाद, अवैध खनन, नशा व राजनीति आदि में यह कालाधन बहुत बड़ी मात्रा में इस्तेमाल होता ही है।

   कालेधन के इन चोरों के पास अथाह पैसा जमा होने से देश में आर्थिक असंतुलन गैर बराबरी आदि समस्याएं तो पैदा होती हैं। साथ ही देश की सुरक्षा भी खतरे में पड़ जाती है तथा विकास की गति अत्यन्त धीमी पड़ जाती है। अतः आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय सुरक्षा एवं न्यायपूर्ण विकास आदि हर दृष्टि से कालेधन की अर्थव्यवस्था व भ्रष्टाचार खत्म होना बहुत ही जरूरी है। यह एक बहुत ही गंभीर विषय है। कांग्रेस पार्टी एवं कुछ अन्य भ्रष्ट दल शोर शराबा व अन्य हथकण्डे अपनाकर इस अत्यंत गंभीर मुद्दे से देश का ध्यान भटकाना चाहते हैं जिससे देश अंधेरे में रहे और कालेधन के एक से डेढ़ हजार लाख करोड़ के इन चोरों व देश के गद्दारों के बारे में देश को पता न चल सके।

7. **अवैध खनन:** कालेधन से काला धन्धा तथा अवैध खनन आदि से कालाधन का चक्रव्यूह खत्म होगा तथा 20 हजार लाख करोड़ रुपये से ज्यादा भू-सम्पदाओं को भी हम लुटने से बचा पायेंगे।

8. **वनवासी बहुल प्रदेश:** झारखंड, छत्तीसगढ़ व ओडिशा आदि प्रान्त प्राकृतिक भू-सम्पदाओं की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है परन्तु अवैध खनन व उनको न्यायपूर्ण रॉयल्टी आदि न मिलने से ही ये प्रान्त तथा वहाँ के अधिकतम नागरिक गरीब हैं। कालेधन की अर्थव्यवस्था समाप्त होने पर ये प्रान्त देश ही नहीं दुनियाँ के सबसे धनवान व समृद्ध प्रान्त होंगे। वनवासियों को उनकी भूमि से बेदखल नहीं किया जाना चाहिए तथा भू-सम्पदाओं में उनके विकास के लिए एक बड़ा हिस्सा देना चाहिए।

9. **सैन्य शक्ति:** भारत अपनी आर्थिक क्षमता का उपयोग अपनी सेनाओं के आधुनिकीकरण के लिए कर सकेगा और भारत विश्व की सैन्य महाशक्ति तथा आर्थिक व आध्यात्मिक महाशक्ति के रूप में उभरेगा। कालाधन हमारी समृद्धि व सुरक्षा दोनों के लिहाज से बहुत ही खतरनाक है।

10. **भ्रष्टाचार व भ्रष्टाचारी:** भ्रष्टाचारियों से लूटा हुआ धन वसूला जायेगा, वापस लिया जायेगा तथा आगे से वे हिन्दुस्तान को लूट न सकें इसके लिए पूरी कानून व्यवस्था को ठीक किया जायेगा। भ्रष्टाचारी जेलों में होंगे। ये कालेधन के चोर इंसान नहीं हैवान जैसे हैं, इनको पशु-पंछियों की तरह पिंजरों में सजाकर देशभर में उनकी झांकियाँ निकालकर घुमाना चाहिए, जिससे इनके पापों, गुनाहों व देश के प्रति इनकी गद्दारी के बारे में देश के लोगों को पता चल सके। ऐसा करने से छल, प्रपंच, झूठ व षड्यंत्र करके देश की सत्ता, सम्पत्ति व व्यवस्था पर, ये देश के गद्दार फिर कभी भी नहीं बैठ पायेंगे क्योंकि देश इनकी पूरी असलियत जान जायेगा। देश में आगे से कोई भ्रष्टाचार करने की, देश को लूटने की हिम्मत नहीं करेगा। पूरे देश में इन भ्रष्ट लोगों के प्रति एक घृणा स्वाभाविक रूप से होगी।

4. भारत की वास्तविक अर्थव्यवस्था कितनी बड़ी है?

1. **गोल्ड एण्ड ज्वैलरी –** भारत में लगभग 50 हजार से 1 लाख टन सोना है। जिसकी कीमत लग. भग150 से 300 लाख करोड़ रुपये है।
2. **शेयर मार्केट –** लगभग 70 से 100 लाख करोड़ रुपये।
3. **स्टॉक डेरिवेटिव मार्केट (Stock Derivative Market) –** लगभग 340 लाख करोड़ रुपये है।
4. **वायदा बाजार (Commodity Derivative Market) –** लगभग 177 लाख करोड़ रुपये। (कृषि/गोल्ड-सिल्वर/एल्युमिनियम आदि मैटल्स तथा एनर्जी के लेन-देन का वायदा बाजार)। वायदा बाजार में वस्तुओं की वास्तविक डिलिवरी लगभग 1% ही होती है।
5. **माईनिंग सेक्टर –** 50 से 100 लाख करोड़ रुपये।
6. **लैण्ड, रियल स्टेट एण्ड इन्फ्रास्ट्रेक्चर –** लगभग 100 लाख करोड़ रुपये।
7. **रिटेल मार्केट –** 25 से 50 लाख करोड़ रुपये।
8. **राजनीति –** लगभग 15 लाख करोड़ रुपये, 1 ग्राम सभा से लेकर लोकसभा तक लगभग 33 लाख संवैधानिक पदों पर चुनाव होता है जिसमें ग्राम सभा के चुनाव में लगभग 5 लाख रुपये तथा लोकसभा के चुनाव में लगभग 50 करोड़ रुपये तक एक-एक उम्मीदवार औसतन खर्च करता है। अभी संपन्न हुए आन्ध्र प्रदेश के चुनावों में से एक-एक सीट पर 50 करोड़ रुपये औसत खर्च किया गया था।
9. **कोर्ट-कचहरी एवं पुलिस आदि के झगड़ों व मुकदमों पर–** 10 से 15 लाख करोड़ रुपये।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार 100 में से 10 व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इन कामों में उलझे हुए हैं।

10. **महिलाओं का श्रम –** लगभग 15 लाख करोड़ रुपये। फूड प्रोसेसिंग, हाउसकिपिंग, लॉड्रिंग, खेती, पशु-पालन एवं अन्य गृह उद्योग आदि के श्रम का आर्थिक मूल्यांकन।

11. **शिक्षा, स्वास्थ्य एवं नशा उद्योग –** प्रत्येक क्षेत्र में लगभग 10-10 लाख करोड़ रुपये, कुल लगभग 30 लाख करोड़ रुपये।

12. **नक्सलवाद –** लगभग एक लाख करोड़ रुपये। नक्लवादियों के हथियार, तनख्वाह, प्रबन्धन, यातायात एवं गतिविधियों के संचालन में।

13. **नकली करेंन्सी –** अर्थव्यवस्था में दुश्मन देशों एवं आतंकवादियों द्वारा चलाई जा रही नकली करेंन्सी की मात्रा लगभग एक लाख करोड़ रुपये है। एक नोट साल भर में औसतन 50 हाथों में घूमता है। इस घातक प्रक्रिया से लगभग 50 लाख करोड़ रुपये की अर्थव्यवस्था चलती है।

हमारे देश की वास्तविक अर्थव्यवस्था लगभग एक हजार लाख करोड़ रुपये की है, जो चीन की अर्थव्यवस्था से दुगुणी तथा अमेरिका की अर्थव्यवस्था से डेढ़ गुणी है। इस अर्थव्यवस्था में देश का जो धन लूट करके विदेशों में जमा किया गया है वह नहीं जोड़ा गया है। देश की अर्थव्यवस्था की अलग-अलग क्षेत्रों में एक बहुत बड़ी मात्रा कालेधन की है। इसको कन्ट्रोल करने के लिए करेन्सी बैंको की गोपनीयता के कानून, सोना एवं हवाला के ऊपर पूरी तरह से नियन्त्रण करना पड़ेगा। परन्तु दोषपूर्ण आर्थिक नीतियाँ, भ्रष्टाचार, घोटालों एवं स्वार्थपूर्ण शासन प्रणाली के कारण भारत की अर्थव्यवस्था का सही व पूर्ण स्वरूप कालेधन की अर्थव्यवस्थाओं के नीचे दबकर रह गया है। परिणाम स्वरूप सरकारी आँकड़ों में दिखाई जाने वाली अर्थव्यवस्था भारत की वास्तविक अर्थव्यवस्था का लगभग दसवाँ भाग ही है।

राष्ट्रीय राजनीति का केन्द्रीय मुद्दा कालाधन- श्रद्धेय स्वामी व पूज्य आचार्य बालकृष्णजी ने लगभग दो दशक जनजागरण व नि:स्वार्थ सेवा करते पिछले कुछ वर्षों में ही कालेधन व भ्रष्टाचार को राष्ट्रीय राजनीति का मुख्य मुद्दा बनाया है। ज्ञात इतिहास में इतने अल्प कालखंड में किसी संन्यासी का आध्यात्मिक क्षेत्र में निष्काम सेवा करते हुए देश को सामाजिक व आर्थिक न्याय दिलाने हेतु यह सबसे बड़ा उदाहरण है।

एक साहसी योद्धा व योगी संन्यासी के साथ आज पूरे देश की सज्जन शक्ति व देशभक्त आम लोग खड़े हुए हैं, अब तो यह अभियान अपने लक्ष्य तक अवश्य पहुँचेगा, इसमें किसी को कोई संशय नहीं होना चाहिए।

कालेधन का पूरा सच

आखिर कालेधन व भ्रष्टाचार के खिलाफ इस आन्दोलन से सरकार इतनी क्यों डर गयी? क्यों लोकतन्त्र की हत्या की गई? क्यों एक संन्यासी की हत्या की घिनौनी साजिश की तथा क्यों 4 जून 2011 को देशभक्त नागरिकों पर रामलीला मैदान में बर्बरता की? आपके सामने प्रामाणिक तौर पर रखते हैं इस कालेधन का पूरा सच–

1. **कालाधन क्या है और इसके स्त्रोत क्या हैं? –** देश के साथ धोखा व गद्दारी करके बिना मेहनत के जो देश का धन भ्रष्ट लोगों ने लूटा है, वह कालाधन है। अवैध खनन करके, सरकारी विकास योजनाओं के धन की चोरी करके, रिश्वत-खोरी व टैक्स चोरी करके जो धन देश में तथा विदेशों में जमा किया गया वह कालाधन है। कालाधन हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति है इस पर 121 करोड़ भारतीयों का हक है। अपने देश में 20 हजार लाख करोड़ रुपये से अधिक की तो मात्र भूसम्पदाएं व अन्य राष्ट्रीय सम्पत्तियाँ ही हैं। इनमें से कई सौ लाख करोड़ रुपये का कोयला, लोहा, गैस, पेट्रोल व हीरा आदि तथा इसी प्रकार अन्य राष्ट्रीय सम्पदाओं भूमि, भूसम्पदा, 2जी., 3जी. आदि वैज्ञानिक सम्पदाओं, जंगल, जड़ी-बूटी, धरती, आकाश व पाताल आदि सब कुछ इन भ्रष्ट व बेईमान लोगों ने बेच दिया है और इस लूटे हुए देश के धन को देश में तथा विदेश में जमा कर दिया। इस धन पर इन बेईमानों का कोई अधिकार नहीं है। यह देश का धन है।

2. **यह कालाधन क्या है व कितना है? –** टैक्स जस्टिस नेटवर्क की बेबसाइट पर वर्ष 2010 के दिए गए तथ्यों व आंकड़ों के अनुसार अब विश्व की शीर्ष आर्थिक संस्था आई.एम.एफ. ने भी माना है कि विश्व में कालेधन की मात्रा लगभग 18 ट्रिलियन डॉलर (810 लाख करोड़ रुपये) है तथा इसमें दुनियाँ के सबसे बड़े कालेधन के केन्द्र स्विटजरलैण्ड में जमा कालाधन, साथ ही चीन, ताइवान एवं तेल निर्यातक देशों का कालाधन इस 18 ट्रिलियन डॉलर में सम्मिलित नहीं है, क्योंकि इन देशों में इसका पता लगाने में दिक्कतें हैं। यदि इन सब देशों के कालेधन को भी इसमें सम्मिलित करें तो यह कई गुणा अधिक होगा। जी.आई.एफ के संस्थापक रेमण्ड बेकर के 2009 के सर्वे के अनुसार भारत जैसे विकासशील देशों से ही प्रतिवर्ष 1.6 ट्रिलियन डॉलर (47.7 लाख करोड़ रुपये) क्रॉस बार्डर डर्टी मनी या ब्लैक मनी जाता है। विशेष बात यह है कि इसका विश्वबैंक ने भी समर्थन किया है। यह बहुत ही संगीन मामला है। ग्लोबल फाइनेंशियल इंटेग्रिटी (जी.आई.एफ.), अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ.), विश्वबैंक (वर्ल्ड-बैंक), टैक्स जस्टिस नेटवर्क तथा ट्रांसपेरेंसी इन्टरनेशनल आदि विश्व की सभी आर्थिक संस्थाओं के अध्ययन, विश्व के प्रमुख अर्थशास्त्रियों का अनुमान तथा भारतीय रिजर्व बैंक के द्वारा छापी गई मुद्रा (नोट) हमारी जी.डी.पी का 15 से 20% हैं और उसमें भी 97% बड़े नोट हैं। जबकि पूरे विश्व में यह 2 से 3% ही आदर्श माना जाता है। अधिक मुद्रा व बड़ी मुद्रा कालेधन की अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा माध्यम बनती है। उपरोक्त सभी तथ्य व आंकड़े इस बात का पक्का सुबूत या प्रमाण हैं कि भारत का लगभग हजार लाख करोड़ रुपये

से भी ज्यादा का कालाधन देश व विदेश में है। इसमें से अधिकांश धन विदेशी बैंकों स्विटजरलैंड, मॉरीशस, इटली, दुबई, सिंगापुर व लग्जम्बर्ग आदि 100 से अधिक देशों में जमा है तथा देश में भी कालाधन, अवैध खनन, रीयल स्टेट, जमीन, सोना व अन्य कार्यों में लगा है। बड़े नोटों के रूप में कालेधन की समानान्तर अर्थव्यवस्था को चलाने में आसानी होती है, क्योंकि बड़ी मुद्रा ट्रसेबल नहीं होती है, यदि चैक, ड्राफ्ट व अन्य टेक्नीकल तरीके से ट्रांजिक्शन लेन-देन करेंगे तो वह ट्रसेबल व अकांउटेबल रहता है। (स्रोत : इंटरनेट पर कोई भी व्यक्ति उपरोक्त संस्थाओं की वेबसाइट पर जाकर सभी तथ्यों व आंकड़ों के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर सकता है।)

3. **विदेशों में जमा कालाधन किसका है तथा इसका उपयोग कौन कर रहे हैं? –** सबसे अधिक कालाधन कुछ भ्रष्ट नेताओं तथा इसके बाद कुछ भ्रष्ट अधिकारियों तथा कुछ बेईमान बड़े उद्योगपतियों के पास है। विदेशी बैंकों में जमा इस कालेधन का विदेशी ऋण के रूप में विश्व के बड़े देश उपयोग करके विकास एवं विलासिता कर रहे हैं तथा भारत व अन्य देश इस भ्रष्टाचार व कालेधन के कारण गरीबी, भूख, अभाव व अपमान में जी रहे हैं।

कालेधन को विदेशी ऋण के रूप में जिन देशों ने लिया हुआ है, उनमें कुछ देशों के नाम इस प्रकार हैं–

विश्व के सबसे अधिक विदेशी कर्ज में डूबे देश	2010 की अन्तिम तिमाही में विदेशी कर्ज की स्थिति		2011 की पहली तिमाही में विदेशी कर्ज की स्थिति		इन देशों द्वारा तीन माह में लिया गया विदेशी कर्ज		इन देशों द्वारा देश के अन्दर से लिया गया कर्ज	
	मिलियन डॉलर	लाख करोड़ रु.	मिलियन डॉलर	लाख करोड़ रु.	मिलियन डॉलर	लाख करोड़ रु.	मिलियन डॉलर	लाख करोड़ रु.
1. अमेरिका	14456194	650.52	14825308	667.14	369114	16.61	8.62	388.29
2. इंग्लैण्ड	8561756	385.28	9374868	421.87	813112	36.59	1.71	77.11
3. जर्मनी	5208039	234.36	5442082	244.89	234043	10.53	2.60	117.37
4. फ्रान्स	5091260	229.11	5366839	241.51	275579	12.40	2.15	96.90
5. जापान	2588607	116.49	2640936	118.84	52329	2.35	-	-
6. इटली	2427941	109.26	2601722	117.08	173781	7.82	2.42	108.90
7. हॉलैण्ड	2426941	109.12	2547186	114.62	120245	5.41	0.51	22.75
8. स्पेन	2314854	104.17	2456403	110.54	141549	6.37	0.89	39.94
9. ऑयरलैण्ड	2141095	96.35	2382187	107.20	241092	10.85	0.19	8.64
10. लग्ज़मबर्ग	1954729	87.96	2076535	93.44	121806	5.48	0.008	0.38
इन 10 देशों का कुल	**47171416**	**2122.71**	**49714066**	**2237.13**	**2368869**	**114.42**		
11. बेल्जियम	1292068	58.14	1324666	59.61	32598	1.47		
12. स्विड्ज़रलैण्ड	1291471	58.12	1304378	58.70	12907	.58		
13. आस्ट्रेलिया	1167272	52.53	1225595	55.15	58323	2.62		
14. कनाडा	1097334	49.83	1150009	51.75	52675	2.37		
15. स्वीडन	944292	42.49	1000961	45.04	56669	2.55		
इन 15 देशों का कुल	52963853	2383.37	55719675	2507.39	2582041	124.01		
16 यूरो एरिया	**13715140**	**617.18**	**14989049**	**674.51**	**1273909**	**57.33**		

स्रोत : उपरोक्त आंकड़े IMF (इंटरनेशनल मॉनिटरी फण्ड) की अधिकृत वैबसाइट www.imf.org से लिए गए हैं।

नोट– *दुर्भाग्य से हम जिसे कालाधन कहते हैं, वही कालाधन स्विटजरलैण्ड आदि 70 टैक्स हैवन्स देशों के बैंकों में जमा हो जाता है और अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस व इटली आदि में वह कालाधन एक्सट्रनल डैट अथवा फॉरेन इन्वैस्टमैन्ट के रुप में पहुँच जाता है तथा भारत में भी वही कालाधन जब मॉरीशस रूट से आता है तो वही अनैतिक रूप से अर्जित यह धन अपने देश में भी फॉरेन-इन्वेस्टमैन्ट के रूप में वापस आ रहा है।*

इंग्लैण्ड ने पिछले एक वर्ष से अपने कर्ज का ब्योरा देना बन्द कर दिया है, (शायद बहुत ज्यादा बढ़ जाने के कारण से) अत: 2009 की पहली व दूसरी तिमाही के आँकड़े दिये गये हैं एवं यूरो एरिया (17 देशों का समूह) की भी यही स्थिति है अत: इनके 2010 की दूसरी व तीसरी तिमाही के आंकड़े यहाँ दिये गये हैं।

सोचने की बात यह है कि ये देश दुनियाँ के सबसे सम्पन्न देश माने जाते हैं, और ये ही महाकर्ज में डूबे हुए हैं। दुनियाँ की सबसे बड़ी सच्चाई है कि आज अमेरिका व यूरोप दुनियाँ के सबसे कर्जदार देश हैं ये देश अमीर नहीं अपितु महादरिद्र हैं। इसे हमने पूरे तथ्यों व प्रमाणों के साथ यहाँ प्रस्तुत किया है और ये कर्ज का पैसा थोड़ा नहीं है। तो आखिर इन्हे यह कर्ज दे कौन रहा है? जबकि विश्व के लगभग सभी देश भी कर्ज में ही डूबे हुऐ हैं तो क्या ये असीम कर्ज चाँद या मंगल से आया है। दुनियाँ के शीर्ष अर्थशास्त्रियों व संस्थाओं की बात माने तो ये कर्ज का पैसा कालेधन का ही है और पूरी दुनियाँ में जितना भी कालाधन है उसमें बहुत बड़ा हिस्सा तो भारत का ही है। एक और खास बात यह है कि इनमें शीर्ष 10 देश ही तीन महीनें में लगभग 115 लाख करोड़ रुपये ओर कर्ज ले लेते हैं। यूरो एरिया भी तीन महीने में 57 लाख करोड़ रुपये से अधिक का कर्ज ले लेता है। दूसरे अन्य देशों का भी कर्ज हर महीने बढ़ ही रहा है। आखिर यह पैसा आ कहाँ से रहा है? क्या आसमान से टपक रहा है? इसकी गहराई में जाने से यह पता चलता है कि ये अधिकांश कालाधन भारत व एशिया के ही कुछ भ्रष्ट लोगों ने अपने देश व देशवासियों के साथ धोखा व गद्दारी करके जमा किया है। यह बात प्रत्येक भारतवासी को बड़ी गम्भीरता से सोचनी होगी कि आखिर ये सभी अमीर देश इतना कर्ज कहाँ से ला रहे हैं? कहीं यह हमारे खून पसीने की गाढ़ी कमाई का पैसा तो नहीं और यदि यह है तो इसको वापस कैसे लाया जाए या यूँ ही इस अन्याय को सहन कर बच्चों सहित भूखे मर जाएँ?

उपरोक्त आंकडों से स्पष्ट है कि विश्व के 15 देशों ने वर्ष 2011 के पहले तीन महीने की अवधि में 124 लाख करोड़ का नया विदेशी कर्ज लिया है। इस प्रकार ये देश एक वर्ष की अवधि में लगभग 500 लाख करोड़ का नया विदेशी कर्ज ले लेते हैं। विश्व के शीर्ष अर्थशास्त्री भी इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि अमेरिका जैसे विकसित देशों द्वारा लिया गया विदेशी कर्ज वास्तव में भारत जैसे प्राकृतिक संसाधन संपन्न देशों का ही धन है, जो काले धन के रूप में विदेशी कर्ज के तौर पर देश से बाहर चला गया है। यह काला धन स्थायी रूप से किसी एक देश में नहीं ठहरता है बल्कि अगले नए देश में गतिशील रहता है। भारत का स्विटजरलैंड के बैंकों में जमा काला धन अब दुबई, सिंगापुर व मॉरीशस आदि देशों में जा रहा है। यह भी कम रोचक बात नहीं है कि कुल मिलाकर विश्व के सभी देशों की जी.डी.पी. (सकल घरेलू उत्पाद) का जितना आकार है लगभग उतना ही विश्व के सभी देशों पर विदेशी ऋण है। वर्तमान में विश्व के सभी देशों की जी.डी.पी. लगभग 80 ट्रिलियन डॉलर की है, जबकि विश्व के सभी देशों पर कुल मिलाकर लगभग इतना ही बाहरी या विदेशी ऋण है। **इस प्रकार विदेशी ऋण के रूप में**

लिया गया अधिकांश धन या आधाधन यह कालाधन ही है। सभी देशों को आज धन चाहिए, जब अपने देश के ही विकास के लिए धन की सभी देशों को जरूरत है, फिर विदेशी ऋण के रूप में कोई क्यों किसी दूसरे देश को ऋण के रूप में पैसा देगा? कालाधन जिस देश का है यदि उस देश को मिल जाए तो भारत सहित दुनियाँ में कोई भी देश गरीब नहीं रहेगा। कालाधन व भ्रष्टाचार यही पूरी दुनियाँ की सबसे बड़ी दो समस्याएँ हैं?

इससे बड़ी दु:खद घटना, आश्चर्य, अन्याय और क्या होगा कि भारत व एशिया के अन्य देशों के कालेधन से यूरोप के देश विकास व विलासिता करें तथा भारत व एशिया के लोग भूखो मरें! यह कितनी शर्म, आश्चर्य व अन्यायपूर्ण बात है! यह पाप तुरन्त बन्द होना चाहिए। भारत में गरीबी के कारण भूख व कुपोषण से मरने वालों की संख्या–'ग्लोबल हंगर रिपोर्ट' के अनुसार 1 मिनट में 13, एक घण्टे में 883 तथा एक दिन में लगभग 20 हजार है।

आज भी भ्रष्ट व्यवस्था एवं भ्रष्टाचार के बावजूद दुनियाँ के अन्य देशों की तुलना में भारत पर बाहर के देशों का लिया गया ऋण मात्र 0.237 ट्रिलियन डॉलर (10.66 लाख करोड़ रुपये) तथा आन्तरिक ऋण मात्र 0.855 ट्रिलियन डॉलर (38.48 लाख करोड़ रुपये) है। भारत के बाद भ्रष्टाचार व कालेधन की अर्थ-व्यवस्था को मिटाने का अभियान अन्य एशिया के देशों में भी चलेगा तथा भारत व एशिया का उत्थान होगा तथा हम यूरोप व अमेरिका से भी आगे बढ़ जायेंगे।

4. **भारत का यह कालाधन कहाँ जमा है? –** स्विटरजलैंड, दुबई, इटली, बाहामास, सेंटकिट्स, वर्जिन आईलैण्ड व सिंगापुर आदि 70 से ज्यादा देश हैं, जहाँ ये कालाधन जमा है। यू.के. का केमन आईलैंड तथा यू.एस.ए. का डेलावियर आज कालेधन के सबसे बड़े व सुरक्षित अड्डे बने हुए हैं। इसके पूरे तथ्य उपलब्ध हैं।

5. **विदेशों में ये देश का धन कैसे जाता है? –** बैंकों की गोपनीयता का लाभ उठाकर हवाला, ओवर इन्वायसिंग, अंडर इन्वायसिंग करके तथा भ्रष्टाचारी व्यक्ति खुद स्विटजरलैंड आदि जाकर वहाँ जमा कराते हैं। अब तो केन्द्र सरकार ने स्विटरजलैंड व इटली आदि के उन बैंकों को भारत मे शाखा खोलने के लिए लाइसेंस दे दिया है जो कालाधन जमा करते हैं, जिससे कि बेईमान लोगों को देश का लूटा हुआ धन विदेशी बैंकों में जमा कराने में कोई परेशानी न हो।

6. **देश व विदेश में जमा कालाधन कैसे वापस मिलेगा?** भ्रष्टाचार कैसे मिटेगा तथा व्यवस्थाएं कैसे बदलेगी? इस पूरे काम के लिए अपने मुद्दों से पूर्ण सहमत एक ईमानदार प्रधानमन्त्री व कम से कम 272 राष्ट्रभक्त व ईमानदार सांसदों को संसद में चुन कर भेजना जरूरी है। संसद में सांसद चुनकर भेजने का एकमात्र अधिकार देश की जनता के पास है। अत: इस बार ऐसे सांसद चुनकर भेजो, ऐसी सरकार केन्द्र (दिल्ली) में बनाओ जो कालाधन देश को दिलवाये, भ्रष्टाचार मिटाये व भ्रष्ट व्यवस्थाओं को बदले।

7. **क्या अब तक स्विस बैंकों से कोई देश कालाधन वापस लाया है?–** जब नाईजीरिया विदेशों में जमा अपना 522 मिलियन डॉलर से अधिक धन, पेरू 180 मिलियन डॉलर, फिलीपीन्स 624 मिलियन डॉलर, जाम्बीया 52 मिलियन डॉलर वापस ला सकता है तथा अमेरिका 4000 से अधिक स्विट्जरलैण्ड में कालाधन जमा करने वाले अपने देश के लोगों पर कार्यवाही करके अपने

लाखों करोड़ रुपये वापस ला सकता है और इसी तरह जर्मनी, ट्यूनेशिया व पाकिस्तान भी अपना कालाधन विदेशों से ला सकता है तो अब तक भारत एक रुपया भी कालाधन वापस क्यों नहीं लेकर आया?

8. कालाधन वापस आने से तथा भारत स्वाभिमान आंदोलन के पूरा होने से देश को क्या मिलेगा?

क. देश विदेश में जमा लगभग 1000 लाख करोड़ रुपये कालाधन वापस आने से देश की अर्थव्यवस्था व मुद्रा मजबूत होगी। हमारी सकारात्मक जी.डी.पी. बढ़ेगी। कृषिगत, औद्योगिक व सेवागत विकास होगा। आने वाले 40 से 50 साल तक देशवासियों को टैक्स नहीं देना पड़ेगा, इससे देशवासी धनवान् होंगे तथा गैस, डीजल, पेट्रोल व गाड़ी आदि सभी वस्तुएँ 30 से 50 प्रतिशत सस्ती होंगी। सबको शिक्षा व स्वास्थ्य आदि सेवाएँ मिलेंगी। कोई भी देशवासी बेरोजगार नहीं रहेगा। हम अपनी अर्थशक्ति का सैन्य व परमाणु शक्ति को बढ़ाने में प्रयोग कर देश को सुरक्षा में पूर्ण स्वावलम्बी व शक्तिशाली बना सकेंगे।

ख. भ्रष्टाचार मिटने से देश में रिश्वतखोरी बन्द होगी, विकास का पूरा पैसा विकास में लगाने से देश आगे बढ़ेगा, गरीब व आम आदमी की भलाई के लिए चलाई जाने वाली योजनाओं का उन्हें पूरा लाभ मिलेगा, देश की लगभग 20 हजार लाख करोड़ की भूसम्पदाएँ व अन्य राष्ट्रीय सम्पतियों की लूट नहीं होगी आदि।

ग. भ्रष्ट व्यवस्था के सुधार होने से सबको न्याय मिलेगा। जो नियम कानून, नीतियाँ व व्यवस्थाएँ अंग्रेजों ने हमें लूटने व हमारा शोषण करने के लिए बनाई थी, उन सभी नीतियों कानून व व्यवस्थाओं का भारतीय या स्वदेशीकरण होगा। जैसे शिक्षा में भाषा के नाम पर अन्याय व संस्कारों का अभाव, किसान को अकुशल श्रमिक मानकर उसकी उपज के मूल्य निर्धारण में पक्षपात व 1894 के बने भूमि अधिग्रहण कानून के नाम पर शोषण, 1760 के बने काले कानून के आधार पर गोहत्या व शराब के व्यापार को कानूनन वैधता। 1861 के बने पुलिस एक्ट के आधार पर जनता के साथ क्रूरता व अत्याचार आदि, वे 34735 कानून, जिनके आधार पर न्याय नहीं बल्कि फैसला मिलता है वो भी वर्षों बाद। ये सब व्यवस्था एक षड्यन्त्र के तहत अंग्रेजों ने बनाई थी। इस भ्रष्ट व्यवस्था का राष्ट्रहित में पूर्ण परिवर्तन होगा।

घ. सशक्त व निष्पक्ष लोकपाल बनने से संवैधानिक पदों पर बैठे लोग लूट, भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी नहीं कर पायेंगे। भ्रष्टाचार करके लूटे हुए धन की वसूली हो पायेगी, तभी भ्रष्टाचारियों को आजीवन कारावास व फाँसी की सजा होगी। लोक सेवा प्रदाय गारन्टी एक्ट (पब्लिक सर्विस डिलीवरी गारन्टी एक्ट) बनने से एक निर्धारित समय अवधि के भीतर लोगों के काम पूरे होंगे तथा जो अधिकारी लोगों के वैध काम नहीं करेगा, उसको प्रतिदिन 250 से 500 रुपये जुर्माना देना होगा तथा बार-बार गलती करने पर उसे बर्खास्त कर दिया जायेगा। न्यायालयों में अभी तक लगभग 3.5 करोड़ मामले पहले से ही लम्बित पड़े हैं। अतः भ्रष्टाचार के मामलों की तुरन्त सुनवाई के लिए प्रथम चरण में प्रत्येक प्रान्त में तथा केन्द्र में एक-एक स्पेशल फास्ट ट्रैक कोर्ट बनने से एक साल के भीतर कार्यवाही होने से भ्रष्टाचारियों को तुरन्त सजा मिलेगी और भ्रष्टाचार करके अर्जित सम्पत्ति जब्त हो जायेगी।

ड़· **व्यवस्था-परिवर्तन –** सन् 1894 के बने भूमि-अधिग्रहण कानून के नाम पर किसानों के साथ अन्याय व अत्याचार नहीं होगा। किसान को अकुशल श्रमिक के स्थान पर कुशल श्रमिक का दर्जा मिलेगा और किसानों के लिए न्यूनतम मूल्य निर्धारण नीति के स्थान पर उनकी उपज के लिए लागत मूल्य निर्धारण नीति बनेगी व राष्ट्रीय किसान आय आयोग का गठन होगा। रासायनिक खादें व विषैले कीटनाशकों के स्थान पर जैविक खाद व कीटनाशक (बायो-फर्टिलाईजर व पेस्टीसाईड्स) का प्रयोग होने से गोधन, पशुधन धरती माता का खेत व इंसान का पेट–सब कुछ सुरक्षित होगा। शिक्षा के क्षेत्र में भाषा के नाम पर चल रहा पक्षपात व अन्याय बन्द होगा तथा राष्ट्रभाषा व अन्य भारतीय भाषाओं–गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, ओडिया, पंजाबी, बांग्ला व असमिया आदि भारतीय भाषाओं में मेडिकल कॉलेज, इन्जीनियरिंग कॉलेज तथा कृषि विश्वविद्यालय में पढ़ने का अधिकार मिलने से देश के गरीब, मजदूर, कारीगर, किसान व गाँव के बच्चों को भी डॉक्टर, इन्जीनियर व वैज्ञानिक आदि बनने का अवसर मिलेगा और जर्मनी, जापान, चीन, फ्रांस व रशिया आदि देशों की तरह हमारे देश के लोगों को भी देश की भाषा में विज्ञान व तकनीकी की शिक्षा मिलेगी। अनिवार्य मतदान, स्टेट फंडिंग इलैक्शन व प्रधानमंत्री के चुनाव सीधे जनता के द्वारा होने से लोकतन्त्र, लूटतन्त्र व भ्रष्टतन्त्र होने से बचेगा, साथ ही निष्कलंक, बेदाग व योग्य (नॉन करेप्ट एवं कैपेबल) लोगों का राजनीति में बहुमत होने से राजनीति का शुद्धिकरण व पुनर्जन्म होगा और एक आदर्श राजनैतिक व्यवस्था देश को मिलेगी।

9. **कालाधन या सरप्लसमनी किसके पास है?–** किसान या सामान्य व्यापारी अथवा किसी नौकरी करने वाले के पास सामान्यत: कोई सरप्लसमनी नहीं है। आम आदमी महंगाई के बोझ तले दबा है। किसान कर्ज में डूबकर आत्महत्या करने को विवश है। आम आदमी ने अपनी नौकरी, खेती या व्यापार से अगर कोई बचत की है, तो वह भविष्य व जीवन की बेहतरी के लिये प्रयोग करते हैं। बैंकों में अधिकतम सरप्लसमनी या जमा होने वाली धनराशि कालेधन के रूप में चन्द भ्रष्ट नेताओं, कुछ बड़े अधिकारियों व कुछ भ्रष्ट व्यापारियों की होती है। बैंकिंग सिस्टम में गोपनीयता के कानून इन्ही चन्द लोगों को बचाने के लिये बनाये हुये हैं।

10. **कालाधन वापिस आने से आम इन्सान को क्या मिलेगा?–** हर भारतीय नागरिक को भी अमेरिका व ब्रिटेन आदि ताकतवर देशों के नागरिकों की तरह ही पूरे विश्व में सम्मान मिलेगा, हम अपने भारतीय होने पर गर्व कर सकेंगे और इस कालेधन के उपर सभी देशवासियों का समान अधिकार होगा। इससे सबकी समृद्धि, सबका सम्मान, सबकी उन्नति व सब धनवान होंगे। गरीबी, अशिक्षा व बेरोजगारी आदि सब समस्याओं का समाधान होगा। जिस दिन भारत से भ्रष्टाचार खत्म हो जायेगा तथा देश का लूटा हुआ धन वापस मिल जायेगा उस दिन भारत की अर्थव्यवस्था व मुद्रा इतनी मजबूत होगी कि 1 रुपये की कीमत डॉलर या पौंड के बराबर या उससे अधिक होगी तथा भारत विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति होगा।

11. **आखिर कालेधन के खिलाफ इस अभियान से स्वामी जी को क्या मिलेगा?–** स्वामी जी ने बार-बार पूरी प्रामाणिकता और गम्भीरता के साथ अपनी इस भीष्म प्रतिज्ञा को दोहराया है कि मैं जीवन में कभी भी चुनाव नहीं लड़ूँगा तथा कोई भी राजनैतिक पद ग्रहण नही करुँगा। सत्ता, सम्पत्ति,

सिंहासन के मोह से मुक्त रहकर योगधर्म के साथ राष्ट्रधर्म एवं राष्ट्रहित को सर्वोपरि मान करके स्वामी जी ने यह आंदोलन पूरे नि:स्वार्थ भाव से चलाया। कालाधन वापस आने पर यह धन देश व देशवासियों को मिलेगा न कि स्वामी जी को। देश व दुनियाँ के 100 करोड़ से ज्यादा लोग आज स्वामी जी के प्रति अगाध आस्था, श्रद्धा व विश्वास रखते हैं व उनको भगवान की तरह पूजते हैं। राजनीति आखिर उनको दे ही क्या सकती है? अपने योग-साधना, तप व सेवा से स्वामी जी ने वह पा लिया है जो राजनीति कभी किसी को दे ही नहीं सकती। भ्रष्टाचार व कालेधन के खिलाफ अभियान शुरू करके स्वामी जी ने अपने जीवन की सारी प्रतिष्ठा, यश व सर्वस्व को दांव पर लगाया है और देश व दुनियाँ की अति ताकतवर आसुरी शक्तियों को अपना दुश्मन बनाया है। स्वामी जी अपनी जान हथेली पर रख करके अब तक लगभग 11 लाख किलोमीटर से ज्यादा किलोमीटर की यात्रा कर चुके हैं, इस दौरान उन्होंने 11 करोड़ से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष तथा 100 करोड़ से ज्यादा लोगों को परोक्ष रूप से योगधर्म से राष्ट्रधर्म के लिए जागृत किया है तथा अब भी बिना 1 दिन विश्राम किये वह लगातार 18 से 20 घण्टे नि:स्वार्थ भाव से कार्य कर रहे हैं।

12. **सरकार व अन्य षडयंत्रकारी, ताकत व लोग श्रद्धेय स्वामी जी पर लगातार झूठे आरोप क्यों लगाते है?** – इन भ्रष्ट, बेईमान, असुरों के जीवन का एकमात्र लक्ष्य सत्ता व सम्पत्ति है। इस आन्दोलन से इन दोनों पर ही जब इनको खतरा नजर आने लगा और इनको लगा कि कालेधन को राष्ट्रीय सम्पत्ति व राष्ट्रद्रोह का अपराध घोषित करने से भ्रष्टाचारियों के धन व जीवन दोनों ही समाप्त हो जायेंगे तो इन्होंने एक राष्ट्रभक्त पवित्र संत को समाप्त करने का षड्यन्त्र रच दिया।

देश के कुछ गद्दार व बेईमान लोग जिन्होंने देश को बेरहमी से लूटा है, उनके साथ लगे ड्रग माफिया, विदेशी कम्पनियाँ तथा साथ ही वो देश जहाँ इन भ्रष्ट लोगों का काला पैसा जमा है तथा दुनियाँ के वे लोग, जिनको एक संन्यासी व भारतीय संस्कृति की विश्व पटल पर गौरवमयी प्रतिष्ठा रास नहीं आती, ऐसी तमाम आसुरी शक्तियाँ एक षड्यन्त्र के तहत संन्यास व संस्कृति के गौरवमय पुरुष व इस पवित्र आन्दोलन को बदनाम करने की नापाक कोशिश कर रही हैं। क्या इसलिए कि संन्यासी एक आम किसान परिवार में अनपढ़ माँ-बाप के यहां साधारण से घर में पैदा हुआ? क्या एक आम आदमी व योगी संन्यासी को सच कहने की इजाजत नहीं है?

देश विदेश में जमा कालाधन देश को दिलाने के लिए केन्द्र सरकार को कौन से कानूनी प्रावधान करने पड़ेंगे?

सबसे पहले केन्द्र सरकार **विदेशों में जमा कालेधन** व अवैध सम्पत्ति को **राष्ट्रीय सम्पत्ति** घोषित करे और इसके बाद इस कालेधन को देश को दिलाने के लिए साहस व प्रामाणिकता के साथ काम करे। कालाधन देश को दिलाने के लिए दो महत्वपूर्ण पहलु हैं–एक राजनैतिक इच्छाशक्ति व ईमानदारी तथा दूसरा कानूनी प्रक्रिया में नए प्रावधान। दोनों ही विषयों के संदर्भ में हम संक्षेप से कुछ तथ्य रख रहे हैं, जिससे आपको इस विषय में मूलभूत सही जानकारी हो सके और आपको कोई स्वार्थ व षड्यन्त्र करके भ्रमित न कर सके। राष्ट्रहित में हमारा यह आंदोलन खाली सुहाना सपना या कल्पना नहीं है, अपितु सबसे बड़ी हकीकत है।

कालाधन वापस लाने के लिए तीन मुख्य प्रक्रियाएँ

1. F.D.I. के मूल मालिकों का पता लगाने के लिए कानूनी प्रावधान करवाना। लगभग 20 लाख करोड़ रुपये की F.D.I.भारत में आई है, इसकी वर्तमान में कई गुणा कीमत है। देश के साथ धोखा व गद्दारी करके देश का लूटा हुआ धन, ये बेईमान लोग F.D.I. के माध्यम से देश में लाये हैं। F.D.I. में 80% से ज्यादा कालाधन है। F.D.I. के मूल मालिकों का पता लगाने से इन्हीं लोगों का देश व विदेश में जो अन्य अवैध धन व अवैध सम्पत्ति है, उसका भी पता लग जायेगा, अत: F.D.I. कालेधन की चाबी है।
2. हसन अली जैसे हजारों लोगों के नाम तथा 50 हजार से ज्यादा कालेधन के लेनदेन (ट्रान्जेक्सन्स) की जानकारी सरकारी एजेन्सियों के पास है। इनके पास ही लाखों करोड़ रुपये कालाधन है। ये धन देश को दिलाना तथा इनके नाम सार्वजनिक करना है, जिससे इन लुटेरों के बारे में देश जान सके।
3. अर्थव्यवस्था को पारदर्शी बनाने हेतु बैंकों में गोपनीयता का कानून खत्म करवाना। हवाला, घोटाला, रिश्वतखोरी, बड़े नोट व टैक्स चोरी पर नियन्त्रण करना तथा प्राकृतिक सम्पदाओं व राष्ट्रीय संसाधनों की लूट खत्म करवाना, जिससे आगे से कालाधन जमा न हो।

कालाधन की अर्थ व्यवस्था को खत्म करने हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु

(1) सरकार के पास पुलिस, आई.बी., रॉ, विजिलेंस व इंटेलीजेंस एजेन्सियाँ तथा कैग, केन्द्रीय सतर्कता आयोग (C.V.C.), सी.बी.आई. अलग-अलग टैक्सेशन डिपार्टमेन्ट्स आदि लगभग 20 लाख से अधिक लोगों के इस सरकारी तन्त्र के माध्यम से सरकार को सबकुछ पता होता है कि कौन अण्डर इन्वायसिंग, ओवर इन्वायसिंग तथा अन्य प्रकार की बिलिंग में हेरा-फेरी कर रहा है? कौन बैंकिंग के गोपनीयता कानूनों का दुरुपयोग करके पैसा बाहर भेज रहा है? कौन रिश्वत ले रहा है? कहाँ-कहाँ हवाले, घोटाले हो रहे हैं? किस-किस विभाग में कितनी लूट मची हुई है? सरकार यदि ईमानदारी व मजबूत राजनैतिक ईच्छाशक्ति से काम करे तो तुरन्त प्रभाव से कालेधन की अर्थव्यवस्था पर सरकार लगाम लगा सकती है। सत्ताओं को संचालित करने वाले राजनैतिक दलों में ईमानदारी व प्रबल इच्छाशक्ति होती तो यह कालाधन जमा ही नहीं होता। अतः अब तो एक ही समाधान नजर आता है–कि या तो वर्तमान केन्द्र सरकार ईमानदारी से कालाधन देश को दिलाए, नहीं तो जाए और प्रामाणिकता के साथ कालाधन दिलाने वाली सरकार हम सब मिलकर बनाएं।

(2) F.D.I. एवं F.I.I. अर्थात् विदेशी पूंजी निवेश के नाम पर अब तक देश में लगभग 20 लाख करोड़ रुपये आ चुका है जिसकी वर्तमान में कीमत कई गुना हो चुकी है। F.D.I. व F.I.I. के मूल मालिकों के बारे में बताने का कानूनी प्रावधान (डिक्लेरेशन ऑफ बेनेफिशियल ओनरशिप) का संसद में केन्द्र सरकार को तुरन्त करना चाहिए। F.D.I. एवं F.I.I. में अधिकांश कालाधन ही है। इस प्रावधान से विदेशी पूँजी निवेश यानी F.D.I. के भी मूलस्त्रोत व वास्तविक मालिकों के बारे में भी पूरी जानकारी उपलब्ध हो सकेगी। F.D.I. कालेधन की चाबी है या केन्द्र बिन्दु है। इसके खुलासे से देश विदेशों में जमा कालेधन के बहुत बड़े राज स्वतः खुल जायेंगे।

(3) विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका में विगत 30 वर्षों में शीर्ष पर रहे वरिष्ठ पदाधिकारियों व शीर्ष उद्योगपतियों पर बिना किसी पक्षपात के समान रूप से **प्रिवेंशन ऑफ करप्शन** और **मनी लॉडरिंग एक्ट्स तथा पॉलिटिकली एक्सपोज़्ड पर्सन्स** के तहत नये प्रावधान करके एक **जनरल पर्पज़ एफ.आई.आर.** दर्ज करके उनकी व उनके रिश्तेदारों की विदेशों में जमा अवैध धन-सम्पत्ति का पता लगाया जाये।

(3) **प्रोमिसरी-नोट** तथा **पार्टिसिपेटरी नोट** (पी.एन. रूट) की आर्थिक व्यवस्था, जिससे काले धन का कारोबार पनप रहा है और लाखों करोड़ रुपये के काले-धन को भ्रष्टाचारी लोग इस जरिये से सफेद कर रहे हैं, इन दोनों प्रक्रियाओं को तुरन्त बन्द किया जाये। विदेशों में कालाधन जमा करने वाले लोगों के बारे में **इमिग्रेशन विभाग, वीजा विभाग, विदेश मंत्रालय, विभिन्न देशों के दूतावासों के माध्यम से जानकारियां जुटाकर** टैक्स हैवन्स में बार-बार जाने वाले

व्यक्तियों के बारे में पता लगाया जाये साथ ही इंटरनेशनल इंफोरमेशन गेट-वेज़ पर टैक्नीकल सर्वेलेंस द्वारा इन्वेस्टिगेशन करके देश-विदेश में बैठकर जो लोग कालेधन का धन्धे चला रहे हैं, उनके बारे में पता लगाया जाये।

(4) बैंकिंग सीक्रेसी कानूनों (लॉज़) में आमूलचूल परिवर्तन करके तथा स्विटज़रलैण्ड, अमेरिका, इंग्लैण्ड, इटली आदि के विदेशी बैंक जो भारत में खुले हुए हैं और धड़ल्ले से कालाधन जमा कर रहे हैं, इन विदेशी बैंकों की टैक्सहैवन्स में चल रही शाखाओं (सब्सीडरीज़) के बारे में पूरा ब्यौरा देने का प्रावधान करके कालेधन पर लगाम लगाई जाये।

(5) विदेशों में जमा कालेधन के बारे में सरकार के पास उपलब्ध **50 हजार से ज्यादा सूचनाएँ एवं हजारों विदेशी ट्रांजॅक्शन्स** और विदेशों में खाते रखने वाले अभी तक ज्ञात हजारों लोगों के नाम सार्वजनिक किये जायें और इन लोगों के पास जितना भी कालाधन है, उसे तत्काल देश को दिलाया जाये।

(6) विदेशों में जमा कालेधन को वापस लाने के साथ-साथ देश में ही जमा लाखों करोड़ रुपये के कालेधन की अर्थव्यवस्था को समाप्त करने के लिए देश की आर्थिक नीतियों व कर प्रणाली में एक बहुत बड़ा सकारात्मक सुधार किया जाये। किसी भी देश की आदर्श अर्थव्यवस्था के लिए उसकी जी.डी.पी. की 2 से 3 प्रतिशत ही करेन्सी सर्कुलेशन में होनी चाहिए और वह भी छोटी डिनोमिनेशन की करेन्सी में होनी चाहिए। शेष अर्थव्यवस्था टैक्नॉलॉजी बेस्ड बैकिंग ट्रांजॅक्शन, चैक, ड्राफ्ट, क्रेडिट, डेबिट व स्मार्ट कार्ड, मोबाइल ट्रांसफर आदि से चलती है और ये सभी ट्रांजक्शंस ट्रेसेबल होते हैं और इससे कालेधन की अर्थव्यवस्था पर प्रभावी अंकुश लगता है। जबकि भारत की अर्थव्यवस्था में लगभग 10% करेंसी है और उसमें से भी 97% बड़ी करेंसी है। अत: **500 व 1000 रुपये** के बड़े नोट वापस लेकर कालेधन, भ्रष्टाचार, कालेधन्धे महंगाई, गरीबी, नकली करेंसी, नक्सलवाद व आतंकवाद आदि सभी अनैतिक व अवैध कार्यों पर अंकुश लगायें। साथ ही भारत की कर प्रणाली भी बहुत ही दोषपूर्ण है। अत: इसमें भी एक बहुत बड़े व्यापक सुधार की आवश्यकता है।

(7) हमें समग्र रूप से त्वरित कार्यवाही करते हुए कालाधन भी लाना है, साथ ही भ्रष्टाचार को भी मिटाना है तथा देश में कुल लगभग 20 हजार प्रकार की भू-सम्पदाएँ हैं। जिनमें से कोयला, लोहा, सोना, चांदी, हीरा, गैस व पैट्रोल आदि 90 प्रकार के मिनरल्स (भू-सम्पदाएँ) जिनका व्यवसायिक दोहन हो रहा है। इनकी ही कुल कीमत लगभग 20 हजार लाख करोड़ रुपये हैं। यदि भ्रष्टाचार को हमने खत्म नहीं किया और भू-सम्पदा की लूट को नहीं रोका तो भारत माता की हिरण्यगर्भा कोख खाली हो जायेगी। यदि हम केवल भू-सम्पदाओं को बचाकर रखते हैं तो भारत को विश्व की महाशक्ति बनने से कोई नहीं रोक सकता है।

कालाधन व भ्रष्ट राजनैतिक पार्टियां

भ्रष्ट राजनैतिक पार्टियों को नसीहत- जब भी कोई भ्रष्ट नेता या उनका समर्थक राष्ट्रहित के हमारे कालेधन व भ्रष्टाचार के खिलाफ राष्ट्रहित के इस आंदोलन के बारे में अभद्र टिप्पणी करे तो उसके सामने ये थोड़े से तर्क व प्रश्न अति विनम्रता, गंभीरता व प्रामाणिकता के साथ रखना।

1. भाई! अपनी पार्टी या हाईकमान की प्रशंसा या चाटुकारिता के साथ देश के बारे में भी सोचो, देखो तो जरा कितनी गरीबी, बेबसी, भूख व लाचारी है अपने मुल्क में।

2. जब भी कोई भ्रष्ट नेता अभद्र भाषा बोलें तो उनको कहना- राम, कृष्ण, महावीर, दयानन्द, विवेकानन्द व गांधी के देश में कुछ तो शर्म करो, तहजीब से बोलना तो सीखो, कुछ तो शालीनता संस्कार व मर्यादा रखो, आचरण से तो गिर गए, कम से कम वाणी से तो मत गिरो।

3. कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व श्रीमती सोनिया गांधी व श्री राहुल गांधी एक बार भी मीडिया को फेस क्यों नहीं कर पाते? कालेधन के बारे में सोनिया जी व राहुल जी एक शब्द भी क्यों नहीं बोलते, क्यों नहीं कभी कहते कि उनका देश या विदेश में कालाधन या काली सम्पत्ति नहीं है। क्योंकि झूठ को डर सताता रहता है। लगता है कालेधन के काले खजाने कांग्रेस या उनके यार दोस्तों के ही हैं।

4. लगता है सारा कालाधन कुछ भ्रष्ट लोगों और विशेषकर कुछ परिवार या उनके द्वारा संरक्षित लोगों का ही है। इसीलिए तो वो इतने आंदोलनों के बावजूद अब तक एक रुपया भी कालाधन देश को नहीं दिलाते। 70 से ज्यादा देशों से सन्धियां ऐसी कि जिससे कि 2012 से पहले के कालेधन के बारे में पता ही न चले। ये सन्धियां कालेधन को लाने के लिए की हैं या छिपाने के लिए।

   एक बड़ी भ्रष्ट पार्टी का नेतृत्व, कालाधन की मात्रा व उसे देश को दिलाने को लेकर लगातार झूठ बोल रहा है। उस पार्टी के गैर जिम्मेदार कुछ भ्रष्ट नेता बार-बार झूठे तर्क देते हैं कि विदेशी बैंकों व स्विटजरलैंड आदि की विदेशी सरकारों पर हमारे नियम व कानून लागू नहीं होते। अपने देश में तो बैंकिंग सीक्रेसी (गोपनीयता) के कानून खत्म करो, टैक्स हैवंस के बैंकों से जानकारी लो, F.D.I., F.I.I. व पार्टिस्पेटरी रूट से जो पैसा आ रहा है उसके असली मालिकों या मूल मालिकों के बारे में तो देश को बताओ, 50 हजार से ज्यादा कालेधन के लेनदेन की जो सूचनाएं सरकार के पास हैं उन्हें तो सार्वजनिक करो। यदि इतना भी कर दोगे तो देश के बाहर व भीतर एक हजार से डेढ़ हजार करोड़ रुपये का जो कालाधन (बेईमान, घोटालों व लूट का पैसा है) व काली सम्पत्ति है उसका पूरा पता लग जायेगा और ये देश को मिल जायेगा। कालेधन के चोरों को पहले अपने देश में ही पकड़ना पड़ेगा और यहाँ तो अपनी ही सरकार व अपने ही कानून हैं तथा यदि नए कानून भी बनाने पड़ें तो हम बना सकते हैं?

5. यदि ये कहते हैं कि बाबाजी अथवा पतंजलि में कालाधन है तो हमारा कहना है कि हमारे पास यदि कालाधन है तो ले लो और पतंजलि योगपीठ भी ले लो जो कि देश के करोड़ों सामान्य ईमानदार, मेहनतकश लोगों के दान से बनी है, उसमें भी तुम्हें यदि कालाधन नजर आता है तो वह भी ले लो और फांसी से लेकर जो भी सख्त से सख्त सजा हो सकती है वह सजा हमें दे दो, लेकिन देश का

1 हजार लाख करोड़ से अधिक जो कालाधन है वह भी तो देश को दिलवाओ, भ्रष्टाचार भी तो मिटाओ। देश को भ्रम में मत रखो। ओछी बातें व ओछी हरकतें करना बन्द करो।

6. बाबा रामदेव जी से लेकर कैग, सुप्रीम कोर्ट, रतन टाटा व अन्य कोई भी व्यक्ति, संगठन व पार्टी आदि के जो लोग यदि कालाधन व भ्रष्टाचार आदि मुद्दों को उठाते हैं और सरकार की नीयत व नीतियों पर यदि सवाल करते हैं तो सारे भ्रष्ट नेता व गद्दार राजवंश उसी को बदनाम करने पर तुल जाते हैं। यह बहुत ही बेशर्मी व गैर जिम्मेदाराना बात है। कालेधन पर कार्यवाही के बजाय बाबा रामदेव व उनके समर्थकों तथा राष्ट्रसेवा व लोक कल्याण के कार्य को बदनाम करने की नाकाम कोशिश में लग जाते हैं।

20 साल तक तो हम सही थे, 4 जून के पहले स्वामीजी योगी, शीर्ष संन्यासी व देश के गौरव थे, 4 जून के कालाधन के राष्ट्रव्यापी आंदोलन के बाद से श्रद्धेय स्वामीजी व पूज्य आचार्य श्री अचानक सरकार की नजरों में अपराधी हो गए, उनपर डबल C.B.I. जाँच व 100 से ज्यादा झूठे केस व नोटिस भेजकर, सरकारी एजेंसियों का दुरुपयोग करके उनको षड्यंत्र के तहत बदनाम करने की नाकाम कोशिश हर दिन सरकार पार्टी कर रही है। सरकार ने गिरावट की सभी हदें पार कर दी हैं।

7. स्वामी रामदेव जी व उनसे जुड़े पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट) व दिव्य योग मंदिर (ट्रस्ट) आदि ने तो पिछले लगभग 2 दशकों से दान के एक-एक पैसा का हिसाब सरकार व उसके सम्बन्धित विभागों को पूरी प्रामाणिकता के साथ दिया है और डबल सी.बी.आई., सौ से ज्यादा नोटिस व केस आदि करके भी सरकार हमें एक भी जगह गलत साबित नहीं कर पाई है। यह हमारी ईमानदारी, सेवा व सच्चाई का सबसे बड़ा प्रमाण है। (हमें तो दान मिला है। उसका हिसाब व हमने क्या सेवा की है यह सरकार, समाज, देश व पूरी दुनियाँ को पता है)

अब तो देश की बड़ी भ्रष्ट पार्टियों, गद्दार राजवंशों व भ्रष्ट नेताओं के निजी ट्रस्टों व पार्टियों ने जो करोड़ों रुपये लिया है उसका पाई-पाई का हिसाब तुम्हें देना चाहिये ताकि तुमने क्या-क्या पाप किये हैं और किन-किन भ्रष्ट ताकतों से तुमने हजारों लाखों करोड़ रुपये लूटे हैं? साथ ही आजादी के बाद इन 66 सालों में जो एक बड़ी पार्टी के नेतृत्व ने ही कई सौ लाख करोड़ खुद लूटे हैं तथा अन्यों से लुटवायें हैं, उसका पूरा-पूरा हिसाब व वह लूटा हुआ देश का धन देश को लौटाना पड़ेगा तथा जेलों में जाना पड़ेगा।

अरे बेईमानों! हम तो देश, धर्म, संस्कृति की सेवा व रक्षा में लगे हैं। योग, आयुर्वेद, वैदिक ज्ञान व स्वाभिमान को बचाने व बढ़ाने में लगे हैं तुम तो सब कुछ को मिटाने पर तुले हुये हो। लेकिन तुम कामयाब नहीं होओगे क्योंकि **''सत्यमेव जयते''** जीत हमेशा सच की होती है।

8. यदि किसी अन्य राजनैतिक पार्टी का व्यक्ति भी यह कहे कि हमारे पास तो रोजी, रोटी, मंहगाई, बेरोजगारी, गरीबी व अशिक्षा आदि दूसरे बहुत से मुद्दे हैं, कालाधन कोई बहुत बड़ा मुद्दा नहीं है तो उन महानुभावों से भी शालीनता व विनम्रता से पूछना कि भाई इन रोजी-रोटी आदि मुद्दों को भी पूरा करने के लिए धन कहाँ से लावोगे? सब काम पैसे से होते हैं इसलिए अब सबसे बड़ा मुद्दा है

कालाधन। लगभग 1 हजार लाख करोड़ रुपये कालाधन जो देश के भीतर व बाहर है वह देश को मिलना ही चाहिए तभी सभी समस्याओं का पूरा समाधान होगा।

9. देश की एक भ्रष्ट पार्टी के नेतृत्व को देशभक्त देशद्रोही लगते हैं, ईमानदार बेईमान तथा देश के गद्दार उनको वफादार नजर आते हैं।

   योग, आयुर्वेद एवं स्वदेशी का महातीर्थ इनको महापाप नजर आता है, बिना किसी सरकार की एक कौड़ी के सहयोग के द्वारा भारतीय ज्ञान का महाधाम पतंजलि योगपीठ जहाँ से योग, आयुर्वेद के द्वारा करोड़ों लोगों की जिन्दगी बची है। इसको कहते हैं कि बाबा योग व आयुर्वेद को बेच रहे हैं। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि, क्योंकि जिस पार्टी ने देश का सब कुछ बेच दिया उनको सब बेचने वाले ही नजर आते हैं। हमने देश, धर्म, संस्कृति व आम लोगों को योगायुर्वेद से बचाया है। हमने योगायुर्वेद को बेचा नहीं है। 2 से 10 गुना सस्ती दवा लगभग लागत मूल्य पर लोगों को उपलब्ध कराई है।

   जो कार्य पिछले 68 वर्षों में सरकार ने नहीं किया, वह कार्य योगपीठ ने किया है। दुनियाँ में भारत का सम्मान बढ़ाया है तथा दुनियाँ के करोड़ों लोगों तक योगायुर्वेद व अध्यात्म को पहुँचाया है। सरकार को तो हैल्थ बजट का 97% एलोपैथी का खर्च होता है। योगायुर्वेद, सिद्धा, यूनानी, होम्योपैथी भारतीय चिकित्सा पद्धतियाँ, जिनसे देश की करीब 80% जनता अपना उपचार करती है, सरकार तो अपने प्राचीन ज्ञान, सम्मान व स्वाभिमान की सभी गौरव परम्पराओं व प्रतीकों को नष्ट करने पर तुली है।

10. नए-नए कांग्रेसियों को नसीहत देना, भाई हमारे तो दादा-परदादा सब कांग्रेसी थे लेकिन जब हमें इनके पापों, लूट व देश के साथ गद्दारी की असलियत का पता चला तो इनसे घृणा या नफरत हो गई। अंग्रेजों की भक्ति, देशभक्त क्रान्तिकारियों के साथ धोखा व आजादी के बाद इनके अनगिनत पापों के बारे में जिसे भी पता चलेगा उसे अपने आप इनसे घृणा होने लगेगी क्योंकि इनके कर्म ही ऐसे हैं। जिस दिन ये पापी पार्टी बेनकाब होगी, उस दिन इसका नेतृत्व व भ्रष्ट नेता जेलों में होंगे तथा देश का लूटा हुआ लाखों करोड़ रुपये देश को मिलेगा व देश में चारों ओर खुशहाली आयेगी।

एक बड़ी भ्रष्ट राजनैतिक पार्टी के आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक बड़े पाप क्या हैं?

1. **आर्थिक लूट, तबाही व शोषण–** जीप, बोफोर्स, आदर्श सोसायटी, कॉमन वैल्थ गेम घोटाला (C.W.G.), 2जी, कोल जी से लेकर जीजा जी या दामाद जी घोटालों तक "घोटाला सहस्त्र नाम" का इस भ्रष्ट पार्टी ने विश्व कीर्तिमान बनाया है तथा 400 लाख करोड़ रुपये के कालेधन की लूट के लिए मुख्य रूप से गुनाहगार व जिम्मेदार यही पार्टी है। देश की विश्व में प्रतिष्ठा खत्म करने, देश की गरीबी, बेरोजगारी, किसानों, मजदूरों व अन्य आम लोगों की बदहाली के लिए भी मुख्य रूप से इस पार्टी की गलत आर्थिक नीतियाँ, लूट व गैर जिम्मेदाराना रवैया ही कारण है। जल, जंगल, जमीन व भू-सम्पदाओं को लूटकर तथा वनवासियों को उनकी जमीन से बेदखल करके उन्हें नक्सलवाद व माओवाद की आग

में धकेल दिया। यदि इस पार्टी की आर्थिक नीति, विदेश नीति, व्यापार नीति, कृषि नीति ठीक होती तथा राजनैतिक ईमानदारी होती तो आज भारत आर्थिक दृष्टि से कम से कम 10 गुणा आगे होता। वर्ल्ड बैंक, I.M.F., W.T.O., U.N.O. व W.H.O. का मुख्यालय भारत में होता। हमारे ISRO, DRDO जैसी अनुसंधान संस्थायें- अमेरिका की NASA, DARPA के समान विश्वस्तर पर अग्रणी व अत्याधुनिक होती तथा हॉर्वर्ड, मैसाचुसेट्स, ऑक्स्फोर्ड, कैम्ब्रिज जैसे विश्वस्तरीय प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय भारत में होते और भारत विश्व की आर्थिक महाशक्ति, ज्ञान-महाशक्ति और सैन्य-महाशक्ति होता।

2. धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक पाप– हर वर्ष सरकारी आँकड़ों के हिसाब से एक करोड़ से अधिक गोवंश की हत्या भारत में तथा एक करोड़ से अधिक गायों की तस्करी गोकसी के लिए बांग्लादेश में; हर गाँव, गली-मोहल्ला व सड़क पर शराब के ठेके जो कुल मिलाकर देशभर में छोटे बड़े लगभग 50 लाख होंगे; दुश्चरित्रता फैलाने वाली दूरदर्शन प्रसारण नीति के कारण अश्लीलता, विलासिता, दुराचार व व्यभिचार चारों तरफ फैल रहा है और देश का पूरा वातावरण जहरीला बना दिया है। भगवान् राम, कृष्ण व शिव आदि महापुरुषों को काल्पनिक एवं रामायण व महाभारत आदि को उपन्यास बताकर धर्म की जड़ों को नष्ट करने का घृणित अक्षम्य अपराध तथा आत्मगौरव के सभी प्रतीकों, अपने धर्म, अध्यात्म, संस्कृति, संस्कार व सभ्यता के मूल तत्वों, योग-आयुर्वेद एवं वैदिक ज्ञान को षड्यन्त्र पूर्वक उपेक्षा करके नष्ट करने की साजिश इस पार्टी ने की है। हमारे वैयक्तिक चरित्र से लेकर आदर्श परिवार, आदर्श समाज व आदर्श राष्ट्र की मूल अवधारणा को नष्ट करके ओम् के देश को रोम का देश, सदाचार के देश को दुराचार का देश तथा राम के देश को रावण का देश, कामाचार और पापाचार का, धर्म विमुखता और धर्मविकृति का देश बनाने का षड्यन्त्र इस पार्टी ने किया है।

3. राजनैतिक पाप– अंग्रेजी साम्राज्य की रक्षा के लिए इस पार्टी की स्थापना ए.ओ. ह्यूम नाम के एक अंग्रेज अधिकारी ने की। आजादी के संघर्ष को कांग्रेस का संघर्ष स्थापित करने की नाकाम कोशिशें की गयी। कांग्रेस का अर्थ है जमावड़ा। कभी यह देशभक्तों का जमावड़ा बनी पर 1934 के बाद, जब सत्ता का हस्तांतरण (ट्रांसफर ऑफ पावर) सुनिश्चित हो गया और गांधीजी ने कांग्रेस छोड़ दी, महामना मालवीय शिक्षा-कार्य में सीमित होने को विवश हो गये, तब से एक चालाक और कमजोर चरित्र वाले धड़े ने छल-कौशल से इसे एक व्यक्ति और परिवार के दरबारियों-चाटुकारों का जमावड़ा बनाना शुरू किया। अब यह एक परिवार के भक्तों का जमावड़ा (फेमिली-कांग्रेस) बन चुकी है। अंग्रेज-भक्ति से लेकर सत्ता की प्राप्ति तक आजादी के नाम पर 14 अगस्त को ''ट्रांसफर ऑफ पावर एग्रीमेन्ट'' पर हस्ताक्षर, छद्म राष्ट्रवाद, छद्म समाजवाद, छल एवं प्रपंच से विदेशियों के साथ मिलकर देश की लूट में सम्मिलित रहने से लेकर देश के विभाजन तक अनगिनत पाप इस पार्टी का नेतृत्व करने वाले खानदान ने किए हैं। आजादी के बाद कश्मीर समस्या, कम्युनिस्ट इंटरनेशनल से जुड़कर रूस के षड्यन्त्र का शिकार होकर रक्षा-तैयारी की उपेक्षा, सदियों से भारत को गुरु मानने वाले तिब्बत पर कम्युनिस्ट चीन का कब्जा होने देने में एवं कैलाश मानसरोवर को गंवाने में, 1962 के चीन युद्ध में पराजय से लेकर, भारत नेपाल सम्बन्धों को ठीक से नहीं संभालने के फलस्वरूप नेपाल को राजनैतिक अस्थिरता में धकेलने तक तथा अदूरदर्शी विदेश नीति के चलते अफगानिस्तान, पाकिस्तान, श्रीलंका व अन्य देशों के साथ कूटनीतिक भूलों के कारण भारत की मूल आत्मा व अस्मिता पर बहुत बड़े गहरे घाव इस पार्टी ने दिए हैं। भारत के

वीरता पूर्ण स्वर्णिम अतीत के स्थान पर राजनैतिक रूप से छद्म अहिंसा व पंचशील के झूठे नारे देकर देश के शौर्य व स्वाभिमान को रौंदा। यदि इस पार्टी ने नीतिगत व नीयतगत पाप नहीं किया होता तो आज भारत विश्व की राजनैतिक, आर्थिक व आध्यात्मिक महाशक्ति होता और ये बुरे दिन व देश की तबाही का मंजर हमें नहीं देखना पड़ता। **यह पार्टी आज कालाधन, करप्शन, कलंक, कैंसर व कंस का पर्याय बन चुकी है।** कभी माफ नहीं किये जाने वाले अनन्त पाप इसने किए हैं। वर्तमान में भी जब माताएँ रसोई गैस पर खाना पकाती हैं, तो उन्हें उसका कई गुना मूल्य चुकाना पड़ता है किसान खेत में पूरी मेहनत करते हैं और उनको उपज का पूरा दाम नहीं मिलता, दुकानदार जब दुकान में बैठता है तो, F.D.I. का भूत उसे डराता है, कारीगर जब काम करता है और उसको दाम पूरा नहीं मिलता तो अक्सर सब भारतीय तथा कमोबेश सवा सौ करोड़ देशवासी खुद की व देश की बदहाली के लिए इस पार्टी के नेतृत्व की गलत नीतियों व गलत नीयत को कोसते रहते हैं। अन्ततः इन सबकी बद्दुआओं के कारण अब इनकी सत्ता से बेदखली सुनिश्चित है। **जब तक इस पार्टी का सत्ता से पत्ता साफ नहीं होगा, तब तक देश को इंसाफ नहीं मिलेगा।** यद्यपि दूसरी पार्टियों ने भी कुछ पाप किये हैं, लेकिन इसकी तुलना में बहुत कम। उनके पास तो सत्ता भी कम ही समय रही। आजादी से पहले देश में नागरिक जीवन में कोई राष्ट्रीय स्तर पर बड़ा संगठन न होने के कारण कुछ अच्छे लोग भी इस पार्टी से जुड़े हुए थे, लेकिन मूलतः वे आर्य समाज व अन्य राष्ट्रवादी संगठनों से थे। इन अच्छे लोगों के तप, पुरुषार्थ और प्रभाव के कारण इस पार्टी ने पापों का पहाड़ खड़ा करने के साथ-साथ कुछ अच्छे कार्य भी किये हैं, लेकिन ये नगण्य से हैं। आज भी भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य व कर्ण की तरह 10-20 कुछ देशभक्त ईमानदार लोग कांग्रेस में भी हैं तथा इस पार्टी के पापों का पूरा पता नहीं होने के कारण कुछ लोग इस पार्टी को आज भी वोट दे देते हैं। **जिस दिन सभी सच्चे देशभक्त लोग इस पार्टी व इसका नेतृत्व करने वाले खानदान के पापों को देश को बताना शुरू कर देंगे, तो कुछ ही समय में सारा देश इनसे घृणा करने लगेगा, यदि फिर भी कुछ लोग स्वार्थ, अज्ञान, आग्रह व भयवश इनसे जुड़े भी रहेंगे तो भी ये देश की सत्ता पर काबिज होकर इसे लूट नहीं सकेंगे।**

4. देश की भलाई में इस पार्टी को आपत्ति क्यों? - यदि यह पार्टी व उसके सहयोगी दल देश व देशवासियों से प्यार करते हैं तथा आम लोगों को उनका हक या न्याय देना चाहते है, तो मजबूत लोकपाल बनाने व कालाधन देश को दिलाने व भ्रष्टाचार को मिटाने हेतु अन्य जरूरी कानूनी प्रावधान करने व अन्याय पूर्ण इस भ्रष्ट व्यवस्था को बदलने में उनको आपत्ति क्यों है? लगता है कालाधन इस पार्टी के नेतृत्व या उनके द्वारा संरक्षित लोगों का ही है तथा वे खुद ही सबसे भ्रष्टाचारी हैं। जब इसका नेतृत्त्व व उसके सहयोगी दल खुद पाप की दल-दल में फंसे हैं तो अब उनसे इंसाफ की उम्मीद बेकार है, इनको सत्ता से बेदखल करने हेतु इनका सामाजिक व राजनैतिक बहिष्कार नितान्त आवश्यक हैं, यह पार्टी तो भ्रष्टाचार की गंगोत्री बना चुकी है, ऐसा हम आरोप नहीं लगा रहे हैं, अपितु वह खुद अपने आचरण से बेनकाब (एक्सपोज) हो चुकी है।

आध्यात्मिक न्यायवाद

(Ideology and Principals of our Organization- Spiritual Justism)

आज पूरी दुनियाँ पूंजीवाद (Capitalism), साम्यवाद (Communism), समाजवाद (Socialism) व कट्टरवाद (Fundamentalism) के चार खेमों में बंटी है। पिछले कई सौ सालों में इन सब वादों से कैसे अन्याय या नाइंसाफी हो रही है, यह भी हमने देखा है। अतः इन वाद-विवादों के आग्रहों एवं संकीर्णताओं से मुक्त होकर हम अभ्युदय एवं निश्रेयस अर्थात् सम्पूर्ण भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति, खुशहाली, समृद्धि या विकास करना चाहते हैं एवं समग्र राष्ट्रवाद (Comprehensive Nationalism) या राष्ट्रभक्ति का पावन भाव जन-जन में भरना चाहते हैं। जल, जंगल, जमीन, भू-संपदा एवं अर्थव्यवस्था पर एकाधिकार स्थापित करने वाली साम्राज्यवादी, शोषणकारी व अन्यायपूर्ण व्यवस्था व सोच के स्थान पर **आध्यात्मिक न्यायवाद** के सिद्धान्त पर चलकर सबको सामाजिक व आर्थिक न्याय दिलाकर सम्पूर्ण मानवता व जड़ चेतन प्रकृति को बचाने का संकल्प लिया है।

I. **आध्यात्मिकता** से हमारा तात्पर्य अहिंसा, सत्य, अस्तेय, सदाचार, अपरिग्रह, शुचिता, सन्तोष, तप, कर्मशीलता, आत्मनिष्ठता व आस्तिकता आदि तर्क, तथ्य व व्यवहारिक धरातल पर खरे उतरने वाले उच्च शाश्वत वैज्ञानिक नियमों, मर्यादाओं, परम्पराओं, संस्कृति, सभ्यता, संस्कारों, परा, अपरा, विद्याओं एवं मान्यताओं के मूल तत्त्वों को व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के सम्पूर्ण व संतुलित विकास हेतु आग्रह व विनम्रता पूर्वक अति आवश्यक मानते हैं। जो भारत की देव संस्कृति या ऋषि संस्कृति या वैदिक परम्परा में आदिकाल से हैं। परम्पराओं के नाम से जो ढोंग, आडम्बर, पाखण्ड, अन्धविश्वास, भूत, प्रेत, जातिवाद, छूआछूत, भेदभाव व अन्य अवैज्ञानिक रूढ़ियाँ या कुरितियाँ प्रचलित हैं उनको हम पूरी तरह से अस्वीकार करते हैं।

न्यायवाद से हमारा अभिप्राय- इन्सान से लेकर और इंसानों में भी समर्थ-असमर्थ सबके साथ न्याय हो तथा इन्सान के साथ-साथ जल, जंगल, जमीन, भू-सम्पदा, सब छोटे-बड़े जीव, जन्तु, पशु-पक्षी आदि सम्पूर्ण जड़-चेतन जगत् अर्थात् समग्र प्रकृति के साथ हमारा न्यायपूर्ण दृष्टिकोण होना चाहिए। हम समाज, सत्ता, व्यवस्था व सम्पत्ति में न्यायपूर्ण समृद्धि, न्यायपूर्ण स्वामित्व, न्यायपूर्ण वितरण, न्यायपूर्ण उपभोग (प्रकृति का दोहनादि) एवं न्यायपूर्ण भागीदारी के प्रबल समर्थक हैं। जब तक यह न्यायपूर्ण अहिंसक समृद्धि एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण वाली व्यवस्था, नीतियां व कानून नहीं होंगे तब तक मनुष्य को पूर्ण सुख, शांति, समृद्धि, संतुष्टि या दुःखों से पूर्ण मुक्ति नहीं मिलेगी।

II. **प्रचलित अवधारणाओं से भिन्नता :** कुछ लोग सत्ता, सम्पत्ति व व्यवस्था पर एकाधिकार स्थापित करने हेतु देश के लोगों में जाति, वर्ग व मजहब आदि के नाम पर घृणा पैदा करते हैं। हम घृणा की बुनियाद पर परिवर्तन का महल नहीं खड़ा करना चाहते। हम मजबूत और मजबूर को साथ लेकर आगे

बढ़ रहे हैं। हमने जाति, धर्म, प्रान्त व किसी वर्ग विशेष के प्रति घृणा पैदा नहीं की बल्कि हमने आपसी सद्भाव, भाईचारा व समग्र भारत को केन्द्र में रखकर वर्गीय भारतीयता के स्थान पर समग्र भारतीयता को महत्व दिया है।

हम सवर्ण जातियों में जो समर्थ लोग हैं तथा देश की भलाई या विकास के लिये कार्य कर रहे हैं, उनका तो सम्मान करते ही हैं, साथ ही सवर्णों में भी जो असमर्थ हैं तथा पिछड़ों, अतिपिछड़ों, दलित, वाल्मीकि, वनबासी एवं अल्पसंख्यक आदि सभी मजबूर एवं मजबूत लोगों के जीवन में बिना किसी पक्षपात के खुशहाली लाना चाहते हैं।

हम पूंजी के एकाधिकार के स्थान पर न्यायपूर्ण अधिकार व उपभोग के समर्थक हैं। हम साम्यवादियों व समाजवादियों की तरह नास्तिकवाद को नहीं अपितु आस्तिकता व आध्यात्मिकता के मूलभूत वैज्ञानिक सिद्धांतों को मानते हैं तथा हम कट्टरपंथी न होकर सभी वर्ग, जाति, समूह, देश एवं सभी मजहबों के प्रति उदारभाव रखते हैं। हम सबके सम्मान व स्वाभिमान की रक्षा के पोषक हैं। अतः हम इन प्रचलित वादों से अलग हैं।

III. **कट्टरवाद एवं उदारवाद के बारे में हमारी सोच :** हम सार्वजनिक जीवन में उदारवाद के पोषक हैं, साथ ही संगठन निष्ठा, गुरुनिष्ठा, संस्कृति निष्ठा व राष्ट्रनिष्ठा में कट्टरवाद का समर्थन करते हैं क्योंकि जब तक सत्य, न्याय व प्रकृति के शाश्वत मूल्यों, आदर्शों, सिद्धान्तों, गुरु एवं राष्ट्र के प्रति पूर्ण प्रेम, अखंड निष्ठा या विश्वास की पराकाष्ठा नहीं होगी तब तक हम अपना लक्ष्य नहीं प्राप्त कर सकते हैं।

जब तक अपने लक्ष्य को पाने के लिए जूनून (एग्रेसिवनेस) नहीं होगा, तब तक हम अपने किसी भी मिशन में सफल नहीं हो सकते।

IV. **हम विनाशकारी विकास के समर्थक नहीं–** देश के वर्तमान सत्ताधीशों ने विकास के नाम पर केवल मनुष्य के केवल भौतिक विकास की बात की। बिना आध्यात्मिकता के केवल भौतिक विकास अधूरा व अंधा है और मनुष्यों में भी एक प्रतिशत मनुष्यों का देश पर एकाधिकार कायम हो गया। 99% आम आदमियों को उससे वंचित कर दिया गया। मनुष्य के लिए विकास के मूल तत्त्व–हवा, जल, जंगल, जमीन, भूसम्पदा, संसाधन, सम्पत्ति व पूरी प्रकृति को दाँव पर लगा दिया। इसी का परिणाम है– गैर–बराबरी, महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, नक्सलवाद, जातीय व वर्गीय हिंसा प्रकृतिक विनाश (ग्लोबलवार्मिंग) व अन्य सामाजिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं में देश–दुनियाँ धू–धू करके जल रही है। शाइनिंग इंडिया व बर्निंग इंडिया की बहुत बड़ी खाई खड़ी हो गई है।

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

अपघ्नंतो अराव्णः॥ *–ऋग्. 9/63/5*

मा व स्तेन ईशत (वेद) *–यजु. अ.1/मं.1*

अर्थात् धरती पर भगवान्, सत्य या न्याय का साम्राज्य स्थापित करना। हम पर चोर व भ्रष्टाचारियों का शासन नहीं होना चाहिए।

सभी अध्यात्मधर्मा, शान्तिधर्मा, क्रान्तिधर्मा, ऋषि-मुनि, वीर-वीराङ्गनाओं, सन्तों, फकीरों व महापुरुषों की सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक व राजनैतिक विचारधारा ही हमारी विचारधारा है।

हमारे पूर्वजों का शुभ ही हमारी सच्ची विरासत है। हम वर्गीय भारतीयता के पोषक नहीं, अपितु समग्र भारत व भारतीयता के प्रबल समर्थक हैं, सर्व समाज की खुशहाली ही हमारा लक्ष्य है।

स्वामीजी निःस्वार्थ व निष्काम भाव से पूरे देश में ये आन्दोलन चला रहे हैं। आप जहाँ हैं, वहीं उसी गाँव, गली, मोहल्ला व शहर में आंदोलन के इन मुद्दों और देश की सच्चाई के बारे में बताइये व संगठन से जुड़कर इसे ताकत दीजिए। जब घर-घर जाकर कार्यकर्त्ता जन-जागरण करेंगे, तो देश जरूर बदलेगा। हर इंसान अन्ततः सच के ही साथ खड़ा होता है। सत्यमेव जयते।

हम क्या चाहते हैं?

एक प्रश्न समाज, मीडिया व आम लोगों के बीच से बार-बार आता है कि आखिर हम क्या चाहते हैं? हमारी विचारधारा, सिद्धान्त व अन्तिम लक्ष्य क्या है?

हमारा सीधा सा उत्तर है, हम चरित्र-निर्माण व राष्ट्र-निर्माण चाहते हैं। चरित्र निर्माण एक बहुत ही गंभीर व दीर्घकालिक योजना है। इसके पूरा होने में कम से कम 100 साल लगेंगे। माता-पिता व बच्चों से लेकर- घर, शिक्षा संस्थान व कार्य संस्थान एवं समाज, इन सबको संस्कारित करना पड़ेगा। हम इस कार्य को पूरी प्रामाणिकता से कर रहे हैं और आगे भी करेंगे। पतंजलि योगपीठ में हमने चरित्र निर्माण व व्यक्ति निर्माण से लेकर के स्वदेशी व्यवस्था का एक आदर्श व्यवहारिक स्वरूप (Model) तैयार किया है। राष्ट्र निर्माण के कार्य को हम एक दिन में ही शुरू कर सकते हैं और मात्र 100 दिन में इसका परिणाम देश को मिल सकता है। इसके लिए एक काम सबसे महत्वपूर्ण है, और वह है- **आर्थिक पारदर्शिता।** जब सब क्षेत्रों में पारदर्शिता की बात होती है और सरकारें भी जनता से हर क्षेत्र में पारदर्शिता की अपेक्षा करती हैं, तो फिर केन्द्र सरकार को आर्थिक पारदर्शिता में दिक्कत क्यों है? बस इसके लिए पटेल की तरह एक ईमानदार व साहसी प्रधानमंत्री इस देश को चाहिए। आर्थिक पारदर्शिता आते ही लाखों-करोड़ का ये कालाधन 100% देश को मिलकर ही रहेगा। संक्षेप में हम आध्यात्मिक न्यायवाद इस देश में लाना चाहते हैं। लेकिन दुर्भाग्य व आश्चर्य है कि इस देश की प्रजा 99% आस्तिक, सत्ता का नेतृत्व 99% नास्तिक, जनता 99% ईमानदार, नेता 90 से 99% बेईमान। 100-200 रुपये की जेब काटने वाले चोरों को जेल की सजा तथा हजारों लाखों लूटने वाले गद्दारों के राजसी ठाठबाट, अब तो पाप का घड़ा भर चुका है। अक्सर लोग जाति व मजहब आदि देखकर वोट करने लग गए हैं, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि जिस महिला के हाथों में आज देश की सत्ता है उसकी जाति व मजहब क्या है? जो महिला अपने देश में एक वार्ड मेम्बर का चुनाव नहीं जीत सकती वो इस देश पर राज करे, इससे बड़ी शर्म की बात और क्या हो सकती है। आज हमारे पास 500 से अधिक सेवाव्रती व ब्रह्मचारी कार्यकर्ता 5 हजार से अधिक पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता, 5 लाख से ज्यादा सक्रिय कार्यकर्त्ता तथा 50 लाख के लगभग अंशकालिक कार्यकर्त्ता हैं। 100 करोड़ से अधिक देश की जनता हमारे साथ है। अब तो किसी भी कीमत पर हमें इस देश को इन असुरों से मुक्ति दिलानी ही है और देश को आर्थिक व आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न विश्व की महाशक्ति विश्वगुरु बनाना ही है।

संगठन की ताकत व तप

1. जो कार्य एक साधारण व्यक्ति सैकड़ों, हजारों जन्मों में नहीं कर पाता, उससे अधिक कार्य तो प.पू. स्वामीजी व श्रद्धेय आचार्य जी अभी तक कर चुके हैं। पूज्य स्वामीजी महाराज द्वारा 11 लाख किलोमीटर की लोक मंगल यात्रा, 11 करोड़ से अधिक लोगों की सभाएँ, 11 हजार से अधिक शिविरों में आए लोगों के भीतर आत्मीयता, प्रेम, ज्ञान, तेज, देशभक्ति और अध्यात्म-चेतना जगाना वह महान् तप है, जो संगठन का आंतरिक बल और केन्द्रीय शक्ति है, यही संगठन की नाभि का अमृतकुंड और हृदय की अध्यात्म-ज्योति है, राष्ट्रीय कुंडलिनी-शक्ति का जागरण है, राष्ट्रभक्ति के महाभाव का उदय है। इस महाभाव के उदय से आत्मबल-सम्पन्न, राष्ट्रभक्ति-सम्पन्न बने करोड़ों

भारतीयों के हृदय की कृतज्ञता का भाव हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

2. 4 जून, 2011 को रामलीला मैदान में रात को 1:00 बजे अनशन कर रहे आन्दोलनकारियों पर लाठीचार्ज, बहन राजबाला की हत्या तथा पण्डाल में आग लगाकर साजिश के तहत श्रद्धेय स्वामी जी महाराज की हत्या का षड्यन्त्र, 3 जून, 2012 जन्तर-मन्तर पर एकदिवसीय अनशन तथा 9 अगस्त से 14 अगस्त, 2012 तक पुनः दिल्ली में ऐतिहासिक आन्दोलन, इसी प्रकार वर्षों से चल रही निःस्वार्थ सेवा व आन्दोलन और साथ ही ग्राम, प्रखण्ड, बूथ, वार्ड, तहसील तथा 650 जिलों तक फैला मजबूत संगठन इसी तप और ताकत का साकार रूप है। तप का फल है शक्ति, शक्ति की सार्थकता तप की वृद्धि में, शुभ के विस्तार और अशुभ के दमन में है। जब एक-एक गाँव में कम से कम 100 जवान, 100 किसान व 100 मातायें, बहने आन्दोलन के लिए तैयार हो जायेंगे, तो देश में बड़े से बड़ा परिवर्तन करने में हम सक्षम हो जायेंगे। हम यह काम करेंगे और जरूर बदलाव लायेंगे।
3. पक्षपात पूर्ण डबल C.B.I. जाँच, आये दिन झूठी अफवाहें, साज़िश के तहत सैकड़ों सरकार के नोटिस व केस लगाने के बावजूद कांग्रेस एक भी जगह हमें गलत साबित नहीं कर पायी। 100 करोड़ से ज्यादा देशवासियों का संगठन व आन्दोलन को समर्थन, सहयोग व सद्भाव ही हमारी सच्ची व सात्विक ताकत है।

अच्छे व बुरे लोगों में फर्क

दुष्ट अपनी दुष्टता कभी भी नहीं छोड़ता तथा सज्जनों, सज्जनता व सच का कभी भी सम्मान नहीं करता। सज्जन सात्विक अच्छे लोग सच के मार्ग से विचलित होते रहते हैं तथा दुष्टों व उनकी दुष्टता के बारे में ही अक्सर सोचते हुए यह मान बैठते हैं कि इनको सत्ता से हटाया नहीं जा सकता, इनके अन्याय को मिटाना असम्भव सा है, ऐसी निराशा की बातें करते हैं। जिन लोगों का दो कौड़ी का कोई चरित्र नहीं है तथा जिन लोगों का इस देश की खुशहाली या प्रतिष्ठा में कोई विशेष योगदान नहीं और देश के विकास के बारे में कोई गम्भीर समझ नहीं है, वे इस देश को चला रहे हैं। देश की सत्ता, सम्पत्ति व व्यवस्था पर कब्जा जमाये बैठे हैं और हम खुद को देशभक्त आस्तिक मानने वाले लोग हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें, यह हमें शोभा नहीं देता। आवो! अब तो पुनः सब वेदानुसार संगठित होकर एक हों।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥
परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे॥
जब जब होई धर्म कै हानि।
बाढ़हिं असुर अधम-अभिमानी॥
तब तब प्रभु धरि विविध सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥
इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नतो अराव्णः॥ *-ऋग्. 9/63/5*
मा व स्तेन ईशत (वेद) *-यजु. अ.1/मं.1*

का उद्घोष करें। इस पाप, अन्याय, अधर्म व नाइंसाफी को उखाड़ फेकें। असुरों, राक्षसों व राक्षसियों से शून्य कर दें भारत माँ की पावन भूमि को और आध्यात्मिक न्यायवाद के सिद्धांत पर चलकर एक परम् वैभवशाली राष्ट्रनिर्माण के लिए अपना सर्वस्व इस राष्ट्र यज्ञ में होम कर दें। **ओम् राष्ट्राय स्वाहा। इदं राष्ट्राय इदन्न मम:॥**

झूठे आरोप व जुल्म

भगवान् राम, भगवान् कृष्ण, गुरुनानकदेव से लेकर गुरु गोविन्द सिंह जी तक सभी गुरुओं, ईसामसीह, पैगम्बर मोहम्मद साहब, गैलीलियो, सुकरात, महर्षि दयानन्द एवं भगवान् बुद्ध आदि सभी महापुरुषों के साथ जालिमों ने बेइन्तिहा जुल्म व ज्यादतियाँ की हैं तो फिर श्रद्धेय स्वामीजी व पूज्य आचार्यश्री पर जुल्म करना, यह तो दुष्टों का सदा से स्वभाव रहा है। झूठे आरोप लगाना, षड्यंत्र करके सच को झूठलाने की नाकाम कोशिशें सदा से असुरों ने की हैं लेकिन सच व झूठ की तथा फकीर व वजीर की लड़ाई में सदा सच व फकीर की ही विजय हुई है। सत्ता, सम्पत्ति व व्यवस्था पर निरंकुश एकाधिकार जमा कर बैठे इन लोगों को लगता है कि पावर शेयरिंग गेम में ये फकीर कहाँ से आ गया। हम पावर के लिए नहीं प्योरिटी के लिए यह राष्ट्र यज्ञ का आह्वान कर रहे हैं।

धर्म व अर्थ की समझ :- धर्म व्यवस्था व अर्थ व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं या आयामों की समझ ठीक-ठीक न होने के कारण ही इस देश का धार्मिक व आर्थिक पतन हुआ और देश आज भी निरन्तर धार्मिक व आर्थिक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है।

योग शास्त्र व अर्थशास्त्र:- अब तक योगशास्त्र व अर्थशास्त्र को दुनियाँ का सबसे जटिल विषय माना जाता था। श्रद्धेय स्वामीजी ने दोनों के रहस्य के पर्दे को हटाया तथा योगशास्त्र व अर्थशास्त्र को हमारी रोजमर्रा की जिंदगी से सीधा जोड़ा है। योग न होने से सब रोग, दु:ख, अज्ञान व अशान्ति तथा अर्थ की ठीक-ठीक समझ न होने से ही सब अनर्थ, अन्याय, अधर्म, पाप व नाइंसाफी देश में हो रही है। खेती, उद्योग, नोकरी, अनुसंधान, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि किसी भी क्षेत्र में जो कुछ भी व्यक्ति शारीरिक व बौद्धिक श्रम करता है उन सबका मूल्यांकन क्योंकि पैसे में ही होता है। दुनियाँ में जो कुछ भी उन सब का मूल्यांकन अन्ततोगत्वा क्योंकि धन के रूप में ही होता है। अत: धन अर्थात् अर्थशास्त्र का सम्यक् बोध सबके लिए नितान्त आवश्यक है।

दोहरी गरीबी- एक तरफ वैचारिक, चारित्रिक या आध्यात्मिक गरीबी या दरिद्रता तथा दूसरी तरफ आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक गरीबी, दरिद्रता, गैर बराबरी या पिछड़ापन ये दोनों ही ठीक करने पड़ेंगे। व्यक्ति, व्यवस्था, समाज एवं सरकार, संस्कार एवं समृद्धि दोनों दिशाओं से समाज को उठाना पड़ेगा।

भौतिक व आध्यात्मिक सुख:- भौतिक सुख-सुविधाओं व संसाधनों का आधार है धन तथा आध्यात्मिक सुख, शान्ति, सन्तुष्टि व मुक्ति का आधार है धर्म। **सुखस्य मूलं धर्म:, धर्मस्य मूलम् अर्थ:। अर्थस्य मूलं राज्यय्, राजस्य मूलम् इन्द्रियजय:, इन्द्रियजयस्य मूलं विनय:, विनयस्य मूलं वृद्धोप सेवा।** -आचार्य चाणक्य।

गांधीजी के सपनों व सिद्धान्तों के हत्यारे:- कुछ लोग कहते हैं हमारे आदर्श तो महात्मा गांधी हैं। लेकिन उनका आचरण तो अंग्रेजों तथा राक्षसों से भी ज्यादा गया-गुजरा है। इन्हीं भ्रष्ट व गद्दार लोगों ने महात्मा गांधी व शहीदों की शहादत का अपमान किया है। ऐसी पार्टी व उसके नेतृत्व की नीतियों, नीयत व पापों को देश के सामने सच्चाई, तर्क, तथ्यों व प्रमाणों के साथ रखना है।

संगठन का सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक सिद्धान्त, लक्ष्य एवं विचारधारा

भारत स्वाभिमान आन्दोलन व संगठन की त्रिसूत्रीय कार्य–योजना

भारत स्वाभिमान आन्दोलन के मुख्य तीन लक्ष्य

1. **कालाधन :** 1000 से 1500 लाख करोड़ रुपये के कालेधन को राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करके देश को दिलाना एवं जल, जंगल, जमीन तथा लगभग 20 हजार लाख करोड़ रुपये की भू–सम्पदाओं को लूटने से बचाना।

2. **भ्रष्टाचार :** भ्रष्टाचार मुक्त भारत का निर्माण करना तथा योग, अध्यात्म एवं संस्कारों का व्यक्ति व समाज में समावेश करके सदाचार को बढ़ाना। शिक्षा में योग एवं उच्च नैतिक मूल्यों का समावेश कराना। बचपन में अच्छे या बुरे जो भी विचार या संस्कार बच्चों को दिये जाते हैं, जीवन भर वही विचार परिपक्व होते हैं।

3. **व्यवस्था परिवर्तन :** अन्यायपूर्ण अंग्रेजी व्यवस्था के स्थान पर न्यायपूर्ण स्वदेशी व्यवस्था लागू करके आर्थिक व सामाजिक गैर बराबरी दूर करना। सत्ता, सम्पत्ति, संसाधन एवं शासन व्यवस्था में अन्यायपूर्ण स्वामित्व, अन्यायपूर्ण समृद्धि, अन्यायपूर्ण भागीदारी, अन्यायपूर्ण वितरण तथा अन्यायपूर्ण उपभोग को खत्म करके–गैर बराबरी को दूर करके सबको आर्थिक व सामाजिक न्याय दिलवाकर भारत को विश्व की आर्थिक व आध्यात्मिक महाशक्ति बनाना।

गरीबी – हमारी गरीबी का कारण हमारी जाति या मजहब नहीं, अपितु कालाधन, भ्रष्टाचार एवं अन्यायपूर्ण व्यवस्था है।

कालाधन वापस लाने के लिए तीन मुख्य प्रक्रियाएँ

1. F.D.I. के मूल मालिकों का पता लगाने के लिए कानूनी प्रावधान करवाना। लगभग 20 लाख करोड़ रुपये की F.D.I.भारत में आई है, इसकी वर्तमान में कई गुणा कीमत है। देश के साथ धोखा व गद्दारी करके देश का लूटा हुआ धन, ये बेईमान लोग F.D.I. के माध्यम से देश में लाये हैं। F.D.I. में 80% से ज्यादा कालाधन है। F.D.I. के मूल मालिकों का पता लगाने से इन्हीं लोगों का देश व विदेश में जो अन्य अवैध धन व अवैध सम्पत्ति है, उसका भी पता लग जायेगा, अत: F.D.I. कालेधन की चाबी है।
2. हसन अली जैसे हजारों लोगों के नाम तथा 50 हजार से ज्यादा कालेधन के लेनदेन (ट्रान्जेक्सन्स)

की जानकारी सरकारी एजेन्सियों के पास है। इनके पास ही लाखों करोड़ रुपये कालाधन है। ये धन देश को दिलाना तथा इनके नाम सार्वजनिक करना है, जिससे इन लुटेरों के बारे में देश जान सके।

3. अर्थव्यवस्था को पारदर्शी बनाने हेतु बैंकों में गोपनीयता का कानून खत्म करवाना। हवाला, घोटाला, रिश्वतखोरी, बड़े नोट व टैक्स चोरी पर नियन्त्रण करना तथा प्राकृतिक सम्पदाओं व राष्ट्रीय संसाधनों की लूट खत्म करवाना, जिससे आगे से कालाधन जमा न हो।

समस्या – महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, भूख, गैर-बराबरी एवं नक्सलवाद आदि समस्याएँ वास्तविक नहीं हैं। साम्राज्यवादी गलत आर्थिक नीतियों व लूट से क्रूर सत्ताधीशों ने प्रायोजित तरीके से साज़िश करके ये समस्याएँ पैदा की हैं।

भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए तीन मुख्य प्रक्रियाएँ

1. मजबूत **लोकपाल** बनाना तथा **C.B.I.** को स्वायत्त बनाना, साथ ही **C.V.C., C.A.G.** तथा **C.E.C.** (चुनाव आयोग) की नियुक्ति की प्रक्रिया निष्पक्ष करके सभी प्रकार के भ्रष्टाचार पर पूर्ण अंकुश लगवाना।
2. **'पब्लिक सर्विस डिलीवरी गारन्टी एक्ट'** लागू करके सरकारी तन्त्र में 'काम के बदले दाम' (रिश्वत) को पूरी तरह खत्म करवाना। जो सरकारी नौकर तयशुदा समय में काम नहीं करें, उसे दण्डित करना तथा बार-बार गलती करने पर उसे बर्खास्त (सस्पेंड) करने का प्रावधान करवाना। भ्रष्टाचार से जुड़ें मामलों के लिए विशेष अदालतों में प्रतिदिन सुनवाई करके एक तय समय सीमा में विवादों के निपटारें की व्यवस्था होने से भ्रष्टाचार के आरोपी अपराधियों को शीघ्र दण्ड मिल सकेगा।
3. **शिक्षा में सदाचार बढ़ाना–** बचपन में जैसे संस्कार व विचार मिलते हैं, उनका असर व्यक्ति के पूरे जीवन पर पड़ता है, बचपन के बहुत अच्छे विचार एवं संस्कार आगे के जीवन में बहुत अच्छा इन्सान तथा बुरे विचार एवं संस्कार व्यक्ति को आगामी जीवन में बहुत बुरा भ्रष्टाचारी व दुराचारी आदि बना देते है। अत: सदाचार को बढ़ाए बिना, भ्रष्टाचार कम हो ही नहीं सकता। चरित्र निर्माण ही युग निर्माण का आधार हैं, अत: बहुत कुछ बदलना पड़ेगा। वर्तमान संस्कारहीन शिक्षा व अश्लीलता-पूर्ण दूरदर्शन प्रसारण नीति के कारण चारों तरफ कत्लखाने, शराब व नशा की दुकानें व व्यभिचार का वातावरण तैयार हो रहा है।

व्यवस्था–परिवर्तन के तीन मुख्य मुद्दे

1. **'राष्ट्रीय किसान आय आयोग'** का गठन करके किसानों को फसल का लाभकारी मूल्य दिलाना। किसानों व कारीगरों को **'कुशल श्रमिक'** का दर्जा दिलाकर इनका शोषण खत्म करवाना।

2. **भारतीय भाषाओं में संस्कार व रोजगार परक उच्च व तकनीकी शिक्षा** की व्यवस्था करवाकर गरीब, मजदूर, किसान व अन्तिम आदमी को भी डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस. व अन्य बड़ी पढ़ाई व कैरियर का हक दिलाना। इससे आम आदमी भी देश के नीति निर्धारण व व्यवस्था को संचालित करने में बड़ी भूमिका निभा पायेगा। जब जापान, जर्मनी, फ्रांस, चीन व रूस आदि में अपने देश की भाषा में शिक्षा है तो भारत में क्यों नहीं हो सकती? भाषा के नाम पर अन्याय व पक्षपात खत्म करवायेंगे।

3. **महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी व अशिक्षा से मुक्त शासन** लायेंगे और सामन्तवादी व्यवस्था को बदलकर आध्यात्मिक न्यायवाद के रास्ते पर चलकर सबको इंसाफ दिलवायेंगे।

   क. जहाँ आम आदमी के बच्चे पढ़ते हैं तथा बीमार होने पर इलाज कराते हैं, वहीं विधायक, सांसद व अन्य सरकारी तन्त्र के शीर्ष लोगों के लिए जब पढ़ाई व दवाई की व्यवस्था होगी तो कुछ ही दिनों में सारी व्यवस्था अपने आप बदल जायेगी। पब्लिक ट्रॉन्सपोर्ट से नेताओं की कुछ यात्राएँ सुनिश्चित करनी चाहिए तथा लालबत्ती के उपयोग की परम्परा जो सामन्तवादी सोच व गुलामी की प्रतीक है, यह बन्द होनी चाहिए। इससे यातायात में एक आदर्श व न्यायपूर्ण सुधार आयेगा।

   ख. जहाँ की सरकार व्यापारी होती है, वहां की प्रजा भिखारी बन जाती है। अतः सरकार को राष्ट्रहित में अति आवश्यक व्यवसायिक गतिविधियों को छोड़कर शेष सभी क्षेत्रों में देश की जनता को बिना किसी बाधा के काम करने का वातावरण उपलब्ध करना चाहिए। 9 बुनियादी सुविधाओं, रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आन्तरिक सुरक्षा सबको उपलब्ध हो सके तथा कानून व न्याय व्यवस्था देश में पूरी तरह आदर्श रूप में हो इसके लिए पूरा ध्यान देना चाहिए। नागरिकों को काम करने में सरकार को अनावश्यक अवरोध नहीं खड़े करने चाहिए। टैक्स के पैसे की सरकारी योजनाओं व सरकारी उपक्रमों व व्यवसायों में बर्बादी न हो, इसके लिए एक पारदर्शी व्यवस्था बनानी चाहिए।

   ग. हम लगभग 4 से 5 करोड़ प्रतिभावान अप्रवासी भारतीय (NRI) भारत में वापस लाने के लिए एक आदर्श वातावरण व व्यवस्था देश में बनायेंगे और भारत में करोड़ों प्रतिभावान लोग तैयार करेंगे।

   घ. हम शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सबको समान अवसर दिलवायेंगे और दुनिया की सबसे आदर्श शिक्षा एवं आदर्श चिकित्सा व्यवस्था हम देशवासियों को उपलब्ध करायेंगे।

   ङ. आम आदमी की तरह विधायक, सांसद, मंत्री, राज्यपाल व राष्ट्रपति आदि के आवास की व्यवस्था होगी। D.M., D.C., M.L.A., M.P. व गवर्नर आदि के सरकारी आवासों को नीलाम करके लाखों करोड़ रुपये देश के विकास व भलाई के लिए मिल जायेंगे।

   च. सभी सरकारी योजनाओं का नाम एक परिवार विशेष के नाम पर नहीं होगा। देश के सभी ऋषि, ऋषिकाओं, वीर, वीराङ्गनाओं व महापुरुषों के नाम पर देश की योजनाओं का नाम होगा। ये देश मात्र एक खानदान की जागीर या बपौती नहीं है।

छ. 99% नेताओं की अनावश्यक सुरक्षा का तामझाम खत्म होगा, तो अपने आप वे सबकी सुरक्षा के बारे में सोचेंगे, कानून व नीतियों को ठीक करेंगे एवं अपराध पर नियन्त्रण करवायेंगे।

ज. सभी कानून व नीतियों के निर्माण में जनता की भागीदारी होगी। केवल कुछ साम्राज्यवादी ताकतों, विदेशी कम्पनियों व ताकतवर लोगों के हित में ही नीतियाँ नहीं बनवाई जायेंगी।

झ. अभी तक की बनाई गई नीतियों व कानूनों की पुनः समीक्षा होगी तथा 1947 से लेकर अब तक के करीब 200 लाख करोड़ के सरकारी बजटों की भी समीक्षा होगी और देश के लूटे हुए धन की पूरी वसूली की जायेगी तथा लुटेरों को सजा दिलाई जायेंगी।

ञ. अनिवार्य मतदान, स्टेट फन्डिंग इलेक्शन एवं अन्य जरूरी चुनाव सुधार करवायेंगे, जिससे अच्छे लोग और अधिक संख्या में चुने जा सकें।

ट. जल, जंगल, जमीन, प्राकृतिक सम्पदाओं व अन्य **राष्ट्रीय संसाधनों के दोहन, नीलामी व रॉयल्टी की प्रक्रिया पूर्णरूप से पारदर्शी व न्यायपूर्ण बनवायेंगे।**

ठ. अंग्रेजों के वक्त के बने सभी एक्ट व कानूनों में न्यायपूर्ण बदलाव किया जायेगा, जैसे-1861 का बना पुलिस एक्ट, 1860 का बना इंडियन पीनल एक्ट, 1894 का बना प्रिज़न्स एक्ट, 1894 का बना लैंड-एक्विज़िशन एक्ट, 1872 में बने इंडियन एविडेंस एक्ट, 1872 के ही बने इण्डियन कॉन्ट्रैक्ट एक्ट। इसी तरह 1760 में रोबर्ट क्लाईव ने गोहत्या, शराब व वेश्यावृत्ति जैसे पापों को कानूनी स्वीकृति देकर जो अनर्थ किया, इस पूरी व्यवस्था को ही बदला जायेगा। विधि-व्यवस्था और न्याय-व्यवस्था को स्वदेशी बनाया जायेगा।

महंगाई को दूर करने के तीन उपाय

1. गैस, डीजल व पैट्रोल आदि सब लगभग आधे दाम पर दिलवायेंगे। क्योंकि इनका वास्तविक मूल्य इतना ही है।
2. लगभग 32 प्रकार के सभी टैक्स खत्म करवायेंगे। इससे साबुन, शैम्पू, साईकल, मोटर साईकल, गाड़ी व घड़ी से लेकर सभी रोजमर्रा की चीजें 30% से 50% सस्ती हो जायेगी। पाँच या दस लाख से अधिक की आमदनी पर बहुत कम इन्कम टैक्स लगाया जाए तथा ट्रांजेक्शन टैक्स आदि के रूप में सिंगल टैक्सेशन सिस्टम लागू किया जाये। इससे देश के लोगों की बचत बढ़ेगी और सब देशवासी धनवान् बनेंगे।

सबसे बड़ा सवाल है कि महंगाई बेरोजारी व गरीबी आदि दूर करने व सरकार को चलाने के लिए तथा सार्वजनिक विकास कार्यों के लिए जो धन की कमी होगी, वह पैसा कहाँ से आयेगा? इसका सीधा सा उत्तर है बेईमान लोगों पर कार्यवाही करके उनसे धन वसूली की जायेगी व कालेधन से इसकी पूर्ति की जायेगी। आम आदमी की जेब पर डाका नहीं डाला जायेगा। *अर्थव्यवस्था को पारदर्शी बनाकर बड़े लोगों से पूरे कर की वसूली की जायेगी। आज 99% ताकतवर लोग पूरा कर नहीं देते हैं तथा 100% साधारण लोग पूरा कर (इन्डायरेक्ट टैक्स) चुकाते हैं।*

3. खेती, उद्योग, गृह उद्योग, लघु उद्योग, ग्रामोद्योग का विकास करके एवं सेवाक्षेत्र में प्रोफेशनल्स की अधिक उपलब्धता तथा सभी क्षेत्रों में भरपूर उत्पादन एवं वितरण आदि प्रक्रियाओं को ठीक करके महंगाई पर पूर्ण नियन्त्रण किया जायेगा।

हक की जंग – हमें अपने हक की लड़ाई खुद लड़नी है। कोई राजनैतिक दल या खानदान हमारी लड़ाई लड़ने वाला नहीं है।

गैर-बराबरी-1: लोगों ने देश की सम्पूर्ण सम्पत्ति व संसाधनों पर एकाधिकार जमा लिया है, इसी के कारण 99% लोग गरीब व दुःखी हैं तथा आर्थिक व सामाजिक गैर-बराबरी है।

बेरोजगारी दूर करने के तीन मुख्य मन्त्र

1. देश का एक ग्राम भी लोहा, एल्युमिनियम, बॉक्साईट अयस्क व अन्य बेशकीमती कच्चा माल (Raw Materials) देश के बाहर नहीं जायेगा। तैयार माल का ही निर्यात होगा। इससे करोड़ों लोगों को देश में रोजगार मिलेगा। कच्चा लोहा यदि 5 रुपये का बाहर बिकता है, तो 40 से 50 रुपये का वही तैयार लोहा चीन हमें वापस बेचता है। इससे देश का बहुत बड़ा आर्थिक नुकसान होता है।
2. खेती, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि सेवा क्षेत्रों, अनुसंधान, विकास तथा नदियों को जोड़ना व अन्य जल प्रबन्धन आदि के क्षेत्रों में जब लाखों करोड़ रुपयों के कालेधन को विदेशों से लाकर राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करके देश की तरक्की में लगाया जायेगा तो करोड़ों युवकों व आम लोगों को रोजगार मिलेगा।
3. बेरोजगार व कम पढ़े लिखे लोगों के लिए बड़ी संख्या में विशेष वोकेशनल ट्रेनिंग व टेक्नीकल ट्रेनिंग सेन्टर्स बनवायेंगे तथा पूरी दुनियाँ की जरूरतों को भारत से पूरा करने के लिए एक विशेष कार्ययोजना बनवायेंगे तथा भारत को निर्यात के क्षेत्र में चीन से भी आगे लेकर जायेंगे।

गरीबी को दूर करने के लिए तीन मन्त्र

1. जब सबको रोजगार व समान शिक्षा आदि की व्यवस्था होगी व सबको पूरा काम व किसान मजदूर और कारीगर आदि को उनकी मेहनत का पूरा दाम मिलेगा तो सब धनवान होंगे, कोई गरीब नहीं रहेगा।

2. सभी प्रकार के कर (टैक्स) कम होने से महंगाई कम होगी तथा लोगों की बचत बढ़ेगी तो गरीबी अपने आप मिटेगी।
3. भूमिहीनों को भूमि तथा प्राकृतिक सम्पदाओं व राष्ट्रीय संसाधनों में जब सब 125 करोड़ भारतीयों को उनका न्यायपूर्ण हक मिलेगा तो एक परिवार को औसत रूप से भविष्य में लगभग 10 करोड़ रुपये प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मिलेगा और तब कोई भी भारतीय गरीब नहीं रहेगा। गरीबी मिटाने के नाम पर एक दल विशेष देश को 65 सालों से धोखा दे रहा है।

जनसंख्या को नियन्त्रित करने के मुख्य तीन उपाय

1. गरीबी व अशिक्षा जनसंख्या के मूलभूत कारण हैं, ये दोनों खत्म करके हम आबादी को नियन्त्रित करवायेंगे।
2. अवैध रूप से जो बांग्लादेशी, पाकिस्तानी व अन्य देशों के जो नागरिक हिन्दुस्तान में रह रहे हैं, उनको बाहर निकलवायेंगे।
3. ऊपर के दो उपाय अपनाने के बावजूद भी यदि स्थिति नियन्त्रण में नहीं आयेगी तो चीन की तरह कठोर कानून भी बनाये जा सकते हैं तथा कम बच्चे पैदा करने वाले लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, टैक्सेशन एवं अन्य क्षेत्रों में विशेष प्रोत्साहन व प्राथमिकता देकर लोगों को जनसंख्या नियंत्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता हैं, क्योंकि देश में हम जमीन व अन्य संसाधनों को नहीं बढ़ा सकते और यदि हमने अपनी आबादी को नियन्त्रित नहीं किया तो फिर गरीबी, भूख, कुपोषण व अन्य समस्याओं को कभी भी नहीं मिटाया जा सकता।

आत्मा की पुकार- हर समय आत्मा में परमात्मा की प्रेरणा या पुकार उठती रहती है, इसका आदर करें, जिस काम में आत्मा साथ दे उसे जरूर करना, चाहे लाख विपत्तियाँ आये तथा जहाँ आत्मा रोके, वहाँ चाहे दुनियाँ की दौलत मिलें उधर एक कदम भी नहीं बढ़ाना।

कालाधन (ब्लैकमनी के तीन अन्य नाम)

अन-अकाउन्टेड मनी, अन्डर-ग्राउण्ड मनी तथा इल्लीगल मनी व इल्लीगल एसेट्स-ये कालेधन के ही तीन अन्य नाम हैं, अर्थात् पैसा तो है परन्तु पेपर पर उस पैसे का हिसाब नहीं है, क्योंकि पेपर पर आने से सरकारी व्यवस्था को व देश को पता चल जायेगा तथा गलत तरीकों से कमाया ये धन इन बेईमान लोगों के हाथ से निकल जायेगा।

रिश्वतखोरी, घोटाले, अवैध खनन, टैक्स चोरी व अन्य अनैतिक एवं अन्यायपूर्ण तरीकों से अर्जित

धन, हवाला मनी, शैडो इकोनोमी, डर्टी मनी, पैरेलल इकॉनोमी (Parallel Economy) ये सब कालेधन के ही रूप हैं।

राजनैतिक सफलता के तीन सूत्र

1. मजबूत संगठन, 2. मजबूत राजनैतिक तन्त्र, 3. निष्कलंक उम्मीदवारों को जिताने की ताकत।

आन्दोलन के तीन चरण

जन-जागरण, सत्ता परिवर्तन व व्यवस्था परिवर्तन अर्थात् व्यवस्था का चरित्र बदलकर उसे न्यायपूर्ण बनाकर आर्थिक व सामाजिक गैर बराबरी खत्म करना।

भारत को विश्व की महाशक्ति बनाने की तीन योजनाएँ

1. जब 1000 से 1500 लाख करोड़ रुपये का कालाधन देश को मिलेगा तथा गाँव, किसान, मजदूर, कारीगर व आम आदमी की भलाई विकास या खुशहाली के काम में लगेगा, तो भारत दुनियाँ का सबसे ताकतवर मुल्क बनकर उभरेगा।
2. अमेरिका को एक हजार लाख करोड़ रुपये, ब्रिटेन को 500 लाख करोड़ रुपये, जर्मनी व फ्रांस को 250-250 लाख करोड़ रुपये तथा लग्ज़म्बर्ग जैसे यूरोप के छोटे-छोटे देशों को 100-100 लाख करोड़ रुपये का ये कालाधन ही अधिकाँशत: विदेशी कर्ज के रूप में दिया हुआ है, जब लौटाना पड़ेगा तो ये देश **दिवालिया व कर्जदार** होंगे तथा जहाँ से ये कालाधन लूटा गया है- वह भारत, मिडिल-ईस्ट व एशिया दुनियाँ में सबसे धनवान होंगे। वर्ल्ड बैंक, I.M.F., W.T.O., U.N.O., W.H.O. एवं अन्य विश्वस्तरीय संस्थान व संगठन भारत के नियन्त्रण व नेतृत्व में संचालित होंगे।
3. 20 हजार लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की भू-सम्पदाओं की जब लूट बन्द होगी तथा न्यायपूर्ण व्यवस्थाएँ होंगी, तभी जल, जंगल, जमीन व जड़ी-बूटियों व अन्य प्राकृतिक सम्पदाओं, संसाधनों का सही उपयोग व देश की प्रतिभाओं का देश में सम्मान होगा, तो भारत निश्चित रूप से विश्व में महाशक्ति के रूप में उभरेगा।

संगठन के सेवा व आन्दोलन के तीन-तीन आयाम

सेवा– 1. योग सेवा (नियमित योग कक्षा का संचालन), 2. स्वदेशी सेवा, 3. ग्राम सेवा की 11 सूत्रीय योजना का क्रियान्वयन।

आन्दोलन–1. भ्रष्टाचार-मुक्त भारत 2. अन्याय-मुक्त भारत 3. स्वाभिमान युक्त भारत। गोष्ठियाँ, राष्ट्रमंथन, संवाद व सभा आदि का आयोजन तथा **घर-घर जाकर मतदाताओं को प्रशिक्षित करने (टू-रीच-द-वोटर, टू-टीच-द-वोटर) का कार्यक्रम चलाकर पूरे देश को आन्दोलन के साथ खड़ा करना।**

युवाओं के लिए तीन सूत्र

देश, चरित्र एवं आजीविका: कन्ट्री, करेक्टर एवं कैरियर पर युवाओं को सबसे ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

संगठन के तीन राजनैतिक लक्ष्य

राष्ट्रविरोधी व जन विरोधी भ्रष्ट पार्टियों को हराना तथा आन्दोलन के साथ 100% सहमत पार्टियों को जिताना, साथ ही संगठन व आंदोलन से जुड़े नि:स्वार्थ भाव वाले निष्कलंक, कर्मठ, समर्थ व पूर्ण निष्ठावान् लोगों को संसद में भेजकर आंदोलनों के मुद्दों को पूरा करना। जब तक सरकार के **नीति निर्धारण** में हमारा सीधा हस्तक्षेप नहीं होगा, तब तक आंदोलन का पूरा लक्ष्य प्राप्त हो ही नहीं सकता।

जीवन के तीन व्रत

1. नियमित योग करने का व्रत, 2. स्वदेशी पालन का व्रत, 3. नशा व व्यसनमुक्त जीवन जीने का व्रत।

राष्ट्र की तीन मूलभूत शक्तियाँ

ज्ञान-शक्ति, आर्थिक-शक्ति व सैन्य-शक्ति। राष्ट्र की अर्थव्यवस्था सभी व्यवस्थाओं की पोषक होती है। ज्ञान-शक्ति धुरी है, केन्द्र है, मर्म है व बीज है। सैन्य-शक्ति भुजा व कवच है। मजबूत अर्थव्यवस्था मजबूत चरित्र और प्रखर ज्ञान ही मजबूत राष्ट्र का आधार है। कमजोर चरित्र के शासकों ने ही राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को खोखला बना डाला, इसे घुन की तरह खा डाला, इसमें छेद और गुप्त द्वार कर दिए, जहाँ से राष्ट्र का धन निकालकर कालेधन के रूप में विदेशों में ले जाया गया।

आर्थिक व्यवस्था (G.D.P.) के तीन मूल आधार

1. कृषि, 2. उद्योग, 3. सेवा क्षेत्र (एग्रीकल्चर, इंडस्ट्री एवं सर्विसेज़)।

भारतीय अर्थव्यवस्था की तीन बड़ी वास्तविक सच्चाइयाँ

1. भारत कभी भी गरीब नहीं रहा, न है; परन्तु कालाधन, भ्रष्टाचार व अन्यायपूर्ण भ्रष्ट व्यवस्था के कारण अधिकाँश भारतीयों को गरीब बनाया गया है।
2. कालाधन, भ्रष्टाचार व अन्यायपूर्ण भ्रष्ट व्यवस्थाओं के अन्त के बाद भारत का कुल सकल घरेलू उत्पाद (G.D.P.), निर्यात तथा प्रतिव्यक्ति आमदनी कम से कम 10 गुना, बचत (सेविंग) व विकासदर (ग्रोथ-रेट) कम से कम दो गुना, सरकारी बजटीय घाटे (डैफिसिट) के स्थान पर हम सरप्लस में होंगे तथा विश्व अर्थव्यस्था में 1.5% के स्थान पर हमारी 15% से 20% भागीदारी होगी।
3. गोल्ड, शेयर-मार्केट, वायदा बाजार (डिरेवेटिव मार्केट), माइनिंग, लैंड, रीयल स्टेट व इन्फ्रास्ट्रक्चर

से लेकर हैल्थ, एजुकेशन, ड्रग्स एवं पॉलिटिक्स तक अलग-अलग आर्थिक क्षेत्रों में आज भी भारत की लगभग 1 हजार लाख करोड़ रुपये की अर्थव्यवस्था है, परन्तु यह अधिकांशत: अन-अकाउन्टेड है। हम इसे अकाउन्टेबल और पारदर्शी बनायेंगे।

तीन प्रायोजित झूठ

1. **इतिहास के नाम पर झूठ:** भारत के वीरतापूर्ण इतिहास के स्थान पर राष्ट्र में आत्मग्लानि, हीनता, दीनता और कायरता जगाने वाला झूठा इतिहास रचा गया। स्वर्णिम अतीत को अंधकारमय युग बताकर, भारत की ज्ञान शक्ति, आर्थिक शक्ति, सैन्य शक्ति व चक्रवर्ती साम्राज्य आदि के बारे में न बताकर देश में कुण्ठा व कमजोरी पैदा की गई।
2. **आविष्कारों के नाम पर झूठ:** भारतीय ज्ञान व आविष्कारों को छिपाकर केवल पश्चिमी देशों के आविष्कारों को महिमा-मंडित किया गया।
3. **विकास के नाम पर झूठ:** पूरा यूरोप लूट, डकैती व अत्याचार करके केवल पिछले 150 वर्षों में पहली बार ताकतवर बना है तथा विज्ञान व तकनीकी के बल पर विकास करने का झूठा दम्भ दुनियाँ में फैलाया गया।

तीन बड़े षड्यन्त्र

1. **बौद्धिक षड्यन्त्र:** अक्सर मीडिया के माध्यम से यह साज़िश रची जाती है। सत्य एवं ज्ञान को महत्व न देकर अज्ञान, झूठ और चाटुकारिता को पुरस्कृत किया गया, जिससे बौद्धिक जगत में परिश्रम-विमुख व अध्ययन-विमुख लोगों की संख्या बढ़ी है, जिनके लिए ज्ञान पवित्र नहीं है, पद-प्रतिष्ठा ही सर्वोच्च है। इन्हें वर्तमान सत्ताएँ खरीद लेती हैं, क्योंकि उनके पास लूट की अथाह दौलत है और इसके बल पर अनगिनत साजिशें ये क्रूर सत्ताएँ सत्य को दबाने के लिए करती रहती हैं परन्तु सच्चे प्रतिभाशाली बौद्धिक इस जाल में नहीं पड़ सकते, क्योंकि बुद्धि का गुण ही है सत्यनिष्ठा व तत्वनिष्ठा। सच्चे बौद्धिकों से आह्वान है कि वे सत्यनिष्ठा, राष्ट्रनिष्ठा के साथ आगे आयें, साहस करें, सच बोलें व स्वधर्म और राष्ट्रधर्म को निष्पक्ष, निर्भय व निर्लोभ भाव से प्रामाणिकता के साथ निभाएँ।
2. **विदेशी षड्यन्त्र:** विदेशी कंपनियों, विदेशी सरकारों व विदेशी पैसों से संचालित N.G.O., W.S.F. तथा दुनियाँ की अन्य ताकतवर एजेंसियों व गुप्त शक्तियों के द्वारा बहुत ही गंभीर षड्यन्त्र किए जाते हैं।
3. **राजनैतिक षड्यन्त्र:** स्थापित सत्ता के पास अपरिमित शक्ति, साधन, धन दौलत तथा बहुत प्रकार की एजेंसियाँ होती हैं, साथ ही कानून व सत्ता का दुरुपयोग करके वे किसी भी कीमत पर आंदोलनों को झूठा आरोप लगाकर बदनाम करने व दबाने, कुचलने व नष्ट करने पर तुली होती हैं तथा उनके लूट व पाप के विरुद्ध आवाज उठाने वाले व्यक्तियों को डराने, धमकाने यहाँ तक कि उनकी हत्या कराने का घिनौना काम करने से भी नहीं हिचकती, अत: आंदोलन व संगठन से जुड़े वरिष्ठ लोगों को इन सब षड्यन्त्रों से हर समय सावधान रहना चाहिए। सजगता, विवेक, आत्मबल और भगवद्-भक्ति के मौलिक बल से ही हमें इन षड्यन्त्रों का मुकाबला करना है।

भारत का स्वर्णिम अतीत एवं अखण्ड भारत की सीमाएँ

भारत का 1,96,08,53,113 वर्ष पुराना गौरवशाली अतीत है। आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास के हर क्षेत्र में सृष्टि के आदिकाल से पूरे विश्व के लिए भारत का बहुत बड़ा योगदान रहा है। पूर्व में म्यांमार, बर्मा, बांग्लादेश, वियतनाम (चम्पा), थाईलैंड (श्याम देश), कंबोडिया (कम्बुज), लाओस (लवदेश), कोरिया व जापान तक, उत्तर में नेपाल, भूटान व तिब्बत (त्रिविष्टप्), चीन व मंगोलिया तक, पश्चिम में पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान व यूनान (यवन प्रांत) तक तथा दक्षिण में श्रीलंका, मालद्वीप, सुमात्रा, जावा, बाली व इंडोनेशिया तक भारत के शिष्य व मित्र देशों की, चक्रवर्ती साम्राज्य की सीमाएँ थीं। पूरा विश्व भारत के आध्यात्मिक नेतृत्व में चला करता था तथा भारत को अपना आदर्श व गुरु मानता था। हम कालाधन देश को दिलाकर भ्रष्टाचार, शोषण व अन्याय को मिटाकर अपने मित्र देशों के साथ सहयोग व सद्भाव स्थापित करके पुनः अखण्ड भारत का निर्माण करेंगे तथा मित्र व शिष्य देशों से आत्मीय सम्बन्ध दृढ़ करेंगे।

धर्म व कर्म का मर्म

गुरु, शास्त्र, अनुभव, प्रकृति तथा परमेश्वर के द्वारा हो रही अन्तःप्रेरणा– ये ज्ञान के मूल स्रोत हैं। ज्ञान का कभी अनादर नहीं करना चाहिए अर्थात् पाँचों स्रोतों से जो ज्ञान व प्रेरणाएँ मिलती हैं, उसी के अनुसार जीवन जीना ही जीवन व धर्म का मर्म है। ज्ञान ही सुख, शान्ति, समृद्धि व मुक्ति का आधार या साधन है तथा अज्ञान ही रोग, वियोग, नुकसान व अपमान रूप दुःख, अशान्ति, गरीबी व सब प्रकार के बन्धन का कारण है। ज्ञान व भक्ति पूर्वक मन लगाकर काम करने से हमें जीवन की सभी सफलताएँ मिलती हैं एवं दिव्य जीवन की प्राप्ति होती है। कर्म ही धर्म है, कर्म ही पूजा है, **'स्वकर्मणा तमभ्यर्च सिद्धिं विन्दति मानवः'।** कर्म का फल अनन्त गुणा होकर हमें मिलता है। ज्ञान, भक्ति व कर्म की पराकाष्ठा व तद्रूपता ही योग या समाधि है। वेदों के आदेश व पूर्वजों के आदर्शों पर चलना ही हमारे जीवन का ध्येय है।

महामानव – हर एक मानव में महामानव होने की शक्ति है तथा भारत में विश्व की महाशक्ति होने का सामर्थ्य है।

राष्ट्र के ज्वलन्त प्रश्न व मुद्दें

1. **विकास का श्रेय–** देश के विकास का श्रेय तथा आजादी का श्रेय यहाँ के मेहनतकश किसानों, नौजवानों, उद्यमियों, श्रमिकों, कारीगरों, देशभक्त नागरिकों, पेशेवर, प्रतिभावान वैज्ञानिकों व अन्य विशिष्ट लोगों को है। अधिकांश भ्रष्ट सत्ताधीशों ने देश को लूटा है, इसलिए वे देश के विकास का श्रेय नहीं ले सकते, हाँ विनाश की अधिकतम जवाब देही व श्रेय उनकी साम्राज्यवादी विकास के मॉडल जिसमें जल, जंगल, जमीन, भूसम्पदा, संसाधनों व सम्पत्ति पर कुछ ताकतवर लोगों को एकाधिकार कायम हो गया है। गलत आर्थिक नीतियों, भ्रष्टाचार, निरंकुश अपारदर्शी शासन के कारण भ्रष्ट, लुटेरे एवं आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को दण्ड न मिलने तथा सज्जन शक्ति या ईमानदार पुरुषार्थी सत्यनिष्ट व राष्ट्रनिष्ठ लोगों का संरक्षण, सम्मान व प्रोत्साहन न मिलने के कारण **बुराई व बुरे लोगों को प्रतिष्ठा, प्रोत्साहन व संरक्षण मिलता गया, इससे देश बर्बाद हुआ है।**
2. **बगावत–** स्थापित भ्रष्ट पार्टियों के खिलाफ पूरे देश में गुस्सा, घृणा या बगावत का भाव है, वक्त आने पर तख्त पर बैठे लोगों को जनता सबक सिखायेगी।
3. **सवा-सौ बनाम सवा-सौ करोड़–** लगभग सवासौ भ्रष्ट लोगों व उनके द्वारा संरक्षित लोगों ने सवासौ करोड़ देशवासियों या आम जनता का हक छीन लिया है, उनकी खुशियों को रौंदकर या कुचलकर रख दिया है। हम सबको मिलकर अपना ये मौलिक व संवैधानिक हक लेना है, हम भ्रष्ट लोगों से कोई भीख नहीं माँग रहे हैं।
4. **99 का चक्रव्यूह–** 99% लोग शोषित वर्ग में आते हैं, 1% लोगों का जल, जंगल, जमीन, भू-सम्पदा एवं संसाधनों के साथ-साथ सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर एकाधिकार है।
   99% लोग अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने का साहस नहीं कर पाते। 1% लोग जो इस स्थापित अन्यायपूर्ण भ्रष्ट व्यवस्था को बदलने के लिए संघर्ष करते हैं उन्हें अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर एक लम्बी लड़ाई लड़नी पड़ती है। 99% लोगों को तो रोजी-रोटी व रोजमर्रा के काम में बुरी तरह से उलझाया हुआ है, फिर भी आम लोग किसी भी क्रान्ति के एक बड़े मुकाम पर पहुंचने के बाद में आंदोलन के 80% समर्थक 10% विरोधी व 10% लोग नेतृत्व की भूमिका में खड़े हो जाते हैं। 99% लोग नकरात्मक सोच के कारण किसी बड़े बदलाव के बारे में विश्वास ही नहीं कर पाते। 99% लोग इतिहास पढ़ने में विश्वास रखते हैं, 1% लोग ही कुछ ऐसा कर पाते हैं जो इतिहास बनता है। 99% लोगों की अन्तः शक्ति, ज्ञान, प्रतिभाव सामर्थ्य प्रायः सुप्त होता है, परिणामतः ये निम्न चेतना में ही अधिकांशतः जीते रहते हैं। 99% लोग अपनी अन्तः प्रेरणा को नहीं सुन पाते, इसी के कारण जगत में अधर्म व अंधेरा अधिक है। 99% लोग योग न करने के कारण तन या मन की व्याधियों के चक्रव्यूह में फंस जाते हैं।
5. **भावनाओं से खिलवाड़–** विज्ञापन, टी.वी. सीरियल्स, नेताओं के भाषण या फिर पार्टियों के घोषणा-पत्र सब खुशहाली के सपने दिखाते हैं, कृत्रिम भूख पैदा करते हैं (उपभोक्तावाद) और भावनाओं से खिलवाड़ करते हैं, अपने चक्रव्यूह में फँसाते हैं व अन्ततः आम लोगों को धोखा मिलता है।
6. **अविश्वास-कुछ नहीं हो सकता–** राजसत्ता, धर्मसत्ता या समाज के तथाकथित बड़े लोगों ने समाज

के साथ इतनी बार छल, धोखा या विश्वासघात किया है, कि लोगों में घोर निराशा व अविश्वास है। आम आदमी को लगता है, कि वह अकेला कुछ नहीं कर सकता, इन स्थापित ताकतवर लोगों को उखाड़ फेंकना बड़ा कठिन है। जबकि हकीकत यह है कि हम अकेले कभी नहीं होते हैं, जब हम आगे बढ़ते हैं तो समाज व सृष्टि की सभी सात्त्विक शक्तियाँ हमारे साथ खड़ी हो जाती हैं। स्थापित भ्रष्टतन्त्र चाहे कितना ही ताकतवर हो, परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत विधान है, सृष्टि के लगभग दो सौ करोड़ वर्षों से लेकर पिछले दो वर्षों के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक बड़े परिवर्तन इस बात के पुख्ता प्रमाण हैं।

7. **पार्टियों का नेतृत्व खुद में झाँके–** आज महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, पक्षपात, आर्थिक व सामाजिक गैर-बराबरी के कारण जो पीड़ा इस देश का आम आदमी, पिछड़ा, अति पिछड़ा, दलित, बाल्मीकि, आदिवासी, अल्पसंख्यक तथा सवर्णो में भी बहुत से असमर्थ लोग झेल रहे हैं- वही पीड़ा, गरीबी, भूख, अन्याय व अपमान इन भ्रष्ट पार्टियों के नेतृत्वों को या उनके बच्चों को झेलनी पड़ती, तो क्या वे इस व्यवस्था को ठीक करने के बारे में नहीं सोचते? देश व आम आदमी के बारे में भी नेताओं को प्रजा के बारे में स्वजनों की तरह सोचना चाहिए। यह तभी होगा जब राजनीति में, श्रेष्ठ लोग आगे आयेंगे। खान-पान, आहार-व्यवहार एवं सम्बन्धों में सब को शुद्धता, प्रामाणिकता चाहिए, अपने इलाज कराने व सम्बन्धों में भी हम श्रेष्ठष्तम इंसान को चुनते हैं तो फिर राजनीति में क्यों नहीं?
8. **लूट व तबाही के आंकड़े–** कालाधन (घोटाला, घाटा एवं दलाली), भ्रष्टाचार, जल, जंगल, जमीन, भूसम्पदा, राष्ट्रीय संसाधनों एवं सम्पत्ति की लूट के साथ-साथ, गोहत्या, भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, किसानों की आत्महत्या, वनवासियों की तबाही व अन्य व्यवस्थागत आर्थिक राजनैतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक पाप इन पार्टियों ने किए हैं, **इसका पूरा विवरण व अपडेट्स के लिये भारत स्वाभिमान की वेबसाइट पर अवश्य देंखे तथा दूसरों को भी देखने के लिए प्रेरित करें।**
9. **अच्छे लोग मिलकर काम क्यों नहीं कर लेते–** ऊपर-ऊपर से धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक शीर्ष लोग व संगठन सच्चाई, ईमानदारी, देश व देशवासियों की और खास करके आम आदमी की भलाई व खुशहाली की बात करते हैं परन्तु अक्सर सभी संगठन, आन्दोलन व पार्टियाँ आदि एक गुप्त एजेन्डा व गुप्त या परोक्ष शक्तियाँ खास करके बैंक, बैंकर्स या मेगा केप्टिललिस्ट या अन्य रहस्यमयी शक्तियों के सहयोग या इशारों पर काम करते हैं। पूरी दुनियाँ लैफ्टिस्ट, राइटिस्ट, साम्राज्यवाद, साम्यवाद व समाजवाद, वर्गीय भारतीयता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, अवसरवाद, दलितवाद, सवर्णवाद, मजहबवाद, जातिवाद व प्रान्तवाद आदि जटिल विचारधाराओं एवं जटिल सिद्धान्तों में बटी हैं। देश का अधिकतर शीर्ष नेतृत्व भी हॉवर्ड, ऑक्सफोर्ड व कैम्ब्रीज आदि विदेशी संस्थानों में तैयार हो रहा है, जो विदेशी शिक्षा व संस्कारों की अपसंस्कृति का प्रबल पोषक बनता जा रहा है, जबकि प्राचीन भारत के शासक गुरुकुलों में ऋषि सत्ता के द्वारा तैयार किये जाते थे, अतः संगठित होकर काम करने में बड़े संगठनों व व्यक्तियों के लिए बहुत बड़ी चुनौती व समस्या है। 99% आम आदमी इन जटिलवादों को समझ नहीं पाते, वे तो बस अपने लिए समाज एवं देश के लिए न्याय व हक चाहते हैं। हमने अपनी विकेन्द्रित विकासवाद व आध्यात्मिक समतावाद की एकदम सीधीसादी सरल सहज सर्वोदय की विचारधारा व सिद्धान्त को संक्षेप में आपके सामने रख दिया है। इसके अलावा हमारा कोई गुप्त एजेण्डा नहीं हैं तथा किसी भी देशी, विदेशी रहस्यमयी शक्तियों या एंजेंसियों से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है।

आखिरी दम तक हमारा पूरी ईमानदारी से यह प्रयास रहेगा कि देश की सात्त्विक सज्जन शक्तियाँ या संगठन अपने-अपने फिक्स या हिडन एजेण्डा व अहंकार आदि छोड़कर निःस्वार्थ व निष्कामभाव से देश के लिए मिलकर काम करें। भगवान् से भी यही प्रार्थना करते हैं कि भगवान सभी शीर्ष संगठनों के नेतृत्त्व को ऐसा प्रबल विवेक दें कि सब ***संगच्छध्वम् संवदध्वम्*** के वेद के शाश्वत सन्देश का पालन करके देश को बचाएँ।

10. **मतदाता जागरण अभियान क्यों जरूरी है?–** आज देश में औसत मतदान 50% से 60% ही हो रहा है। इसमें छोटी-बड़ी राजनैतिक पार्टियों व निर्दलीय उम्मीदवारों में वोट बंटते या पड़ते हैं। जिसको भी 10%-20% वोट पड़ जाते हैं वो जीत जाता है, अतः टारगेट करके जो कभी भी मतदान नहीं करते उनको हमें ढूँढ़ के बाहर निकलना है। ये नये मतदाता तथा देश भक्त लोग, असमर्थ वंचित लोग, पिछड़े अति पिछड़े मंहगाई, बेराजगारी, गरीबी की मार झेल रहे लोग हमारे साथ बेस वोट के रूप में जुड़ेंगे साथ ही योग, आयुर्वेद व स्वदेशी आदि की सेवाओं से लाभान्वित 11 करोड़ से ज्यादा शिविरों तथा टी.वी. आदि कार्यक्रमों से लाभान्वित प्रभावित एवं प्रकाशित लोग हमारी ताकत बनेंगे। घर-घर जाकर हमें अपने सभी मुद्दों व एजेण्डा की बात रखनी है और उन्हें अपने साथ गंभीरता व निरन्तता के साथ जोड़ना है।
11. **पैसा-प्रतिष्ठा–** इन दोनों के खोने का भय जिस दिन खत्म हो जाता है, हम देश व दुनियाँ में कुछ भी कर सकते हैं, क्योंकि इसके सिवा खोने को कुछ होता ही नहीं है। दो वक्त की रोटी, दो कपड़े व दो गज जमीन जीने के लिए, थोड़ी भी मेहनत करने वाले को मिल ही जाती हैं।
    इससे ज्यादा जो कुछ भी होता है वह बचत (सरप्लस सेविंग) होता है जो अपने नहीं किसी और के ही काम आता है।
12. **उचित अनुचित–** धर्मपूर्वक, विद्यायुक्त, वेदानुकूल अथवा आत्मानुकूल काम, क्रोध, लोभ, मोह, विरोध, हस्तक्षेप, संघर्ष, संग्रह, पैसा, प्रतिष्ठा एवं देश, धर्म व संस्कृति आदि की रक्षा हेतु युद्ध व हिंसा की नीति युक्त व्यवहार उचित व शुभ होता है।
13. **आन्दोलन–** पिछले दो हजार वर्षों के बीच सुधार के जो भी आन्दोलन चले, उन सबने जीवन का एक ही पक्ष लिया, दूसरे की उपेक्षा कर दी। इसके लिए उनकी योजनाएँ क्रान्तिकारी होते हुए भी आन्दोलन से सफलता न प्राप्त कर सकीं। (श्री जय प्रकाश नारायण जी)

    नोट– *भारत स्वाभिमान सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से आन्दोलन के सभी पक्षों को एक साथ लेकर कार्य कर रहा है अतः व्यक्ति व व्यवस्था में मनः स्थिति व परिस्थिति, समाज तथा सरकार, व्यष्टि व समष्टि में समग्र परिवर्तन अवश्य आयेगा।*
14. **स्वदेशी अर्थव्यवस्था–** भारत की व्यापक गरीबी का बहुत बड़ा कारण आर्थिक क्षेत्र से स्वदेशी की भावना का तिरोभाव भी है। यदि विदेशी वस्तुओं का आयात इस देश में न होता, तो यहाँ दूध-दही की नदियाँ आज बहती होती। (महात्मा गाँधी)
15. **अतीत से प्रेरणा–** कोई भी विचारधारा या व्यवस्था तब तक सफल नहीं हो सकती या राज्य-पद्धति के स्वस्थ विकास में सहायक नहीं हो सकती, जब तक कि उसकी भित्ति देशविशेष की परिस्थितियों, परम्पराओं, संस्कृति, सभ्यता और मान्यताओं पर खड़ी न हो। (श्री जय प्रकाश नारायण जी)
16. **भारत का शहरीकरण-उचित नहीं–** पाश्चात्य सभ्यता नगराधारित है। ब्रिटेन अथवा इटली जैसे

छोटे देश अपनी पद्धति नगराधारित कर सकते हैं। अमेरिका जैसे अल्प जनसंख्यावाले बड़े देश भी कदाचित् इस पद्धति का अवलम्बन कर सकें, किन्तु जनसंख्याबहुल और आज भी उपयोगी प्राचीन ग्राम-परम्पराओं से युक्त किसी बड़े देश (भारत) को पश्चिम के इस आदर्श का किसी भी हालत में अनुकरण नहीं करना चाहिए। (महात्मा गाँधी)

17. **ग्राम समितियों की शाश्वत परम्परा–** संसार के किसी भी देश में भारत जितनी धार्मिक और राजनीतिक क्रान्तियाँ नहीं हुई हैं, फिर भी ग्राम-समितियों के कार्यों पर कोई आँच नहीं आयी। वे समग्र देश में सदा की भाँति एकरस स्थानीय हित के कार्यों में लगी रहीं। सीथियाई, यूनानी, सरासीन, अफगान, और मंगोल अपने पार्वत्य निवासों से निकलकर बाहर आये तथा पुर्तगाली, डच, अंग्रेज, फ्रांसीसी और डेन समुद्र मार्ग से आकर भारत में जमे और शासक बने, किन्तु गाँवों के धार्मिक-व्यापारिक संघटनों का काम यथापूर्व चलता रहा। जैसे ज्वारभाटे का कोई प्रभाव चट्टान पर नहीं पड़ता, वैसे ही इन संघटनों पर आक्रामकों के आगमन-निर्गमन का कोई प्रभाव न पड़ा। (सर जॉर्ज बर्डउड)

18. **ब्लैकमनी का खतरनाक दुरुपयोग–** आतंकवादी व नक्सलवादी इसी कालेधन से पनपते हैं तथा हमारे सीने में लगने वाली गोली इसी कालेधन से खरीदी जाती हैं। कालेधन से भ्रष्ट नेता वोट खरीदते हैं, चुनाव में शराब से लेकर अन्य कालेधन्धों में इसका दुरुपयोग करते हैं। गोल्ड, लैण्ड तथा ड्रग्स आदि के कारोबार में कालाधन ही लगता है, इससे एक तो जमीन आम आदमी के पहुँच से बाहर हो जाती है तथा अवैध ड्रग्स के धन्धे से युवाधन बर्बाद होता है। गोल्ड आदि में पैसा लगता है तो यह अनुत्पादक होता है शेयर मार्केट या स्टोक मार्केट का कन्ट्रोल देश के दुश्मन आतंकवादी व भ्रष्ट लोगों के हाथों में चला जाता है, जो बहुत खतरनाक हो सकता है। इस मुद्दें पर अधिक जानकरी के लिए **'कालेधन का पूरा सच'** हमारी वेबसाइट पर अवश्य पढ़ें।

19. **कलियुगी महारावण–** आज के भ्रष्टलोग तो रावण, कंस व अंग्रेजों से भी बुरे हैं। वे लूट का सामान अपने देश में तो रखते थे, ये तो देश को लूटकर धन विदेशों में जमाकर रखते हैं।

20. **करप्ट सिस्टम का बड़ा नुकसान–** देश के खराब सिस्टम की वजह से करीब 5 करोड़ प्रतिभावान लोग बाहर चले गये तथा 5 करोड़ बांग्लादेश व पाकिस्तान आदि से अवैध रूप से घुसकर देश के लिये खतरा बन गये।

21. **घर-घर संदेश पहुँचाना–** गाँव एवं शहर के कार्यकर्त्ताओं को घर-घर जाकर संकल्प-पत्र के अनुसार यह बताना है कि महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी व गैर बराबरी से मुक्त आदर्श राष्ट्र हमें कैसे बनाना है।

22. **गाँव वालों की बड़ी भूमिका :** जब भी कोई आन्दोलन सत्ता के पाप व अन्याय के खिलाफ खड़ा होता है, तो सत्ता शक्ति से आन्दोलन व आन्दोलन से जुड़े लोगों का दमन करती है, जिससे आन्दोलन टूट जाये या समाप्त हो जाये और वे (सत्ताधारी) क्रूर शासक, निरंकुशता पूर्वक शासन करते रहें और कोई व्यक्ति सत्ता के अन्याय व पाप के खिलाफ आवाज न उठा सके।

    जब कोई दुकानदार आन्दोलन में सहयोग करता है, तो गुंडागर्दी करके दुकान बन्द करवाने का प्रयास करते हैं। कोई सरकारी नौकरी वाले भाई-बहन आन्दोलन में सहयोग करते हैं तो उनका अक्सर तबादला या बर्खास्त करने की धौंस देते हैं। कोई उद्यमी (फैक्ट्री मालिक आदि) सहयोग करता है,

तो उसकी फैक्ट्री या अन्य व्यसायिक प्रतिष्ठानों पर ताला लगवाने की धमकी देते हैं, परन्तु अब असत्य और सत्य, वजीर और फकीर के बीच जो संघर्ष/आन्दोलन चल रहा है, इसमें अब गाँव वालों को और अधिक संगठित होकर जुड़ना है क्योंकि गाँव वालों को न तो ये भ्रष्ट सत्ता दबा सकती है, न ही सता सकती है, बल्कि उल्टे सत्ता में बैठे हुये लोग सत्ता में बने रहने के लिये गाँवों पर निर्भर हैं। अब हम सब ग्रामवासियों को इन भ्रष्ट शक्तियों का मुँहतोड़ जबाव देकर इनको सत्ताओं से बेदखल करके सत्य को सत्ता में स्थापित करना है।

23. **कसाब का हिसाब :** मुम्बई में 162 निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतारने वाले आतंकवादी के ऊपर 50 करोड़ रुपये से ज्यादा सरकारी खर्च करके उसको गुपचुप तरीके से फाँसी देकर शहीद या हीरो बनाने की नाकाम कोशिश केन्द्र सरकार ने की है।

ऐसे आतंकवादी को जिसने भारत को खुली चुनौती दी तथा निर्दोष लोगों की हत्या की, उसको तो खुलेआम फाँसी देनी चाहिये थी ताकि भारत की तरफ कोई आतंकवादी आँख उठाने की कोशिश न करता और जो उसके समर्थन में आते या हिंसा फैलाते तो इस देश की जनता कसाब के साथ उन देशद्रोहियों का भी हिसाब कर देती।

24. **भ्रष्ट नेताओं का क्या होगा? :** आन्दोलन का कार्य पूरा होने पर अधिकाँश पार्टियों के भ्रष्ट शीर्ष नेता जेल में होंगे, देश के लोग इनसे घृणा करने लगेंगे और भ्रष्ट नेता व अन्य भ्रष्ट लोगों को देश की लूटी हुई दौलत वापस देनी पड़ेगी।

25. **अगला भारत का प्रधानमंत्री कौन? :** गौ रक्षक, धर्म रक्षक, राष्ट्र रक्षक, किसानों का रक्षक एवं स्वदेशी वस्तु, विचार, सभ्यता और संस्कृति का पोषक, साथ ही भारत स्वाभिमान आन्दोलन के तीन प्रमुख मुद्दे कालाधन, भ्रष्टाचार व व्यवस्था परिवर्तन पर जो प्रामाणिकता से कार्य करने के लिये सहमत होगा वही साहसी, चरित्रवान, देशभक्त, व्यक्ति इस देश का अगला प्रधानमंत्री बनेगा।

26. **मंदिरों के अधिग्रहण एवं ट्रस्टों पर टैक्स :** वर्तमान केन्द्र सरकार भारतीय आस्था के केन्द्र हिन्दू मंदिरों का अधिग्रहण कर मंदिरों के दान के पैसे को गलत कार्यों में इस्तेमाल करके, यहाँ तक कि कत्लखाने तक खोलकर लोगों की धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रही है। मंदिरों का पैसा केवल धार्मिक कार्यों व पूर्ण रूप से सात्विक सेवा में ही खर्च होना चाहिये। लोगों के सहयोग से जो सेवा का कार्य ट्रस्टों के द्वारा किया जा रहा है, सरकार उस दान को ट्रस्टों की इनकम मानकर उस पर टैक्स लगा रही है। इस कुकृत्य से सिद्ध होता है कि- वर्तमान केन्द्र सरकार पूरी तरीके से अधर्म में डूबी हुयी है और अंग्रेजी हुकूमत से भी ज्यादा जुल्म ज्यादती कर रही है। यह सरकार धर्म विरोधी, जन विरोधी एवं राष्ट्र विरोधी है।

27. **संन्यासी का हस्तक्षेप :** लोग कहते हैं कि संन्यासी को राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। हमारा सीधा प्रश्न है कि कब संन्यासियों ने पाप, अधर्म, भ्रष्टाचार व अन्याय के खिलाफ विरोध या हस्तक्षेप नहीं किया? मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम से लेकर योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण व आचार्य चाणक्य तक सभी ने सत्ता में सत्य का साम्राज्य स्थापित करने के लिये सीधे तौर पर हस्तक्षेप किया। यहाँ

तक की वर्तमान युग में ऋषि दयानन्द, महायोगी श्री अरविन्द व स्वामी विवेकानन्द ने भी देश के युवाओं में स्वराज्य की भावना को जाग्रत कर व अनीति के खिलाफ संघर्ष का आह्वान किया। जो भ्रष्ट, अन्यायपूर्ण व निरंकुश सत्ता व्यवस्था को बदलने के लिये हस्तक्षेप नहीं कर रहा है वह एक आदर्श नहीं हो सकता। देश, धर्म, संस्कृति के लिये हस्तक्षेप करना ही एक संन्यास की आदर्श परम्परा रही है।

28. **संन्यासी की करुणा :** एक आम इन्सान जो काम अपने बच्चों के लिए नहीं कर सकता वह काम परम पूज्य स्वामी जी हिन्दुस्तान के सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानियों के लिए कर रहे हैं। एक आम आदमी अपना पेट काटकर अपने बच्चों के लिए अच्छे भोजन की व्यवस्था करता है, खुद फटे वस्त्र पहनकर अपने बच्चों को वस्त्र पहनाता है, कर्ज़ लेकर भी अपने बच्चों को पढ़ाता है। यह सब करके भी हम अपने परिवार के कुछ चन्द लोगों को ही खुशियाँ दे सकते हैं। परम पूज्य स्वामी जी के द्वारा किया जा रहा यह कार्य सवा सौ करोड़ बच्चों व आम हिन्दुस्तानियों के लिए खुशियाँ लायेगा तो फिर हमें क्या एक फकीर का साथ नहीं देना चाहिये?

29. **दुर्भाग्य :** एक महिला जो अपने देश में वार्ड मेम्बर का भी चुनाव नहीं जीत सकती है, वह छल, धूर्तता व कुछ लोभी, देशद्रोही लोगों के सहयोग से पूरे देश की सत्ता पर काबिज है। क्या वीर प्रसूता भारत माता की कोख बांझ हो गयी है जो एक ऐसा बेटा या बेटी नहीं दे सकती जो देश को चला सके?

30. **वंचितों को उनका हक कैसे व कहाँ से मिलेगा :** एक प्रश्न सबके मन में पैदा होता है आखिर शोषितों, वंचितों, पिछड़ों, अति पिछड़ों व अत्यन्त गरीब असमर्थ भूमिहीन- चाहे वे किसी भी जाति या वर्ग के हैं, सवर्णों, दलितों, अल्पसंख्यकों या बनवासी आदि में जो भी असमर्थ हैं उन सबके जीवन में खुशहाली, उनको शिक्षा, सम्मान व स्वाभिमान के साथ जीने का हक कैसे मिलेगा तथा सभी क्षेत्रों, सभी व्यवस्थाओं में उनका प्रतिनिधित्व (रिप्रजेन्टेशन) कैसा होगा तो बहुत विचार विमर्श व चिन्तन करके हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे है कि पाँच उपाय हैं वंचितों को निष्पक्ष रूप से आर्थिक व सामाजिक न्याय दिलाने के लिए। इसके अलावा यदि कोई अन्य बात करता है तो वह इन बेबस लाचार लोगों के लिए धोखा है। जायज सम्पत्ति के दो ही मूल स्रोत हैं एक परम्परागत विरासत में माता-पिता आदि से मिलने वाली सम्पत्ति दूसरी खेती, व्यापार व नौकरी आदि सेवाओं एवं मेहनत मजदूरी आदि करके मिलने वाला धन वंचित व शोषित समाज के साथ इन दोनों ही सन्दर्भों में न्याय नहीं हो रहा है। स्थापित लोगों ने पहले तो उनको विरासत गत सम्पत्ति में सदियों पहले न्याय नहीं होने दिया क्योंकि जो ताकतवर थे उन्होंने ही जमीनादि पर एकाधिकार स्थापित कर लिया तथा अब भी स्थापित ताकतवर लोग उनको उनकी मेहनत आदि का न्यायोचित हक नहीं दे रहे हैं।

क) भूमिहीनों के लिए भूमि- 33 लाख वर्ग किलोमीटर का हमारा भारत देश है जिसमें लगभग 50 करोड़ एकड़ भूमि पर खेती की जा सकती है। इसमें सरकारी भूमि अभी अधिकतर या तो भू-माफियाओं के कब्जे में है या फिर अनुत्पादक रूप से बंजर या बेकार पड़ी हुई है। इसमें से जो भी भूमिहीन, असमर्थ परिवार चाहे किसी भी वर्ग के हैं, उनको एक से दो एकड़

भूमि दी जा सकती है।

ख) भूमि के साथ-साथ हमारे देश में 20 हजार प्रकार की भूसम्पदाएं हैं, इनमें से 90 प्रकार की भूसम्पदाओं का व्यवसायिक रूप से दोहन हो रहा है। इन 90 में से भी लगभग 10 भूखनिजों या मिनरल्स की ही कीमत लगभग 20 हजार लाख करोड़ रुपये की है। यदि इसका न्यायपूर्ण तरीके से दोहन किया जाए अर्थात् कोयला, लोहा व तेल घोटालों की तरह कोई घोटाला ना हो तो केवल वंचितों को ही नहीं देश के प्रत्येक परिवार को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से 10 करोड़ का आर्थिक लाभ मिलेगा। क्योंकि भू-सम्पदाओं पर देश के सवा सौ करोड़ लोगों का समान अधिकार है।

ग) अब तक देश-विदेश में जो लगभग 1 हजार लाख करोड़ रुपये का कालाधन है वह जब खेती, उद्योग धन्धों व अलग-अलग विकास के क्षेत्रों में लगेगा तो इससे सबके जीवन में खुशहाली आयेगी और कोई गरीब नहीं रहेगा। कालेधन में से जो पूर्णत: बेघर व निर्धन लोग हैं उन्हें कुछ धन भी सीधा दिया जा सकता है या उनके नाम फिक्स डिपॉजिट आदि किया जा सकता है।

घ) सभी वंचितों, पिछड़ों व अति पिछड़ों व सामान्य लोगों के लिए अर्थात् सबके लिए नि:शुल्क समान शिक्षा व समान चिकित्सा की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कि साधारण घरों में पैदा हुए बच्चों को भी आगे बढ़ने के समान अवसर मिल सकें। शिक्षा व चिकित्सा में पक्षपात पूरी तरह खत्म होना चाहिए।

ङ) श्रम मूल्यांकन में पक्षपात व अन्यायपूर्ण सामन्तीवादी व्यवस्था पूरी तरह खत्म होनी चाहिए तथा कुशल मजदूर कारीगर व किसानों को भी कुशल श्रमिक का दर्जा मिलना चाहिए। इनको अकुशल बताकर ही अब तक इनका शोषण होता रहा है। न तो मजदूर को उसकी मेहनत का पूरा दाम मिला न ही किसान को उसकी फसल का लाभकारी मूल्य, लाभकारी मूल्य की बात तो दूर की है लागत मूल्य भी नहीं मिला। इसी कारण इस देश का किसान, मजदूर, कारीगर व आम आदमी गरीब है। गरीब व अमीर में बड़ा फासला होने का यह सबसे बड़ा कारण है।

31. **गरीब-अमीर दोनों दु:खी-** वर्तमान अन्यायपूर्ण भ्रष्ट व्यवस्था से सभी दु:खी, परेशान व हताश हैं। सबके मन में इस भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति गहरा विद्रोह या बगावत का भाव है। पहले तो जो समर्थ हैं उनको कार्य करने के लिए प्रोत्साहन देना तो बहुत दूर की बात है, रतन टाटा जैसे बड़े लोग भी यह कहते हैं कि 5-7 साल तक एक स्टील प्लान्ट लगाने के लिए पी.एम.ओ. व अन्य मन्त्रालयों के चक्कर काटने पड़ते हैं।

उद्योग धन्धे या कोई भी व्यापार चालू होने के बाद वहां रिश्वत का व तंग करने का दूसरा दौर शुरु हो जाता है। कोई भी सरकारी कर्मचारी या अधिकारी आकर छोटे से लेकर बड़े आदमी की इज्जत को तार-तार कर देता है। डराना, धमकाना, परेशान करना इस हद तक शुरू कर देता है कि एक साधारण से बिजनेस मैन से लेकर बड़े व्यापारी तक सबको तनाव, बी.पी., शुगर, व हार्टअटैक जैसी बीमारियां हो जाती है, नींद उड़ जाती है। मजदूरों को पूरी मजदूरी नहीं मिलती, किसानों को उनकी पैदावर की लाभकारी कीमत नहीं मिलती, बच्चों को न तो समान शिक्षा का अधिकार है न ही जवानों को रोजगार, पूरे देश में एक गहरा असन्तोष है।

जब अमीर ही सुखी नहीं तो गरीबों के सुखी होने का तो प्रश्न ही नहीं हो सकता। अब तो इस पूरी भ्रष्ट व्यवस्था को बदलना ही पड़ेगा।

32. **स्थापित को कैसे उखाड़ें:-** स्थापित व्यवस्था, तंत्र, पार्टी, नेताओं व व्यक्तियों से लेकर अंग्रेजी भाषा आदि को उखाड़ फेंकना कठिन तो है लेकिन नामुमकिन नहीं। एक मजबूत रणनीति के तहत तात्कालिक, मध्यकालिक, व दीर्घकालिक योजना बनाकर हमें निरन्तर प्रमाणिकता के साथ संघर्ष व काम करना पड़ेगा तो निश्चित रूप से सब कुछ बदलेगा।

33. **कितने गद्दाफी:-** लीबिया के एक गद्दाफी के 45 साल के लूट के किस्से पूरी दुनियां के करोड़ों लोगों की जुबान पर हैं। लेकिन जब तक वो सत्ता में था तब तक अमेरिका के राष्ट्रपति से लेकर पूरी दुनियां में उसकी तूती बोलती थी। 4-5 लाख करोड़ की जी.डी.पी. वाले लीबिया के राष्ट्रपति गद्दाफी की अब तक 10 लाख करोड़ से ज्यादा की काली संपत्ति व कालेधन का पता चल चुका है, 1400 क्विंटल सोना और न जाने क्या-क्या पाप उसने किये। इसी तरह से भारत के भी कुछ बेईमान लोगों का जब तक सत्ता से पत्ता साफ नहीं होगा तब तक इनके पापों व लूट का पूरा पता नहीं लगेगा और देश को इंसाफ नहीं मिलेगा।

सभी राजनैतिक पार्टियों के प्रत्याशियों को एक शपथ-पत्र देश को देना चाहिए

क. मैं राजनैतिक जीवन में चारित्रिक, आर्थिक व आपराधिक दोषों से सदा मुक्त रहूँगा।

ख. मेरा देश-विदेश में कहीं भी अवैध धन अर्थात् कालाधन तथा अवैध सम्पत्ति (काली सम्पत्ति) नहीं है। मेरे द्वारा घोषित सम्पत्ति के अलावा यदि कहीं भी मेरा कालाधन या काली कमाई मिले तो उसे तुरन्त जब्त करके राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित कर दिया जायें। मेरी व मेरे परिवार की सम्पूर्ण सम्पत्तियों का निष्पक्ष ब्योरा मैं नियमित रूप से इन्टरनेट पर उपलब्ध करवाऊँगा।

ग. मैं कालाधन, भ्रष्टाचार व व्यवस्था परिवर्तन के सभी मुद्दों पर पूर्ण रूप से पूरी प्रामाणिकता व ईमानदारी से कार्य करके आर्थिक व सामाजिक गैर-बराबरी दूर करने के लिए प्रतिबद्ध संकल्पित रहूँगा।

आदर्श ग्राम निर्माण का ग्यारह सूत्रीय कार्यक्रम

1. नियमित योगाभ्यास से स्वस्थ गाँव, 2. रोग व नशा मुक्त गाँव, 3. ग्राम-स्वच्छता, 4. सदस्यता अभियान से संगठित गाँव, 5. स्वदेशी से स्वावलंबी गाँव, 6. जड़ी-बूटी उद्यान, 7. वृक्षारोपण, 8. शिक्षा में गुणात्मक सुधार, 9. जल प्रबन्धन, 10. ग्राम-संसद, 11. विषमुक्त-कृषि।

सरकार की कुटिल नीतियों, भ्रष्ट व्यवस्थाओं, भ्रष्टाचार, पक्षपात पूर्ण व्यवहार व कालेधन की अर्थ व्यवस्था की सर्वाधिक मार पड़ी है हमारे गाँवों पर। गाँवों का सर्वांगीण विकास न होने से गरीबी, अशिक्षा व पलायन आदि अन्तहीन समस्याएँ खड़ी हुई हैं। भारत का जन्म ही गाँवों से हुआ है। आज दुर्भाग्य से भारत के आन्तरिक रूप से भी दो विभाजन हो गए हैं। एक शाइनिंग इंडिया व दूसरा दरिद्र भारत। ग्राम स्वराज के बिना राष्ट्र में सच्चा स्वराज्य कहां से आयेगा, ग्रामोदय से ही राष्ट्रोदय अथवा ग्राम निर्माण से ही राष्ट्र निर्माण संभव है। महात्मा गाँधी जी से लेकर तिलक, गोखले, शहीदे आजम भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद व पं. रामप्रसाद बिस्मिल आदि सभी क्रान्तिवीरों का यह दृढ़ विश्वास था कि जब तक भारत के लाखों गाँव स्वतन्त्र, शक्तिशाली एवं स्वावलम्बी नहीं बन जाते तब तक भारत की आजादी आधी अधूरी है व भारत का भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता तथा स्वदेशी के रास्ते पर चलकर ही देश को पूर्ण स्वावलम्बी व सर्वविध शक्तिशाली बनाया जा सकता है। इस वर्ष अप्रैल से जून माह में गाँवों में प्राथमिक स्तर पर तथा वर्ष के अन्त तक प्रत्येक गाँव को आदर्श स्वरूप में खड़ा करने का हमारा संकल्प है। आदर्श ग्राम निर्माण योजना की संक्षिप्त रूप रेखा इस प्रकार है।

1. **नियमित योगाभ्यास से स्वस्थ गाँव–** गाँव में भारत स्वाभिमान की ग्राम इकाई का गठन करके वहाँ मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर, गुरुद्वारा, स्कूल, कालेज, धार्मशाला, पंचायत भवन, ग्राम देवता देवस्थान, गाँव के तालाब के किनारे व जहां भी उपयुक्त स्थान मिले वहां नित्य प्रति योग, प्राणायाम की कक्षा के साथ-साथ सत्संग, स्वाध्याय, संस्कार आत्म निर्माण व राष्ट्र निर्माण का चिन्तन हो। योग से स्वस्थ व संस्कारवान गाँव का निर्माण हो।

2. **रोग व नशा मुक्त गाँव–** नियमित योगाभ्यास से एक ओर जहां लोगों के रोग दूर होंगे वहीं दूसरी ओर लोगों के तन, मन व आत्मा पावन होंगे और वे नशा व अन्य आन्तरिक दुर्बलताओं से मुक्त होकर एक सुखी, शान्त व आनन्दमय जीवन जीने लगेंगे। नशा मुक्ति के लिए सभी ग्रामवासी एक दिन में भी दृढ़ संकल्प लेकर शराब, तम्बाकू व अन्य खतरनाक नशों से हो रहे सर्वनाश से स्वयं को व गाँव को बचाकर स्वास्थ्य, श्रम, व समृद्धि के रास्ते पर ला सकते हैं।

3. **ग्राम-स्वच्छता–** स्वच्छता व स्वास्थ्य का गहरा सम्बन्ध है। गाँव में शौचालय, घर, गली व पूरे गाँव में स्वच्छता होने से 99 प्रतिशत बीमारियों से मुक्त रहेंगे तथा यहां सुख, स्वास्थ्य, समृद्धि, शान्ति व दैवीय शक्तियों का वास होगा। इसके विपरीत गंदगी से घर, गली व गाँव में नरक का माहौल बन जाता है।

   इस प्रकार की ग्राम निर्माण योजना से गाँव में स्वर्ग का साम्राज्य होगा। गाँव में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं विकास की नई क्रान्ति पैदा होगी, गाँव से अच्छे लोगों का पलायन रुकेगा और हम तो चाहते हैं कि गाँव का वातावरण इतना अच्छा बनाए कि शहरों में नरक की जिंदगी जी रहे लोग गाँव में आकर

बसने लगे अर्थात् जब शहरों से गाँवों की ओर पलायन होगा तभी भारत बनेगा व बचेगा।

ग्राम समिति के कार्यकर्त्ता माह में कम से कम एक बार सामूहिक रूप से गाँव में स्वच्छता अभियान चलायें, ग्राम समिति एकत्रित होकर फावड़े, तसले, झाड़ू आदि लेकर गाँव की गलियों व नाली इत्यादि की सफाई कर प्रेरणा दें।

देश के अन्नदाता किसान, राष्ट्र के निर्माता गरीब मजदूर व कारीगर आदि को भी डॉक्टर, इंजीनियर व अन्य व्यवसायिक सेवाएं देने वालों की तरह पूरा काम, दाम व सम्मान हम दिलवायेंगे और भारत को विश्व की महाशक्ति व विश्व गुरु बनायेंगे।

4. **सदस्यता अभियान से संगठित गाँव–** बिना संगठित हुए हम कोई भी बड़ा लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकते, भारत स्वाभिमान के व्यवस्था परिवर्तन के अभियान के लिए गाँव से लेकर शहर तक सम्पूर्ण राष्ट्र को सदस्यता अभियान के तहत संगठित करके बीमारी, बुराई व भ्रष्टाचार से मुक्त स्वस्थ, संस्कारवान व शक्तिशाली भारत निर्माण के लक्ष्य को प्राप्त करना।

5. **स्वदेशी से स्वावलम्बी गाँव–** विदेशी वस्तु, विचार, वस्त्र, विदेशी भाषा, भेषज, दवा, भोजन, भजन, खाद, कीटनाशक व तेल आदि से देश के लगभग 15 से 20 लाख करोड़ रुपये के धन की प्रतिवर्ष बर्बादी हो रही है। हमें स्वदेशी के रास्ते पर चल कर देश के धन, संसाधन, बचपन, यौवन व संस्कारों को बचाना है और स्वदेशी वस्तु, विचार, वस्त्र, स्वदेशी भाषा, स्वदेशी दवा व चिकित्सा, स्वदेशी गोबर आदि का खाद व पशुओं के गोमूत्रादि से बने कीटनाशक आदि का प्रयोग करके तथा ईंधन आदि के क्षेत्र में भी देश को आत्मनिर्भर बनाकर अपनी आवश्यकताओं की तो पूर्ति हमें करनी ही है, साथ ही स्वदेशी उद्योगों के द्वारा हमें इतना उत्पादन बढ़ाना है कि हम औद्योगिकरण व वैश्वीकरण का लाभ उठाकर विश्व में सर्वाधिक निर्यात करने वाले देश तो बनेंगे ही साथ ही स्वदेशी से अपनी देश की बचत व विदेशों में निर्यात की बढ़त से हम देश का आर्थिक दृष्टिकोण से कम से कम 25 से 30 लाख करोड़ रुपये प्रतिवर्ष बचा पायेंगे और कुछ ही दिनों में भारत को विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में खड़ा कर पायेंगे। नित्य प्रयोग की विदेशी वस्तुएं, जैसे साबुन, शैम्पू, टूथपेस्ट, क्रीम, पावडर, जूते चप्पल व वस्त्र आदि का पूर्ण बहिष्कार करेंगे तथा कोल्डड्रिंक्स आदि के स्थान पर स्वदेशी नींबू पानी की शिकंजी व अन्य स्वदेशी स्वास्थ्यवर्धक पेयों को प्रोत्साहन देंगे। स्वदेशी कंपनियों की वस्तुओं को गाँवों तक पहुँचायेंगे तथा साथ ही एक बड़ी कार्ययोजना के तहत गाँव या गाँव के आस-पास बनी स्वदेशी वस्तुओं का ही प्रयोग करेंगे, यदि स्वदेशी उत्पादों की गुणवत्ता व मूल्य आदि में कहीं कोई दोष होगा तो उसको भी परस्पर सहयोग व सद्भाव से दूर करेंगे। इस प्रकार प्रत्येक गाँव, जिला व पूरे भारत को हमें स्वदेशी से स्वावलम्बी अर्थात् आत्मनिर्भर बनाना है तथा विदेशी वस्तु व विचारों के मिथ्याकर्षण से देश को मुक्ति दिलानी है। ***स्वदेशी अपनायेंगे-देश को बचायेंगे*** के संकल्प को पूरे देश में जागृत करना है। स्वदेशी व विदेशी कंपनियों की सूची भी हमें करोड़ों लोगों तक पहुंचानी है।

6. **जड़ी-बूटी उद्यान व स्वदेशी चिकित्सा का ज्ञान–** गिलोय, तुलसी, घृत कुमारी, आंवला, नीम, अश्वगंधा व पत्थरचट्टा आदि जड़ी-बूटियों को घर, आंगन, खेत, स्कूल, कालेज व मंदिर आदि में लगवाकर व उनके गुण, धर्म व उपयोग के बारे में बताकर सस्ती, सरल, निर्दोष व प्रभावशाली

अपनी प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति का प्रचार व गाँव के लोगों का उपचार करना है।

7. **वृक्षारोपण–** वृक्ष हमारे जीवन व जगत के रक्षक हैं, हमारा जीवन पूरी तरह से पेड़-पौधों पर निर्भर है। जीवन रक्षा, पर्यावरण की रक्षा, सूखा, बाढ़ गर्मी व अन्य भयंकर खतरों से हम तभी बच सकते हैं जब हमारे आस-पास पेड़ होंगे। हमने जंगलों व गाँव के पेड़ों की बेरहमी से कटाई की है और इसी के परिणाम स्वरूप आज जलवायु परिवर्तन व वर्षा की कमी जैसी भयावह समस्या पैदा हुई है। सोना, चांदी, बड़ी गाड़ी व बड़े भवन हम विकास व विलासिता के नाम पर तुरन्त खरीद सकते हैं या इनको बना सकते हैं परन्तु जिन वृक्षों के आधार पर जीवन चल रहा है उनको लगाने व बड़ा करने में कम से कम 15 से 20 वर्ष लगेंगे, तो आइए अभी से भारत के स्वर्णिम भविष्य को बनाने व अपनी भावी पीढ़ियों को बचाने के लिए आज से ही जन्मदिन, शादी की वर्षगाँठ, पितरों की स्मृति व पवित्र पर्वों पर वृक्ष लगाने का संकल्प लीजिए। अपने मित्रों व परिजनों को भी खुशी के मौकों पर औषधीय गुणयुक्त नीम, अर्जुन, आंवला आदि पेड़ गिलोय, तुलसी व घृतकुमारी आदि जड़ी-बूटियों के पौधे उपहार में दें।

8. **शिक्षा में गुणात्मक सुधार–** महात्मा गाँधी का स्पष्ट मानना था कि मात्र अक्षर ज्ञान ही शिक्षा नहीं है, वह तो शिक्षा का मात्र एक अंग है उसके साथ संस्कार व स्वदेशी के दर्शन पर आधारित शिक्षा जिसमें स्वदेशी भाषा, वस्तु, वस्त्र, विचार, स्वदेशी भेषज, भोजन व भजन आदि पर आधारित भारतीय शिक्षा का समावेश हो। बच्चों को प्रारम्भ से ही स्वदेशी से स्वावलम्बी भारत बनाने की दीक्षा दी जाएँ और विद्यालयों में ही स्वदेशी वस्तुएँ, वस्त्र व स्वदेशी आयुर्वेदिक दवा आदि बनाने का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जाए व उन वस्तुओं को बाजार में बेचने की भी व्यवस्था की जाए। विद्यालयों से न्यूनतम मूल्य पर उच्च गुणवत्ता युक्त नित्य प्रयोग उत्पादों शैम्पू, साबुन, टूथपेस्ट, मोमबत्ती, अगरबत्ती, क्रीम, पाउडर, देसी दवा, च्यवनप्राश, आंवल आदि के चूर्ण व वस्त्र आदि को स्थानीय लोग ममता, प्रेम भाव व चाव से खरीदें इससे शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रान्ति होगी। हमारा ध्येय है विद्यालय में शिक्षकों व विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति, प्राणायाम आसन व ध्यानादि के नियमित अभ्यास से बच्चों का शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक सर्वांगीण विकास के कार्यक्रम चलाना और नैतिक मूल्यों व उच्च आदर्शों की प्रेरणा बच्चों को देना।

9. **जल-प्रबन्धन–** वर्षा जल के संरक्षण, फसलों के चयन में वैज्ञानिकता अर्थात् कम पानी वाले स्थानों पर गन्ना व धानी आदि नहीं बोना, श्रमदान व परस्पर सहयोग से खेत का पानी खेत में व गाँव का पानी गाँव में रहे व आसमान से गिरने वाली एक-एक बूँद धरती माता के पेट में जाए, जिससे घटते हुए जल स्तर को बचा सकें। इस तरह वैयक्तिक व सामूहिक स्तर पर प्रयास करना। प्रति व्यक्ति व प्रति खेत जल की उपलब्धता निरन्तर घटती ही जा रही है यदि इस पर हमने ध्यान नहीं दिया तो पेय जल, सिंचाई व सफाई के लिए मिलने वाले जल के नाम संघर्ष ही नहीं, युद्धों को भी हम नहीं टाल पायेंगे।

10. **ग्राम-संसद–** गाँवों में सच्चा स्वराज्य तभी आ सकता है जब गाँव के हित में सर्व सम्मति से निर्णय ग्राम सभा करे और उसको पूर्ण पारदर्शिता के साथ क्रियान्वित करने का काम ग्राम पंचायत करें। इससे गाँव में सच्चा स्वराज्य आयेगा, गाँव में भ्रष्टाचार नहीं होगा व विकास की सभी योजनाओं से ग्रामोदय से राष्ट्रोदय की संकल्पना साकार होगी।

11. **विषमुक्त-कृषि–** खतरनाक रासायनिक खादों व जहरीले कीटनाशकों से मुक्त गोबरादि के स्वदेशी खाद व पशुओं के मूत्र आदि से बने हानि रहित कीटनाशकों व स्वदेशी उन्नत बीजों के प्रयोग से ही स्वस्थ भारत व समृद्ध किसान का सपना साकार हो सकता है। आज देश भर में लगभग 5 लाख करोड़ रुपये के विषैले कीटनाशक व उनके प्रयोग से पैदा हुई बीमारियों पर दवा के लिये लगभग 10 लाख करोड़ रुपये व्यय हो रहा हैं और कैंसर, टी.बी., दमा, शुगर व बी.पी. जैसी खतरनाक बीमारियां पैदा हो रही हैं। किसान का लगभग 80 प्रतिशत खर्चा मंहगे खाद व कीटनाशकों में खर्च हो रहा है। स्वदेशी कृषि व्यवस्था से कम लागत से पहले कम पैदावार और बाद में कम लागत से अधिक पैदावार की नई शुरुआत हमें करनी है। हम इस आर्गेनिक खेती के लिए उचित मूल्य का बाजार भी उपलब्ध करायेंगे।

गाँव की बर्बादी व पिछड़ेपन के कारण

प्रथमतया ये जानना अनिवार्य है कि गाँव की बर्बादी व पिछड़ेपन के क्या कारण है? गाँवों की बर्बादी व पिछड़ेपन के मुख्य कारण–

अध्ययन के उपरान्त हम पाते हैं कि गाँव की बर्बादी व विनाश के लिए निम्न पाँच कारण प्रमुख रूप से उत्तरदायी हैं।

1. **नशा-** गुटखा, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, शराब व गाँजा आदि नशों का व्यापार करने वाले लोग तो धनवान हो रहे हैं और हमारे ग्रामवासी नशा करके अपने स्वास्थ्य को बर्बाद कर रहे हैं तथा आर्थिक रूप से भी दरिद्र हो रहे हैं।
2. **विदेशी बीज, खाद व कीटनाशक–** विदेशी कम्पनियाँ अच्छे उत्पादन का सब्जबाग दिखाकर किसानों को अपने निम्न श्रेणी के बीज, खाद व कीटनाशक महंगे दामों में बेचते हैं जिसमें किसानों का अत्यधिक धन खर्च हो जाता है और विषयुक्त उत्पादन होने से स्वदेशी विषमुक्त स्वस्थ बीजों का ह्रास हो रहा है तथा साथ ही खादों व कीटनाशकों से किसानों की जमीन बंजर होती चली जा रही है।
3. **रोग–** नशे व विषयुक्त अन्न सेवन से हमारे ग्रामवासी रोगों से ग्रस्त हो रहे हैं तथा गाँवों में अच्छी स्वास्थ्य सुविधायें न होने के कारण लोगों को इलाज के लिए बाहर आना जाना पड़ता है, जहाँ पर भोले-भाले ग्रामवासियों के अशिक्षित होने के कारण डॉक्टर भी उनकी मजबूरी का लाभ उठाकर लूट लेते हैं।
4. **अच्छी शिक्षा व रोजगार का अभाव–** शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सड़क आदि उच्चस्तरीय सुविधाओं की कमी व उद्योगों का ग्रामीण क्षेत्र में अभाव होने के कारण गाँव के लोग शहर की तरफ पलायन कर रहे हैं।
5. **आपसी झगड़े–** गाँव के लोगों का आपस के झगड़ों के कारण ज्यादातर पैसा कोर्ट, पुलिस थानों आदि में चला जाता है।

नोट- *आज हमारी सरकारें किसानों की उर्वरक जमीनों को सस्ते में उद्योगपतियों व बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को बेच देती है, जिससे किसान भूमिहीन होकर पलायन कर रहे हैं और हमारे गाँव उजड़ रहे हैं। इसलिए हमने गाँवों की बिगड़ी हालत को सुधारने के लिए व ग्राम सुधार से राष्ट्र सुधार के संकल्प को पूरा करने के लिए आदर्श ग्राम निर्माण की योजना बनाई है जिसका संक्षिप्त प्रारूप है यह ग्यारह सूत्री कार्यक्रम।*

विषमुक्त कुदरती खेती

किसी भी राष्ट्र को प्रगति के पथ पर गतिमान होने के लिए उसके नागरिकों का स्वस्थ होना अत्यन्त आवश्यक है, ताकि वे समग्र चेतना से पुरुषार्थ करके अपने राष्ट्र को समृद्ध बना सकें। दुर्भाग्य से हमारा देश कुछ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के षड्यन्त्र का शिकार होकर अपने नौनिहालों, युवक-युवतियों, जो देश के कर्णधार व भविष्य हैं, को स्वस्थ विषमुक्त प्राकृतिक खाद्यान्न उपलब्ध नहीं करा पा रहा है। आज भी वास्तविक भारत गाँवों में बसता है, गाँव इस देश की आत्मा व आधार हैं। हमारे किसान अन्नदाता हैं, जो सभी का भरण-पोषण करके लोगों को जीवन देते हैं लेकिन वर्तमान परिवेश में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने हमारे भोले-भाले किसानों को अधिक उत्पादन के झूठे स्वप्न दिखाकर खतरनाक रासायनिक खादों व जहरीले कीटनियन्त्रकों के जाल में फंसा लिया है, जिनके प्रयोग से उत्पादित विषयुक्त खाद्यान्न को ग्रहण करने से लोग कैंसर, टी.बी., दमा, शुगर व बी.पी. जैसी खतरनाक बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं और हमारे किसान अनजाने में इस पाप के भागी बन रहे हैं। आज देश में लगभग 5 लाख करोड़ रुपये के रासायनिक खाद व विषैले कीटनियन्त्रकों का प्रयोग व उनके प्रयोग से पैदा हुई बीमारियों पर लगभग 10 लाख करोड़ रुपये खर्च किया जा रहा है। ज्यादा खर्च, कम उपज के कारण किसानों की आत्महत्याएं व जहरीले अन्न व शाक सब्जियों से भयंकर बीमारियों के कारण देश को मौत के मुँह में धकेला जा रहा है।

हमें स्वदेशी कृषि व्यवस्था को अपनाकर पहले कम लागत से उतनी ही पैदावार और बाद में कम लागत से अधिक पैदावार करके रासायनिक खादों व कीटनियन्त्रकों के कुचक्र से देश को बचाना है। निरन्तर शोध व अनुसंधान से प्राप्त परिणामों के आधार पर प्राचीन प्रक्रिया व वैज्ञानिक तरीके से निर्दोष, लाभकारी वैज्ञानिक विषमुक्त जैविक व प्राकृतिक खेती को गाँवों में स्थापित करना ही हमारा लक्ष्य है। जहरीले रासायनिक खादों व कीटनियन्त्रकों से मुक्त गोबर आदि के स्वदेशी खाद व पशुओं के मूत्र आदि से बने हानि रहित कीटनियन्त्रकों व स्वदेशी उन्नत बीजों के प्रयोग से ही स्वस्थ भारत व समृद्ध किसान का सपना साकार हो सकता है। कुदरती खाद, कुदरती कीटनियन्त्रक एवं देशी बीज की पूरी जानकारी हेतु आपको शीघ्र ही योगपीठ से साहित्य आदि भी प्राप्त हो सकेगा तथा योग संदेश पत्रिका से भी यह जानकारी निरन्तर मिलती रहेगी।

संक्षेप में कुछ मूलभूत प्रक्रिया हम यहाँ आपके लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। यदि आपके पास एक गाय या अन्य पशुधन है तो आप कम से कम दस एकड़ भूमि पर विषमुक्त कृषि कर सकते हैं। जहाँ तक सम्भव हो सके अपने खेतों की जुताई ट्रैक्टर से नहीं करके बैल या ऊँट से करें जिससे खेती बंजर नहीं होगी तथा धरती को उर्वरता प्रदान करने वाले केंचुओं व अन्य सैंकड़ों जीवों की भी रक्षा होगी।

गौ का अर्थशास्त्र व धर्मशास्त्र

सभी दैविक शक्तियों का स्रोत गाय है। सभी महापुरुष गौ माता की सेवा से महान बने हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम, योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण जी, महाराजा दिलीप जी, सत्यकाम जाबाल एवं श्री सनत कुमार आदि गाय की सेवा से व गौ-दुग्ध, गौ-घृत आदि के सेवन से महान बने। हमारे सभी

संस्कारों में जन्म से लेकर विवाह तक ऐसी मान्यता है कि अन्तिम यात्रा में वैतरणी पार करवाने में गौ दान की परम्परा है।

गाय का अर्थशास्त्र

1. गाय से उपलब्ध होने वाले मुख्य उत्पाद एवं सह उत्पाद (बाइप्रोडेक्ट्स) के औषधीय प्रयोग- गौमूत्र, गौ-घृत, गौ-दुग्ध, गौ-तक्र व गोबर आदि पंचगव्य के प्रयोग से साधारण से लेकर असाध्यरोग कैंसर आदि का उपचार भी संभव है।
2. खाद– गाय के गौ-मूत्र व गोबर के प्रयोग से उन्नत किस्म की जैविक खाद बनाकर रासायनिक खादों के खर्च से बचा जा सकता है।
3. कीटनियन्त्रक– गौ-मूत्र आदि का कीटनियन्त्रक रासायनिक कीटनियन्त्रकों का प्रभावी विकल्प है।
4. ऊर्जा– गाय के गोबर से उपलों व बॉयोगैस से ऊर्जा की जरूरतें पूरी की जा सकती हैं।
5. परिवहन एवं जुताई– गाय के बछड़े व बैल माल ढुलाई के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन का सशक्त माध्यम है।

इन पाँचों दृष्टि कोणों से गाय का आर्थिक मूल्यांकन करें तो एक गाय के जीवन भर से जो आर्थिक लाभ होता है वह पच्चीस लाख रुपये से भी अधिक होता है। जबकि गाय को काटने से लगभग पच्चीस हजार रुपये का ही मांस व चमड़ा मिलता है। अत: हर किसान अपने घर में गाय अवश्य रखें।

खुद तो जहर मत खाइए तथा अपने बच्चों को भी थाली में विष मत परोसिए

यदि इस नैसर्गिक या कुदरती विषमुक्त खेती के बारे में आपके मन में सब तथ्यों को जानने के बाद भी कोई प्रश्न रहता है कि कहीं पैदाकर कम तो नहीं हो जायेगी तो पहले आप अपने परिवार के लिए 1-2 एकड़ में यह प्रयोग कीजिए। भाई दो सो करोड़ वर्षों से हमारे पूर्वज इसी कुदरती तरीके से खेती करते आए थे, डरो मत, हम यह प्रयोग खुद हजारों एकड़ भूमि पर कर रहे हैं, यह 100% सफल प्रयोग है। कम से कम अपने बच्चों को तो जहर मत खिलाइए, खुद भी विष खाइए तथा अपने घर के पशुओं को भी जहरीला चारा मत खिलाइए क्योंकि चारा भी पशुओं का दूश व घी बनकर हमारे ही शरीर में ही जाने वाला है। जहरीली खेती से पशुओं व माताओं के दूध में भी विष घुल गया है तथा इंसानों का खून व पूरा शरीर जहरीला हो चुका है। इसी कारण कैंसर, बी.पी., शूगर, हार्ट अटैक, गठिया, दमा व अन्य खतरनाक रोग पैदा हो रहे हैं।

पशुओं के साथ-साथ आदमी व औरतों में भी बांझपन का बहुत बड़ा कारण यह जहरीली खेती व विषैला आहार ही है। पशुओं में बांझपन आने से वे कत्लखानों में कट रहे हैं तथा इंसानों में बांझपन आने से कुलवंश मिट रहे हैं, हम अपने ही अज्ञान से अपने पशुधन व कुल का विनाश कर रहे हैं।

कृषि व किसान से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

1. शुद्ध आहार हमारा अर्थात् किसी भी देश के नागरिकों का मूलभूत मौलिक अधिकार है।

2. किसानों को खेती का जब तक लागत मूल्य नहीं मिलेगा तथा सस्ते दामों में बिजली नहीं मिलेगी और सम्पूर्ण देश में जल-प्रबन्धन की जब तक कोई राष्ट्रीय जल नीति नहीं बनेगी तब तक भारत के किसानों व खेती से जुड़े मजदूरों व कारीगरों का भला नहीं हो सकता। यदि लागत मूल्य किसानों को नहीं मिलता है तो उनको फसलों के वर्तमान मूल्य के साथ कम से कम बराबर की क्षतिपूर्ति करने की योजना बनानी होगी। गेहूँ, सोयाबीन व चना आदि सभी फसलों के वर्तमान सरकारी समर्थन मूल्य से कम से कम चार गुणा उनका लागत मूल्य बैठता है। सरकार सबको न्याय देने की बात करती है फिर किसानों को न्याय क्यों नहीं मिलता?
3. उद्योग, शिक्षा व स्वास्थ्य आदि विभिन्न क्षेत्रों में कार्य व समस्या का निस्तारण करवाने के लिए सम्बन्धित मन्त्रालय होता है जबकि किसान को एक कृषि कार्य के लिए अलग-अलग मंत्रालयों में (यथा रसायन, फूड एण्ड हर्बल प्रोसेसिंग, बिजली, कृषि व जल विभाग आदि में) चक्कर लगाने पड़ते हैं फिर भी किसानों की समस्याओं का समाधान एक भी जगह नहीं हो पाता है।
4. फसलों का लागत मूल्य मिलने तथा जहरीले खाद, कीटनियन्त्रक व महंगे बीजों के कारण कृषि में लागत मूल्य बढ़ने से किसानों की आत्महत्याएँ 10 लाख का आंकड़ा पार कर चुकी हैं। देश के अन्नदाता किसान की आत्महत्या राष्ट्रीय शर्म व महापाप है।
5. पिछले कुछ वर्षों में सरकार द्वारा उद्योगपतियों व कुछ अन्य लोगों को फायदा पहुँचाने के लिए 22 लाख करोड़ की कर में छूट दी गयी तथा अब भी हर वर्ष लगभग 5 लाख करोड़ रुपये की कर में छूट दी जा रही है। तो फिर किसानों के लिए सरकारी बजट का कुछ पैसा क्यों नहीं निकाला जा सकता?
6. किसानों का राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत संगठन नहीं होने तथा वर्तमान में किसान संगठनों के बीच राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत तालमेल या समन्वय नहीं होने से किसानों के मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी आवाज नहीं मिल पा रही है।
7. हमें कृषि को छोटा व हीन कार्य नहीं मानना चाहिए। वेदों में कृषि कार्य को सर्वश्रेष्ठ दर्जा दिया गया है। अपने अतीत में सीता माता के पिता महाराज जनक हों या योगेश्वर श्रीकृष्ण के भाई बलराम हों अथवा कणाद ऋषि हों, सभी श्रेष्ठ पुरुषों व ऋषि मुनियों ने कृषि कर्म को सर्वोपरि सम्मान व स्थान दिया है। हमारे समाज में एक प्रचलित जनलोकोक्ति भी कृषि कर्म की श्रेष्ठता को अभिव्यक्त करती है–**"उत्तम खेती मध्यम बान, करे चाकरी कुकर निदान"**। इसलिए हम कृषि कर्म को देश में ऋषिकर्म का सम्मान दिलाना चाहते हैं।

कुदरती खेती के लिए कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ

1. एक एकड़ में शीशम, आम, कटहल, सिल्वर ओक, चीकू, नारियल, पपीता, केला व सागौन आदि ऐसे पेड़ जो खेत की उर्वरता बढ़ाने में मद्द करते हैं, को अवश्य लगाने चाहिए। इन वृक्षों पर बैठने वाले पंछी कीटों को खाकर फसलों को बचाने का काम करते हैं साथ ही खेत में खाद भी देते हैं। पंछी अनाज कम व फसल को नुकसान पहुँचाने वाले कीड़ों को अधिक खाते हैं। एक चिड़िया दिन में लगभग 250 सूंडी खा लेती है। पेड़ों से 10-20 साल में किसानों को अतिरिक्त आर्थिक लाभ मिलता है। जाटी आदि से पशुओं को आहार, रसोई के लिए लकड़ी तथा परिवार के लिए फल मिलते हैं। पेड़ों के

साथ गिलोय व काली मिर्च आदि लगाकर और अधिक आर्थिक लाभ कमा सकते हैं।

2. एक ग्राम मिट्टी में लगभग 3 करोड़ सूक्ष्म जीव होते हैं। खेत के पत्तों, धान व अन्य प्रकार के चारे में आग लगाने एवं जहरीली खाद व कीटनियन्त्रकों को डालने, ट्रैक्टर से खेत जोतने पर ये सूक्ष्म जीव मरते हैं और धरती धीरे-धीरे बंजर बन जाती है।
3. अधिक पानी जमीन का शत्रु, नई जमीन का मित्र तथा फसलों व गोभी आदि सब्जियों का कचरा भूमि माता के वस्त्रों का काम करते हैं, जो जमीन को सर्दी गर्मी से बचाते हैं, तापमान को नियन्त्रित रखते हैं तथा जमीन की नमी को भी बरकरार रखते हैं। अत: भूमि की मल्चिंग के लिए फसलों का कचरा खेत के लिए खतरा नहीं उसकी ताकत है।
4. लगभग एक एकड़ भूमि में 90 हजार केंचुएँ होते हैं। एक केंचुवा खेत में हजारों किलोमीटर खुदाई करने की क्षमता रखता है। जो भूमि जैविक कृषि द्वारा पोषित होती है और जहाँ केचुएँ संरक्षित किये जाते हैं उस भूमि की 5 वर्षों में-

   (क) 5 गुना नाईट्रोजन की ताकत बढ़ जाती है। (ख) 7 गुणा फास्फोरस की ताकत बढ़ जाती है।
   (ग) 11 गुना पोटास की ताकत बढ़ जाती है।
   (घ) 2.5 गुण्ना मैग्नीशियम की ताकत बढ़ जाती है।

   अत: प्राकृतिक खेती में कृत्रिम रासायनिक खाद, यूरिया, व डी.ए.पी. की जरूरत नहीं पड़ती है। गोबर, गौमूत्र व पेड़ के पत्तों से भूमि को ये पोषक तत्व स्वयं ही मिलते रहते हैं।
5. एक केंचुवे का 10 दिन से 30 दिन का जीवन होता है। यह लगभग 6 अण्डे प्रतिदिन देता है। एक मे ही नर-मादा दोनों होते हैं अर्थात् द्विलिंगी होता है। अपने जीवनकाल में 30 से 40 बच्चे तैयार कर देता है तथा एक केंचुवा लगभग 3 टन मिट्टी को अपने जीवन काल में खाद के रूप में परिवर्तित कर देता है। अत: एक भी केंचुआ मरना नहीं चाहिए, यह किसान व खेत का सबसे बड़ा मित्र है।
6. पेड़ का एक पत्ता धरती के लिए एक नोट के बराबर है तथा एक केंचुआ एक बोरी यूरिया या डीएपी से अधिक लाभकारी है।
7. **किसानों की प्रमुख पाँच ताकत–** मिट्टी, पानी, बीज, फसलचक्र एवं श्रमशास्त्र है। इनमें सजीव मिट्टी चार बातों से शक्तिशाली होती है–

   (क) गाय, (ख) वृक्ष या पौधे (ग) चिड़ियाँ या पक्षी, (घ) फसलों का बॉयोमास या हरी खाद। इसी तरह पानी का प्रबन्धन कुदरती खेती में महत्त्वपूर्ण है। यह प्रबन्धन निम्न बातों से होता है– (क) माइक्रोट्रेन्च, (ख) ग्रीड लोकिग, (ग) छोटे-छोटे गड्ढ़े खेतों में। इसी तरह बीज, फसल चक्र व श्रमशास्त्र का कुदरती खेती में अपना महत्त्व है। इन पाँच शक्तियों के बारे में हमारे संस्थान से जुड़े कृषि विशेषज्ञ *श्री सुभाष शर्मा जी* पिछले कई दशकों से किसानों को जागरूक कर रहे हैं।
8. कर्नाटक के भाई नारायण रेड्डी ने पिछले बीस बरसों में अपने खेतों में यह कुदरती खेती की है तथा बीस लाख के तो पेड़ तैयार हो गए। कुदरती खेती से उनकी आमदनी बढ़ी है और तीस एकड़ जमीन खरीद ली है। जबकि यूरिया, डीएपी तथा अन्य जहरीले खाद व कीटनियन्त्रक डालने वाले किसान की जिन्दगी, रोग व आत्महत्या से खत्म हो रही है तथा जमीन भी बेचनी पड़ रही है।
9. खेत में कहीं भी कभी भी यूकेलिप्टस नहीं लगाना चाहिए।
10. रासायनिक खेती से नैसर्गिक खेती के लिए खेत को तैयार करने के लिए आप अपने खेत में पहले तालाब की मिट्टी, जंगल के पेड़ों के नीचे की मिट्टी, हरी खाद जैसे ढैंचा व पटसन आदि बोकर

उसी जमीन में उसे काटकर मिला देना, गोमूत्र, गोबर, गुड़ व दाल वाली खाद व कम्पोस्ट खाद डालें, इससे भूमि की उर्वरता बढ़ेगी तथा उपज कम नहीं होगी क्योंकि कुछ लोग जब यूरिया, डीएपी आदि से सीधे कुदरती खेती पर आ जाते हैं तो खेत यदि तैयार नहीं किया तो आपकी उपज कम हो सकती है।

फसल चक्र का विज्ञान

1. किसानों को फसल चक्र विज्ञान तथा कीट चक्र विज्ञान का भी पूरा ज्ञान होना चाहिए। एक फसल दूसरी फसल की पूरक होती है। अत: दालें, सब्जियाँ, अलग-अलग प्रकार के अन्न, कौन सी ऋतु में कौन सी सब्जी बोना है? जिससे उसके ऊपर कम से कम कीट आयें, इत्यादि छोटी-छोटी बातें बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार यदि एक कीड़ा फसल को खाने वाला है तो कीड़े को खाने के लिए प्रकृति ने तीन कीड़े बनाये हैं। अत: कीटों के इस प्राकृतिक नियंत्रण चक्र को समझने की आवश्यकता है। जैसे बलवान इन्सान को कोई रोग नहीं होता वैसे ही कुदरती खेती करने से फसल बलवान होती है। उस पर वैसे ही कम से कम कीड़े लगते हैं तथा लगते भी हैं तो प्राकृतिक चक्र से स्वयं ही नियन्त्रित होते जाते हैं। रासायनिक खेती, व्यवसायिक खेती ने कृषि व्यवस्था को चौपट कर दिया है। व्यापार के रूप में कुदरती खेती करे या न करे, किन्तु कम से कम एक से दो एकड़ जमीन पर किसान अपने व्यक्तिगत उपयोग हेतु कुदरती खेती अवश्य करें।
2. मिश्रित फसल चक्र के बारे में भाई शूरवीर सिंह जी का 28 वर्षों का अनुभव अत्यंत प्रसंशनीय व अनुकरणीय है। एक होती है मुख्य फसल जैसे गेहूँ, गौण फसल जैसे सरसों, सहायक फसल जैसे-चना, अतिथि फसल, जैसे-मूली-शलजम आदि, रक्षक फसल, जैसे-धनिया, मेथी, पटसन व सौंफ आदि। इसी प्रकार अन्य फसलों के बारे में भी यही बात लागू होती है।
3. किसान की जरूरत की हर चीज उसे अपने खेत में पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए। किसान को 99% दुकान पर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसके लिए फसल चक्र का ज्ञान सब किसानों को होना चाहिए।
4. जैसे माँ को एक संतान के बाद तीन वर्ष का आराम देते हैं, वैसे ही धरती माँ को भी साल में यदि तीन माह का आराम दिया जाये तो खेत की मिट्टी ज्यादा उपजाऊ रहती है।
5. दुनियाँ में महाभारत की लड़ाई को सबसे बड़ा माना जाता है, वह भी 18 दिन में पूरी हो गई थी। ये कीड़ों की लड़ाई 30 वर्षों से चल रही है और कीड़े मर नहीं रहे हैं। इसका सीधा-सा मतलब है कि **अधिकांश कृषि वैज्ञानिक किसानों के लिए नहीं अपितु दवा, खाद, बीज व यंत्र आदि बनाने वाली कम्पनियों को फायदा पहुँचाने के लिए ज्यादा काम करते हैं और कीड़ा आदि के नाम पर भ्रम फैलाकर किसानों को लूटते हैं। ऑटो मोबाईल इन्डस्ट्रीज़ तथा बीज, विदेशी खाद, कीटनियन्त्रक व कृषि यन्त्र बनाने वाली और उनके लिए काम करने वाली लोबी कुदरती खेती का योजनाबद्ध तरीके से विरोध करती हैं।**

पतंजलि ग्रामोद्योग में विषमुक्त कुदरती खेती के व्यावहारिक प्रयोग

पतंजलि योगपीठ में पूज्य आचार्य श्री बालकृष्ण जी व परम श्रद्धेय स्वामी जी के आशीर्वाद व प्रेरणा से देश के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक भाई श्री देवेन्द्र शर्मा जी के मार्गदर्शन व नेतृत्व में इस कुदरती विषमुक्त कृषि के लिए एक बहुत बड़ा व्यावहारिक प्रयोग चल रहा है, जिसमें मुख्य रूप से भाई श्री सुभाष शर्मा जी व उनके सहयोगी एक प्रकार की नैसर्गिक खेती का, भाई श्री सुरेश देसाई जी, भाई शूरवीर सिंह जी व भाई अमरजीत जी एक दूसरे प्रकार की कुदरती खेती के मॉडल पर तथा बहन संगीता जी व उनके सहयोगी एक बहुत बड़ा प्रोजेक्ट देसी बीज पर तैयार कर रहे हैं। इसमें भाई श्री नारायण रेड्डी जी, पूर्वी व्यास जी, राजवीर सिंह जी, डॉ० सुरेन्द्र लाल जी, भाई श्रीप्रकाश रघुवंशी जी, एवं श्री नटवर सिंह जी आदि भी सहयोग कर रहे हैं। अब यहाँ पूरे देश के किसानों को कुदरती विषमुक्त स्वदेशी कृषि का व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा साथ में ही ग्रामोद्योग के बारे में भी प्रशिक्षण प्रारम्भ हो चुका हैं।

पतंजलि ग्रामोद्योग में कुदरती खेती के व्यावहारिक प्रशिक्षण (प्रेक्टिकल ट्रेनिंग) हेतु सुविधायें

देश भर के किसानों के व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु हरिद्वार में तीन से पाँच दिन की व्यावहारिक प्रशिक्षण (प्रेक्टिकल ट्रेनिंग) की व्यवस्था की गई हैं। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें : 01334-240008, 315829

- **बीजसंस्कार :–** मनुष्य के संस्कारों का ज्ञान, विधान ऋषियों को था। वैसे ही बीज, मिट्टी व फसलों के भी संस्कारों का ज्ञान हम सब किसानों को होना चाहिए।
- **बीजामृत :–** बीजों की बुआई करने से पूर्व उनको बीजामृत द्वारा उपचारित करते हैं। इससे बीजों का अंकुरण अच्छा होता है। साथ ही विभिन्न फंगस एवं बीज खाने वाले कीटों से बीज सुरक्षित रहता है।

बीजामृत प्रथम के लिए आवश्यक सामग्री :–

(क) गौमूत्र 5 लीटर, (ख) राख 1 किलो. (नीम की लकड़ी की राख उत्तम रहती है), (ग) चूना 400 ग्राम, (घ) पानी 3 लीटर

बनाने की विधि– सर्वप्रथम 20 लीटर क्षमता वाला एक टब या ड्रम ले लेते हैं। उसमें 5 लीटर गौमूत्र में 400 ग्राम चूना घोलते हैं, तत्पश्चात एक किलो राख मिलाते हैं, उसके बाद 3 लीटर पानी डालते हैं। लकड़ी की सहायता से उपरोक्त द्रव को हिलाते हैं, ताकि सामग्री मिश्रित हो जायें। अब जिस फसल के बीजों की बुआई करनी होती है उसे तीन से पाँच मिनट उपरोक्त बीजामृत में डुबोकर रखते हैं। तत्पश्चात उसे छाया में सुखाकर बुआई करने के लिए उपयोग करते हैं। उपरोक्त बीजामृत 1 एकड़ फसलों के बीजों के लिए पर्याप्त होता है।

विशेष– धान के बीजों को उपरोक्त बीजामृत से संस्कारित करने से गोभ की सूंडी की बीमारी का प्रतिशत काफी कम हो जाता है।

बीजामृत द्वितीय के लिए आवश्यक सामग्री–

(क) गाय का गोबर 5 किलो, (ख) देशी घी 250 ग्राम, (ग) शुद्ध शहद 1 किलो, (घ) बीज 10 किलो (जो बीज उपयोग में लाने हैं)

बनाने की विधि– सर्वप्रथम 250 ग्राम देशी घी को 5 किलो गाय के गोबर में मिलाकर हाथों से रगड़ते हैं ताकि देशी घी पूर्णरूपेण गोबर में मिश्रित हो जाये। इसके पश्चात् जिस बीज की बुवाई करनी होती है, उसकी 10 किलों मात्रा लेकर उसमें शहद को मिलाते हैं, जब शहद पूरी तरह बीज में मिल जाये इसके पश्चात् गोबर और घी के मिश्रण को लेकर बीजों पर रगड़ते हैं। तत्पश्चात बीजों को छाया में 12 घण्टे तक सुखाते हैं। इसके पश्चात बीज की बुवाई कर देते हैं।

उपरोक्त बीजामृत से मूँग, लौबिया, अरहर, सरसों आदि के बीजों को संस्कारित किया जा सकता है।

कुदरती खाद के निर्माण की अनुभूत मुख्य प्रक्रियाएँ

(क) संजीवक खाद– यह एक प्राकृतिक तत्त्वों से बना हुआ द्रव है जो की फसलों को सीधे दिया जाता है। इसके प्रयोग से फसलों की उचित वृद्धि के साथ-साथ विभिन्न रोगों से भी मुक्ति मिलती है।

सामग्री– (200 ली० के लिए) 60 किलो गाय का गोबर, 6 लीटर गौमूत्र, 1 किलो गुड, 133 लीटर पानी।

विधि– सर्वप्रथम एक बड़ा ड्रम या टब लेते हैं जिसकी क्षमता 200 लीटर हो, उपरोक्त ड्रम में सबसे पहले 60 किलो गाय का गोबर लेते हैं तत्पश्चात इसमें 6 लीटर गौमूत्र घोलते हैं। गोबर तथा गौमूत्र के इस घोल में 1 किलो पुराना गुड़ लेते हैं इसको बारीक करके उपरोक्त ड्रम में डाल देते हैं। तत्पश्चात लकड़ी की सहायता से इसको हिलाते रहते हैं जब तक की गुड़ पूरी तरह उपरोक्त घोल में न मिल जाये तत्पश्चात इसमें 133 लीटर पानी मिला देते हैं अब इसको कपड़े से ढ़क देते हैं 10 से 12 दिन तक ऐसे ही रखने के पश्चात् खोलते हैं और पुनः लकड़ी से हिलाते हैं फिर इसे सीधे प्रयोग में लेते हैं।

प्रयोग विधि– यह सभी प्रकार की फसलों में लाभप्रद होता है, अतः इसे फसल की सिंचाई/छिड़काव करते समय प्रयोग करते हैं। इसे सिंचाई के साथ नाली में पानी के साथ पतली धार के रूप में भी डाल सकते हैं।

मात्रा– एक एकड़ जमीन में, पहली फसल के लिए 1,000 लीटर संजीवक, दूसरे वर्ष 800 लीटर संजीवक, तीसरे वर्ष 600 लीटर संजीवक। इसी तरह आगे प्रतिवर्ष प्रतिफसल यह 400 लीटर संजीवक खाद डालनी चाहिए।

विशेष– कुदरती खेती हेतु एक फसल के लिये यह संजीवक खाद दो-तीन बार प्रयोग में ला सकते हैं।

(ख) जीवामृत खाद– 10 किलो गोबर, 5 किलो गौमूत्र, 1-2 किलो गुड़, 100-200 मिलीग्राम सरसों या मूंगफली आदि कोई भी एक खाने का तेल, 1-2 किलो कोई भी सस्ती दाल चना-मटर आदि का आटा तथा एक मुट्ठी भर बड़, शमी या पीपल के पेड़ के नीचे की मिट्टी–ये मिला कर रख दें। 7-8 दिन में सड़कर खाद तैयार हो जायेगी। इस खाद को ड्रम में टूंटी लगाकर धोरे (नाली) के माध्यम

से फसल में दे सकते हैं या मिट्टी मिलाकर हाथ से भी छिड़क सकते हैं। एक एकड़ की फसल के लिए हर बार सिंचाई के समय इसे डालते हैं औसत रूप में 3-4 बार एक फसल चक्र के लिए यह पर्याप्त है। एक गाय से 1 माह में 15 एकड़ भूमि के लिए खाद तैयार हो सकती है।

(ग) कम्पोस्ट खाद– खेतों के आस-पास मेढ़ों के पौधों तथा फसलों के अपशिष्ट को गोबर तथा बायोसैलरी (बायोगैस से निकला बाइ प्रोडक्ट) की सहायता से कम्पोस्ट तैयार करते हैं इस प्रकार की बनी खाद में अनेक प्रकार के बायोएक्टिव कम्पाउन्डस होते हैं, जो कि मिट्टी की उर्वरता में दीर्घकालीन वृद्धि करते हैं।

चूँकि खेतों में मौजूद पेड़ पौधों के अवशेषों को प्राकृतिक रुप से सड़ने में काफी समय लगता है किन्तु गोबर तथा बायोस्लरी की उपस्थिति से सूक्ष्म जीवों की क्रियाएँ प्रेरित होकर अपघटन शीघ्र कर देती हैं, जिसके फलस्वरूप उत्तम प्रकार की खाद प्राप्त हो जाती है।

सामग्री–1. फसलों के अवशेष, 2. सब्जियों के अवशेष, 3. खरपतवारों के सूखे झाड़ (बीज बनने से पहले), 5. गोबर गैस स्लरी।

बनाने की विधि– (4 फीट चौड़ा 8 फीट लम्बे तथा 4 से 6 फीट ऊँचा ब्लॉक/स्थान में) सर्वप्रथम खेतों में पड़ी फसलों के अपशिष्ट जैसे-धान की पुआली बैंगन टमाटर इत्यादि सब्जियों के सूखे पत्ते या पौधे जो कि काष्ठ अर्थात जिनके तने मजबूत होते हैं उनकी तह पहले लगाते हैं, जमीन के ऊपर इसकी ऊँचाई 6 से 8 इंच तक रखते हैं तत्पश्चात् ताजे गोबर की एक 4 इंच तह लगाते हैं, उसके पश्चात पुनः एक तह सूखे खरपतवारों तथा अन्य फसल अवशेषों की लगाते हैं। तत्पश्चात पुनः 4 इंच गोबर की तह लगाते हैं, इसी प्रकार उपरोक्त क्रम दोहराते हैं। इसी क्रम में कुछ तहें मुलायम अवशेषों, जैसे-सब्जियों के अपशिष्ट को लगाते हैं तत्पश्चात् बायोगैस की स्लरी डालते हैं, तत्पश्चात पुनः फसलों के अपशिष्ट अथवा अवशेष एवं गोबर डालते हैं। इसी तरह निरन्तर परतें लगाते रहते हैं जब तक कि ऊँचाई 6 फीट तक न हो जाये।

उपरोक्त बने ब्लॉक या खाद के ढ़ेर को सप्ताह में दो बार पानी का छिड़काव अवश्य करते रहना चाहिए, जिससे ब्लॉक या ढ़ेर में पर्याप्त नमी बनी रहे।

प्रयोग विधि– 3 माह पश्चात् उपरोक्त ब्लॉक या ढ़ेर पूरी तरह कम्पोस्ट खाद में तब्दील हो जाता है, अब इसको 5-6 टन लगभग एक टॉली प्रति एकड़ की दर से खेतों में डालते हैं।

(घ) हरी खाद– हरी खाद कृषि में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। ये बिना गले-सड़े सीधे मृदा में प्रयुक्त होती हैं। ये द्विबीजपत्री, एकबीजपत्री और तिलहन फसलों का संयोग होता हैं 6:3:1 अर्थात् 6 भाग द्विबीजपत्री बीज, 3 भाग एकबीजपत्री, 1 भाग तिलहन बीजों को सीधे खेतों में बोया जाता है तथा एक निश्चित अवधि अर्थात् 40 से 45 दिनों पश्चात् जुताई करके खेतों में दबाया जाता है। हरी खाद मिट्टी में अत्यंत प्रभावी ढंग से अपना योगदान देती है। ये मुख्यतः नाइट्रोजन का प्राकृतिक स्रोत है।

एक एकड़ खेत के लिये निम्न बीजों की आवश्यकता पड़ती है।

1. 6 किलो द्विबीजपत्री (मूँग, मोंठ, अरहर, उड़द, लोबिया)
2. 3 किलो एकबीजपत्री (सनई, ढ़ैचा, मेथी, मक्का, ज्वार व बाजर अदि)
3- 1 किलो तिलहन (सरसों, तिल, सूरजमुखी)

प्रयोग विधि– ग्रीष्मकाल अथवा वर्षाकालीन समय हरी खाद के लिए विशेष उपयोगी रहता है।

उपरोक्त समय खेत की गहरी 2 बार जुताई कर देनी चाहिए। तत्पश्चात पलेवा कर उपरोक्त बीज बुआई कर देनी चाहिए। ध्यान यह रखना चाहिए उपरोक्त बीजों को आपस में मिश्रित कर लेना चाहिए। बीज अंकुरण के 40 से 45 दिनों पश्चात् उपरोक्त फसलों को खेत में ही जुताई कर दबा देना चाहिए। तत्पश्चात अपनी मुख्य फसल जो लेना चाह रहे है, उसकी बुआई करनी चाहिए। खाद हेतु बीजों का चयन मौसम के अनुसार करना चाहिए।

विशेष– पतंजलि विषमुक्त कृषि विभाग के आंकड़ों के अनुसार धान एवं सब्जियों की खेती से पूर्व हरी खाद लेने से खेत काफी उर्वरक हो जाता है तथा फसल उत्पाद में 20-30% तक अतिरिक्त वृद्धि प्राप्त हो जाती है।

नोट- *जिस खेत की मिट्टी रेतीली अथवा बंजर हो उसमें 3 वर्षों तक हरी खाद देने से मिट्टी में सामान्य पोषक तत्त्व पर्याप्त मात्रा में आ जाते हैं।*

जैविक कीट नियन्त्रक निर्माण की प्रक्रियाएँ

(1) निम्बादि कीटनियन्त्रक

आवयक सामग्री– नीम पत्ते 4 किलो, आक पत्ते 4 किलो, आडू पत्ते 4 किलो, लहसुन 4 किलो, तीखी हरी मिर्च 4 किलो, गौमूत्र 20 लीटर, पानी 20 लीटर।

बनाने की विधि– सर्वप्रथम नीम पत्ते, आक पत्ते एवं आडू के पत्तों को अलग-अलग कूटकर टब में डाल लेते हैं, तत्पश्चात् लहसुन एवं मिर्च को मिश्रित करके इमाम दस्ते में कूट लेते हैं। इसके बाद उपरोक्त टब में गौमूत्र एवं पानी मिलाते हैं। तत्पश्चात् लकड़ी की सहायता से आपस में मिलाते हैं जब उपरोक्त सभी अच्छी तरह मिल जायें फिर टब को ढक देते है- 15 दिनों पश्चात् इसको बारीक कपड़े से छान लेते है- छने हुये द्रव में 10 भाग पानी मिलाकर फसल पर धूप में छिड़काव करते हैं। एक एकड़ फसल के लिए पाँच लीटर कीटनियन्त्रक पर्याप्त होता है।

विशेष- इस कीटनियन्त्रक द्वारा कमला कीट, रसचूषक कीट तथा मक्के का तना भेदक कीट पूरी तरह नियंत्रित होता है।

(2) हींगादि कीटनियन्त्रक– गाय के गोबर और गौमूत्र में बड़ी संख्या में मित्र जीवाणु पायें जाते हैं। इसमें निश्चित मात्रा में हींग मिलाने से काफी शक्तिशाली कीटनियन्त्रक तैयार हो जाता है।

आवश्यक सामग्री– 5 किलो गाय का गोबर, 7 लीटर गौमूत्र, 5 लीटर पानी, 25 ग्राम असली हींग अथवा बाजार की हींग 200 ग्राम, 150 ग्राम चूना और 500 ग्राम पुराना गुड़।

बनाने की विधि– सर्वप्रथम देशी गाय जैसे- साहिवाल, राठी, थारपारकर आदि का 5 किलो गोबर लेकर इसमें 5 लीटर पानी मिलाते हैं, तत्पश्चात इसमें 7 लीटर ताजा गौमूत्र व गुड़ मिलाते हैं– इस घोल को 4 दिनों तक ढ़ककर रखते हैं- साथ ही प्रतिदिन सुबह-शाम लकड़ी की सहायता से घोल को हिलाते हैं।

5वें दिन इस घोल में 25 ग्राम असली हींग अथवा बाजार की हींग 200 ग्राम तथा 150 ग्राम चूना मिलाते हैं, फिर पुनः 4 दिन ढ़ककर रखते हैं, तत्पश्चात इसे छानकर 50 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ क्षेत्रफल की फसल में प्रयोग करते हैं।

विशेष– निम्बादि कीटनियन्त्रक के छिड़काव से फसलों में लगने वाली दीमक पत्ती छेदक कीट तथा फंगस पूरी तरह नियन्त्रित होते हैं।

(3) करंजादि कीटनियन्त्रक– गोबर 30 किलो, गौमूत्र 50 लीटर, करंज पत्ते 4 किलो, आक पत्ते 4 किलो, इमली पत्ते 4 किलो, लेंटाना पत्ते 4 किलो, भांग पत्ते 4 किलो, अपामार्ग 4 किलो, अरण्ड पत्ते 4 किलो, यूकेलिप्टस पत्ते 4 किलो, सदाबहार पत्ते 4 किलो, आम पत्ते 4 किलो, धतूरा पत्ते 4 किलो, नीम पत्ता 4 किलो, पार्थिनियम (गाजर घास) 4 किलो, कसौन्दी पत्ते 4 किलो। उपरोक्त पौधों या पेड़ों के जितने प्रकार के पत्ते उपलब्ध हो जाये उतने डाल लें, उपलब्ध न होने पर भी इस कीटनियन्त्रक के असर में 19-20 का असर पड़ेगा अर्थात् ज्यादा फर्क नहीं पड़ेगा।

बनाने की विधि– एक 200 लीटर क्षमता वाला ड्रम में 50 लीटर गोमूत्र लेते हैं उसमें 30 किलो गोबर घोलते हैं, तत्पश्चात इसमें उपरोक्त 14 प्रकार के (या अधिकतम उपलब्ध) पत्तों को बारीक-बारीक करके उस ड्रम में मिला देते हैं, तत्पश्चात लकड़ी की सहायता से उसे हिलाते रहते हैं जब तक की सभी पत्ते गोबर एवं गौमूत्र मिश्रण में न मिल जाये। इसके पश्चात ड्रम को बंद कर 20-25 दिनों तक छोड़ देते हैं। उपरोक्त मिश्रण को बारीक कपड़े से छान लेते हैं।

अब छने हुए घोल को 5 लीटर मात्रा में 50 लीटर पानी मिलाकर फसल पर छिड़काव करते हैं।

विशेष– उपरोक्त कीटनियन्त्रक के छिड़काव से फसलों के निम्न रोग नियन्त्रित होते हैं। (क) बैंगन व टमाटर में चित्ती रोग, (ख) गन्ने का कण्डुवा रोग, (ग) मक्के पर लगने वाला टिड्डी रोग, (घ) धान पर लगने वाली पत्ता लपेटक सूँढ़ी तथा धान का खैरा रोग।

कुछ अन्य कीट नियन्त्रक उपाय

1. जीरा व धनियाँ आदि कोमल व नाजुक संवेदनशील फसलों पर तो केवल गौमूत्र छिड़कने से ही कीट मर जाते हैं।
2. फसलों पर जो तैला आ जाता है, उसके लिए दूध में थोड़ा गुड़ मिलाकर या ऊपर बताया गया कीटनियन्त्रक छिड़क देते हैं तो वो तुरन्त मर जाता है। एक एकड़ के लिए 3-4 लीटर दूध व 1 किलो गुड़ पर्याप्त होता है।
3. फंगस के लिए 15-20 दिन पुरानी 4-5 ली० छाछ 1 एकड़ के लिए पर्याप्त होती है।

कुदरती जीवामृत (नेचुरल जिबरेलिक एसिड)

फसलों में विशेष रूप से सब्जियों की चमक व ऊपज बढ़ाने के लिए विदेशी कम्पनियाँ 60 रुपये का एक ग्राम अर्थात् लगभग 50 हजार रुपये लीटर का जिबरेलिक एसिड बेचती हैं। इसके लिए 1 एकड़ जमीन में 6 माह से 1 साल पुराने गाय के गोबर के कण्डे या उपले 5 किलो लेकर 20 दिन पानी में डालकर एक ड्रम में किसी भी पेड़ के नीचे या कहीं भी छाया में रख दें और सुबह-शाम किसी भी लकड़ी के डण्डे से हिला दें। 10 दिन में यह 1 एकड़ के लिए जीवामृत तैयार हो जाता है। इसे छानकर 50 से 100 लीटर पानी में मिलाकर फलों, सब्जियों अथवा किसी भी फसल पर फल आने पर छिड़कें इससे जैविक उत्पादों की सुन्दरता व पैदावार दोनों ही बढ़ती है। यह जिबरेलिक एसिड से अधिक लाभकारी है।

फसल का जंगली जानवरों से बचाव

नील गाय, जंगली सुअर, हाथी एवं गीदड़ आदि जंगल के जानवरों से फसलों की सुरक्षा हेतु एक बहुत ही कारगर उपाय है, जिसे हम भी अपने संस्थान में अपना रहे हैं। अपने खेत के चारों तरफ एक साधारण सी रस्सी बांधकर उसमें लगभग 20-20 फिट की दूरी पर 2-2 फिट की लकड़ी की पतली डण्डियों पर दोनों सिरों के ऊपर 2-2 इंच की रूई या पुराने कपड़े को लगाकर उस पर शाम को डॉक्टर ब्राण्ड का काला फिनाइल लगा देते हैं। पहले 3-4 दिनों तक रोज ये काला फिनाइल लगाते हैं, फिर बाद में 3-4 दिनों में एक बार फिनाइल लगाते हैं और उसकी गंध से जंगली पशु खेत में नहीं आते। क्योंकि उनको लगता है कि ये गन्ध उनके जीवन के लिए खतरा बन सकती है। अत: वे खेत में प्रवेश ही नहीं करते। ये हमारा भी तथा भाई शूरवीर सिंह जी का कई वर्षों का आजमाया हुआ 100% सफल प्रयोग है।

उपरोक्त विधि से खेती करने वाले किसान की खेती में लागत कम होती है, जिससे स्वाभाविक रूप से उसकी आमदनी बढ़ेगी। आजकल रासायनिक खेती में उल्टा खतरनाक षड्यन्त्रकारी कुचक्र चल रहा है, लागत बहुत ज्यादा, फसल थोड़ी-सी ज्यादा और अन्त में किसान को घाटा, जबकि कुदरती खेती में लागत ना के बराबर, ऊपज पूरी व लाभ पूरा होता है। इस प्रक्रिया से खेती करने पर किसान व खेत में काम करने वाले मजदूर बीमार भी नहीं होते जबकि खाद व कीटनियन्त्रक खेतों में डालने से वे हवा व पानी में मिलकर पहले तो सीधे हमारे शरीर में जाते हैं तथा फसल व आहार के रूप में भी ये खाद-कीटनियन्त्रकों का विष हमारे शरीर में आता है। इससे कैंसर टी.बी. व संतान न होना पशुओं का नये दूध न होना, चर्म रोग, पेट, हृदय के रोग, शुगर, बी.पी. आदि बीमारियों के साथ-साथ विकलांग संतान पैदा होने का खतरा होता है। अत: कुदरती खेती करके ही हम अपनी व अपने देश की रक्षा कर सकते हैं।

कुदरती व विषमुक्त खेती का यह विषय गांव की सभा में स्वदेशी प्रचारक व योग शिक्षक को याद न भी हो तो बिन्दुवार उनको पढ़कर अवश्य सुनायें। इससे गाँव में एक बहुत बड़ी क्रान्ति होगी।

विषमुक्त जैविक व प्राकृतिक कृषि के लाभ

जैविक खेती से कम लागत में अधिक पैदावार होती है, रासायनिक खाद व कीटनियन्त्रकों पर होने वाला किसान का खर्च बच जाता है –

1. उत्पन्न खाद्यान्न में विटामिन, खनिज, व पोषक तत्व उच्च मात्रा मे होते हैं। 2. ये खाद्यान्न उच्च गुणवत्ता युक्त व स्वास्थप्रद होते हैं। 3. व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है तथा रोगो से मुक्त रहता है। 4. ये खाद्यान्न खाने मे स्वादिष्ट लगते हैं। 5. इस खाद्यान्न को हम लम्बे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं। 6. उत्पन्न खाद्यान्न ऊँचे दामों में बाजार में बिकता है, जिससे किसानो को लाभ होता है। 7.विषमुक्त भोजन से होने वाले भयंकर रोगों की असहनीय पीड़ा व इलाज पर होने वाले खर्च की बचत होती है। 8. हमारी जमीन बंजर होने से बचती है। 9. हम धरती को माँ कहते हैं इसलिए विषमुक्त/जैविक/प्राकृतिक खेती करके हम अपनी धरती माँ की धमनियों में जहर नहीं डालते हैं। 10. हमारी प्राचीन कृषि संस्कृति की रक्षा होगी, क्योंकि भारत मे कृषि एक सांस्कृतिक पक्ष है। 11. हमारे पशुधन का संवर्धन होता है।

घरेलु उपचार

एक-एक योग की प्रक्रिया और एक-एक जड़ी-बूटी पर हमारे पूवर्जों ने, ऋषि-मुनियों ने करोड़ों-लाखों व हजारों वर्षों तक निरन्तर शोध व अनुसंधान किया तथा उस जड़ी-बूटी से होने वाले लाभों के बारे में हमें बताया। ऐसी ही कुछ जड़ी-बूटियों जिसका परम पूज्य स्वामी जी महाराज एवं श्रद्धेय आचार्य जी ने लाखों-करोड़ों रोगियों पर प्रयोग किया व सबके लिये लाभप्रद पाया, वह सब लोगों के हित के लिये यहाँ प्रकाशित की जा रही है।

1. **वात रोग**–जोड़ों का दर्द, गठिया, कमर दर्द, गर्दन का दर्द, घुटनों का दर्द, सूजन आदि वातरोग :
   (1) हल्दी, मेथी-दाना व सौंठ- 100-100 ग्राम तथा अश्वगन्धा चूर्ण-50 ग्राम लेकर चूर्ण बनाकर सुबह-शाम खाने के बाद 1-1 चम्मच गुनगुने पानी के साथ लें।
   (2) लहसुन की 1 से 3 कली खाली पेट पानी से लेने से जोड़ों के दर्द में लाभ होता है, साथ ही बढ़ा हुआ कोलेस्ट्रॉल, ट्राइग्लिसराइड् सामान्य होता है। हृदय की शिराओं में आए हुए अवरोधों को भी दूर करने में लहसुन उपयोगी है।
   (3) मोथा-घास की जड़, जो कि एक गाँठ की तरह होती है, उसका पाउडर करके 1 से 2 ग्राम सुबह-शाम पानी या दूध से लेने से जोड़ों के दर्द व गठिया में आश्चर्यजनक लाभ मिलता है।
   (4) एरण्ड के पत्तों को पीसकर हल्का गरम करके जोड़ों पर लगाने से लाभ मिलता है।

   पतंजलि की औषधियाँ– च्यवनप्राश, शिलाजीत, दिव्य-पेय, श्वासारि प्रवाही, श्वासारि रस, सितोपलादि चूर्ण, पतंजलि बाम आदि।

2. **कफ रोग–** (1) दमा, अस्थमा, कफ, नजला, जुकाम, साइनस व जीर्ण कफ रोग-इत्यादि का घरेलू उपचार-बादाम गिरी-100 ग्राम, खाण्ड या बूरा-50 ग्राम, काली मिर्च-20 ग्राम का अलग-अलग पाऊडर बनाकर तत्पश्चात् मिलाकर एक चम्मच सायं खाने के बाद प्रयोग करें। (2) अदरक व तुलसी के पत्तों का काढ़ा बनाकर उसमें गुड़ मिलाकर पीने से सर्दी, खाँसी व नजला आदि में लाभ होता है।

   पतंजलि की औषधियाँ– च्यवनप्राश, शिलाजीत, दिव्य-पेय, श्वासारि प्रवाही, श्वासारि रस, सितोपलादि चूर्ण, पतंजलि बाम आदि।

3. **उच्च-रक्तचाप, कॉलेस्ट्रोल, हृदय-रोग, अम्लपित्त, उदर रोग एवं मोटापे में लाभप्रद लौकी का रस–** लौकी-500 ग्राम, पुदीना-7 पत्ते, तुलसी-7 पत्ते उक्त सभी से 1 कप रस निकालकर प्रतिदिन प्रातः काल खाली पेट पीयें, रोग अधिक होने पर सायंकाल भी पीयें।
   सावधानी– कड़वी लौकी का जूस न पीयें।

   पतंजलि की औषधियाँ– उच्च रक्तचाप के लिए-मुक्तावटी, हृदय रोगों के लिये-हृदयामृत वटी, अर्जुन की छाल, अकीक-पिष्टी, मोती-पिष्टी, संगेयशव पिष्टी आदि।

4. **पुरानी खांसी की अचूक दवा–** मुलेठी का एक छोटा टुकड़ा, 2 काली मिर्च व मिश्री का एक

छोटा टुकड़ा लेकर, इन तीनों को मुँह में लेकर धीरे-धीरे दो-तीन बार खाली पेट या खाने के बाद चूसें। इससे पुरानी से पुरानी खाँसी, गले की खराश, गला बैठना, स्वरभंग आदि में तत्काल एवं स्थायी लाभ होता है।

पतंजलि की औषधियाँ– श्वासारि-प्रवाही।

5. **मोटापा–** (1) गेहूँ, चावल, बाजरा, साबुत मूंग चारों को 500-500 ग्राम लेकर व धीम आँच पर सेककर दलिया बना लें। इसमें अजवाइन 20 ग्राम तथा सफेद तिल 50 ग्राम भी मिला लें। 50 ग्राम दलिया, 400 ग्राम पानी में डालकर पकायें। स्वादानुसार सब्जियाँ डालकर नियमित रूप से सेवन करने से मोटापा व मधुमेह में लाभ मिलता है। (2) प्रतिदिन सुबह, दोपहर व सायंकाल एक-एक अश्वगंधा पत्ते को हाथ से मसलकर गोली बनाकर भोजन से एक घण्टा पहले या खाली पेट जल के साथ लें। इससे एक सप्ताह में कई किलो वजन कम किया जा सकता है।

   पतंजलि की औषधियाँ– मेदोहर वटी।

6. **कील-मुहाँसों के लिए–** पानी ज्यादा पीयें, नीम के पत्ते 3-3 सुबह-शाम खायें, मिर्च-मसाला एवं गर्म चीजें कम खायें। **पतंजलि की औषधियाँ–** कायाकल्पवटी, नीमघन वटी, गिलोयघन वटी सभी 1-1 गोली खाली पेट लें।

7. **दन्तरोग–** हल्दी, सैंधा नमक, फिटकरी का फूला, त्रिफला, नीम के पत्ते या छाल, बबुल की छाल, सभी 100-100 ग्राम तथा लौंग 20 ग्राम मिलायें। सबका पाउडर करके सुबह एवं रात्रि सोते समय दाँतों में मंजन करें, इससे पायरिया, मुँह की बदबू, ठण्डा-गर्म पानी लगना इत्यादि रोग ठीक हो जाता है।

   पतंजलि की औषधियाँ– दंतकान्ति पेस्ट, दिव्य दंत मंजन।

8. **नेत्र-रोग–** सफेद प्याज का रस, अदरक का रस, नींबू का रस-सभी 10-10 ग्राम व शहद-50 ग्राम लेकर, छानकर व मिलाकर शीशी में भरकर फ्रीज में रख लें। ये दवा बिना फ्रीज के भी 1 से 2 महीने तक खराब नहीं होती। प्रात:-सांय 1-1 बूँद आँखों में डालने से चश्मा या काला/सफेद मोतिया में लाभ होता है। यह दवा बनाने में असुविधा हो तो नजदीकी पतजंलि चिकित्सालय से ले सकते हैं। सुबह उठते ही ठण्डे पानी को मुँह में भरकर छींटे मारने से भी आँखों की रोशनी बढ़ती है।

9. **कब्ज, गैस व अन्य उदर रोग–** आँवला व ऐलोविरा-4-4 चम्मच खाली पेट गर्म पानी से लेने से कब्ज में तुरन्त राहत मिलती है। आँवला व एलोविरा जूस कब्ज दूर करने में साथ ही पूरे शरीर को शक्ति देता है और शरीर की कोशिकाओं के क्षय (डिजनरेशन) से बचाकर उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्रदान करता है।

    पतंजलि की औषधियाँ– दिव्य चूर्ण, हरीतकी चूर्ण, त्रिफला चूर्ण, उदरकल्प चूर्ण, गैसहर चूर्ण।

10. **कब्ज व अन्य उदर रोगों में उपयोगी आहार–** अमरूद, पपीता, सेब, गाजर, लौकी एवं सभी हरी सब्जियाँ, मुनक्का, अंजीर आदि। कब्ज को दूर करने के लिए खाना चबा-चबाकर खायें तथा उषापान करें।

11. **शीतपित्त (छपाकी) आदि–** (1) जब भी शीतपित्त हो तो 4 चम्मच घी, 4 चम्मच खाण्ड या बूरा व 4 से 5 काली मिर्च मिलाकर खा लें। (2) नारियल के तेल में कपूर मिलाकर शरीर पर लगायें।

12. **बवासीर–** (1) नागदोन के 3-3 पत्ते सुबह-शाम खायें। (2) खाली पेट एक कप ठण्डे गाय के दूध में एक नींबू निचोड़कर तुरन्त पीयें।

पतंजलि की औषधियाँ– अर्शकल्प वटी।

13. **पथरी से मुक्ति के लिए पत्थरचट्टा–** नित्य प्रातः 2-3 पत्थरचट्टा के पत्तों को चबा-चबाकर खायें, कुछ ही दिनों के सेवन से ही समस्त प्रकार की पथरी व मूत्र विकारों में लाभ होता है।
पतंजलि की औषधियाँ– अश्मरीहर रस, अश्मरीहर क्वाथ।

14. **रूसी नाशक सरल प्रयोग–** (1) तवे पर सेका हुआ सुहागे (टंकण) का फूला-5 ग्राम, नारियल का तेल-5 मिलीग्राम व दही-15 मिलीग्राम। उक्त तीनों को ठीक प्रकार से मिलाकर बालों में लगाएँ। लगभग एक घण्टा बाद बालों को धो लें। (2) हरड़, बहेड़ा तथा आँवलें के चूर्ण (त्रिफला) को समान मात्रा में लेकर रात्रि में पानी में भिगोकर सुबह उसी पानी से सिर को धोने से रूसी व बालों के अन्य रोग भी दूर होते हैं तथा इसी पानी से नेत्रों को धोने से नेत्र-ज्योति बढ़ती है।
पतंजलि की औषधियाँ– केशकान्ति शैम्पू व दिव्य केश तेल।

15. **दुर्बलता के लिए अश्वगन्धा चूर्ण–** अश्वगन्धा चूर्ण 1-1 चम्मच (3 से 5 ग्राम) सुबह-शाम दूध के साथ सेवन करने से दुबले व्यक्तियों का एक माह में लगभग 3 से 5 किलो तक वजन बढ़ जाता है। इस चूर्ण का सेवन करने से शारीरिक दुर्बलता, वातरोग व स्नायु रोगों में भी विशेष लाभ होता है।
पतंजलि की औषधियाँ– च्यवनप्राश, बादाम पाक, अमृत रसायन, शिलाजीत व अश्वशिला कैप्सूल आदि।

16. **पीलिया में लाभदायक घरेलू उपचार–** (1) पुनर्नवा की जड़ के छोटे-छोटे टुकड़े करके माला बनाकर पहनने से पीलिया में तुरन्त लाभ मिलता है। (2) लगभग 10 ग्राम पुनर्नवा की जड़ को कूटकर एक कप पानी में मिलाकर सुबह-शाम पिलाने से पीलिया ठीक होता है तथा रोगी के खून में पित्तरंजकों की मात्रा कम होने लगती है। (3) 20 ग्राम टोटला क्वाथ या श्योनाक की छाल को मिट्टी के बर्तन में तीन सौ मिलीलीटर पानी में रातभर भिगोकर रखें तथा सुबह खाली-पेट पीने से पीलिया में लाभ मिलता है। (4) **विडाल डोडे** को रात्रि में पानी में भिगोकर रखें, प्रातः इसे घिस ले तथा 2-3 बूँद रोगी की नासिका में टपका दें या सुंघाएँ। ऐसा करने से रोगी को आराम मिल जाता है। (5) **बड़ी दूधी** को घिसकर पीने से पीलिया रोग शान्त हो जाता है।
पतंजलि की औषधियाँ– सर्वकल्प क्वाथ, उदरामृत वटी, पुनर्नवारिष्ट, टोटला क्वाथ आदि।

17. **सिरदर्द, अनिद्रा तथा माईग्रेन, स्मृतिदौर्बल्य, सिर में भारीपन, साइनस का उपचार–** (1) बादाम का तेल या गाय का घी थोड़ा सा गुनगुना करके 5-5 बूंद नाक में सुबह खाली पेट तथा सायंकाल सोते समय डालने से उपरोक्त रोग ठीक होते हैं। (2) सिरदर्द के लिए-कपूर, अजवायन सत्, पिपरमेन्ट को बराबर मात्रा में मिला लें, सिरदर्द होने पर लगायें। (3) दिव्यधारा 3-4 बूंद गर्म पानी में डालकर भाप लेने से सर्दी-जुकाम में तुरन्त आराम मिलता है।

पतंजलि की औषधियाँ-दिव्य- धारा, मेधावटी, पतंजलि-बाम।

18. **सर्दी, जुकाम व बुखार (ज्वर) के लिए प्रयोग–** सात पत्ते तुलसी के, पाँच लौंग, कूटकर एक गिलास पानी में पकायें, आधा रहने पर सैंधा नमक डालकर गर्म-गर्म पी जायें तथा कुछ समय के लिए वस्त्र ओढ़कर पसीना ले लें। इसको प्रतिदिन दो-तीन बार, लगातार दो या तीन दिन तक ले सकते हैं।
पतंजलि की औषधियाँ– ज्वर के लिए-ज्वर नाशक क्वाथ, गिलोय क्वाथ, गिलोय घन वटी, नीम घन वटी आदि। सर्दी व जुकाम के लिए-लक्ष्मीविलास रस, संजीवनी वटी, पतंजलि बाम व दिव्य धारा आदि।

19. **मधुमेह का उपचार–** (1) खीरा, करेला और टमाटर एक-एक की संख्या में लेकर जूस निकालकर, सुबह खाली पेट पीने से मधुमेह नियन्त्रित होता है। (2) जामुन की गुठली का पाउडर करके, एक-एक चम्मच सुबह-शाम खाली पेट पानी से लेने से मधुमेह ठीक होता है। (3) नीम के 7 पत्ते सुबह खाली पेट चबाकर अथवा पीसकर पानी के साथ लेने से मधुमेह में आराम मिलता है। (4) सदाबहार के 7 फूल खाली पेट-जल के साथ चबाकर सेवन करने से भी मधुमेह में लाभ मिलता है।
पतंजलि की औषधियाँ– मधुनाशिनी वटी।

20. **श्वेत प्रदर, प्रमेह, धातु रोग एवं मासिकधर्म सम्बन्धी अतिरक्तस्राव–** शीशम के 8 से 10 पत्ते व 25 ग्राम मिश्री को पीसकर एक गिलास पानी में मिलाकर प्रात:काल सेवन करें। यह प्रयोग नकसीर को दूर करने के लिए भी लाभकारी है। सर्दियों में इसका प्रयोग चार-पाँच काली मिर्च मिलाकर करें। पतंजलि की औषधियाँ-महिलाओं के लिए-स्त्री रसायन वटी, पुरुषों के लिए-चन्द्रप्रभा वटी।

21. **नकसीर–** शीशम के पत्तों के प्रयोग के अतिरिक्त नकसीर में दूर्वा (दूब) के रस को नाक में दो-दो बूँद डालने से नकसीर ठीक हो जाता है।

22. **पैरों की बिवाई या विपादिका का मलहम–** सरसों का तेल 50 मिलीग्राम गर्म करें, जब तेल उबलने लगे तो उसमे देशी मोम 25 मिलीग्राम दें। मोम पूरी तरह मिलने के बाद बर्तन को आँच से उतार लें व ठण्डा होने दे। थोड़ा गुनगुना होने पर उसमे 5 मिलीग्राम देशी कपूर मिलाकर रख लें। यह मलहम फटी हुई ऐडियों पर रात्रि को सोने से पहले लगायें। पतंजलि की औषधियाँ - क्रेकहील क्रीम, कायाकल्प तेल।

23. **त्वचा रोग एवं चेहरे के दाग धब्बे व झुर्रियाँ–** एलोविरा के पत्ते को छीलकर गूदेदार भाग को मुख व त्वचा पर लगाने से त्वचा की कान्ति बढ़ती है तथा दाग, धब्बे व झुर्रियाँ दूर होती हैं। पतंजलि की औषधियाँ-कान्ति लेप, एलोविरा जैल, तेजस ब्यूटी क्रीम व तेजस एन्टीरिंकल क्रीम, कायाकल्प तेल आदि।

नोट: *गम्भीर रोगी औषधिय प्रयोग से पूर्व किसी योग्य चिकित्सक का मार्गदर्शन लें इसके लिए आप अपने नजदीकी पतंजलि चिकित्सालय से से योग व आयुर्वेदिक परामर्श ले सकते हैं।*

आयुर्वेद के अनुसार आहार-विहार एवं मुख्य रोगों के लिए श्रेष्ठ औषधियों का वर्णन

1. आरोग्य अथवा अनारोग्य में आहार का अद्वितीय स्थान है। आहार के साथ ही सारे विभिन्न प्रकार के आचरणों का भी शरीर पर भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है। इन दोनों, आहार व विहार को लक्ष्य में रखते हुए हमारे आयुर्वेदिक मनीषियों ने विशेष परिस्थियों में अनेक विशिष्ट प्रकार के आहार-द्रव्यों, औषधि-द्रव्यों एवं आचरणों का निर्देश (Prescription) एवं निषेध (Prohibition) किया है। इनमें कुछ सर्वश्रेष्ठ उपायों के साथ-साथ विशेष रोगों के लिए कुछ विशिष्ट, वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों का आयुर्वेद के ग्रन्थों में उल्लेख किया गया है उनमें से कुछ मुख्य प्रयोगों का उल्लेख इस प्रकार है :-
2. जीवन की स्थिरता के लिए प्राकृतिक व सात्विक सहज प्राप्त भोजन सर्वश्रेष्ठ है।
3. शरीर में समता व प्रसन्नता लाने के लिए जल का सेवन करना उत्तम है।
4. शारीरिक शक्ति प्रदान करने वाले द्रव्यों में दूध सर्वश्रेष्ठ माना गया है।
5. भोजन में स्वाद उत्पन्न करने के लिए नमक सर्व सुलभ व सहज माना गया है।
6. अच्छे स्वाद के लिए भोज्य पदार्थों में आवश्यकतानुसार खट्ठे पदार्थ का मिश्रण, सेवन श्रेष्ठ है।
7. कफ और पित्त दोषों को शान्त करने के लिए शहद सर्वोत्तम है।
8. वात और पित्त दोषों की शान्ति के लिए शुद्ध घी सर्वोत्तम माना गया है।
9. शरीर में दृढ़ता व स्फूर्ति लाने के लिए शारीरिक व्यायाम श्रेष्ठ है।
10. मूत्र की मात्रा में वृद्धि के लिए गन्ना (Sugar cane) व उसका रस सर्वोत्तम है।
11. पुरीष की मात्रा में वृद्धि के लिए जौ द्वारा बने हुए पदार्थ श्रेष्ठ है।
12. सुविधापूर्वक विरेचन (Purgation) के लिए त्रिवृत् या कुटकी (*Operculina turpethum* R.B.) सर्वोत्तम मानी गई है।
13. मृदु (हल्के) विरेचन के लिए आरग्वध या अमलतास को श्रेष्ठ औषधि मानी गयी है।
14. तीव्र (बहुत अधिक) विरेचन के लिए स्नुही या थूहर (*Euphorbia nerifolia* Linn.) के दूध का विधि अनुसार प्रयोग श्रेष्ठ है।
15. सिर के दोषों के संशोधन के लिए अपामार्ग (*Achyranthes aspera* Linn.) का उचित प्रयोग करना सर्वश्रेष्ठ है।
16. वात दोष एवं वात से उत्पन्न रोगों के उपचार के लिए रास्ना (*Pluchea lanceolata* Oliver Hiern) का अन्तर व बाह्य प्रयोग को श्रेष्ठ माना है।
17. शरीर पर रसायन का (Rejuvenating) प्रभाव डालने वाली औषधियों में आँवला (*Emblica*

officinalis Gaertn.) का आहार आदि किसी भी रूप में प्रयोग करना श्रेष्ठ माना गया है।

18. शरीर में बढ़े हुए वात दोष को कम करने के लिए एरण्ड (*Ricinus communis* Linn.) की जड़ से बनी हुई औषधि श्रेष्ठ औषधि है।
19. पाचन शक्ति की वृद्धि, वात के अनुलोमन एवं कब्ज को दूर करने के लिए पिप्पलीमूल (root of *Piper longum* Linn.) श्रेष्ठ औषधि मानी गयी है।
20. पाचन शक्ति को बढ़ाने, वात के अनुलोमन तथा बवासीर और शूल की चिकित्सा के लिए चित्रक अथवा चीते (*Plumbago zeylanica* Linn.) की जड़ से बनी हुई औषधियाँ सर्वोत्तम मानी गई है।
21. शरीर में शीतलता उत्पन्न करने के लिए, उदीच्य (*Pavonia odorata* Willd.) सर्वश्रेष्ठ औषधि मानी गयी है।
22. ज्वर, वातरक्त और कफ दोषों के शमन के लिए गिलोय (*Tinospora cordifolia* Miers) को रसायन व सर्वश्रेष्ठ माना गया है।
23. स्तम्भन, पाचन-शक्ति की वृद्धि तथा वात और कफ की शान्ति एवं संग्रहणी व पुराने पेट के रोगों के लिए बिल्व या बेल (*Aegle marmelos* Corr.) का प्रयोग श्रेष्ठ माना गया है।
24. वात के अनुलोमन एवं तीनों दोषों के शमन के लिए अतिविषा या अतीस (*Aconitum heterophylum* Wall.) को श्रेष्ठ औषधि मानी गयी है।
25. मूत्रकृच्छ्र (Dysuria) अथवा मूत्र त्याग में कष्ट होना और वात शमन के लिए गोक्षुर या गोखरु (*Tribulus terrestris* Linn.) को सर्वश्रेष्ठ माना गया है, साथ ही शिलाजीत को भी मूत्ररोगों में श्रेष्ठ माना गया है।
26. विरेचन (Purgation), पाचन-शक्ति की वृद्धि, वात के अनुलोमन एवं वात और कफ दोषों की शान्ति के लिए अम्लवेतस (*Rheumenodi* Wall) श्रेष्ठ औषधि मानी गयी है।
27. ग्रहणी (Sprue), सूजन, बवासीर और स्नेहन चिकित्सा (Oleation therapy) के अनुचित प्रयोग से उत्पन्न रोगों की चिकित्सा के लिए तक्र (Butter-Milk) का नियमित रूप से सेवन श्रेष्ठ माना गया है।
28. भोजन में उत्तम स्वाद के लिए तथा कफ दोषों की शान्ति के लिये तथा दाँतों को मजबूत बनाने के लिए तिल के तेल से नियमित रूप से कुल्ले व गरारे करना सर्वोत्तम माना गया है।
29. शरीर की दुर्गन्ध और जलन दूर करने के लिए चन्दन का लेप करना श्रेष्ठ माना गया है।
30. अच्छी दृष्टि, अच्छे बालों एवं स्वर के लिए तथा घाव भरने और त्वचा का रंग ठीक करने के लिए मधुक या मुलेठी (*Glycyrrhiza glabra* Linn.) का प्रयोग श्रेष्ठ माना गया है।
31. सभी तरह के ज्वरों के लिए मुस्ता या नागरमोथा (*Cyperus rotundus* Linn.) तथा पर्पटक या पित्तपापड़ा (*Fumaria parvifl ora* Lam.) सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

32. वमन (Vomiting) की चिकित्सा के लिए लाजा या खील (Fried paddy) श्रेष्ठ है।

33. मधुमेह, प्रमेह आदि कष्टसाध्य मूत्र-विकारों के लिए आँवला और हल्दी का प्रयोग श्रेष्ठ है।

34. वात और कफ से होने वाले रोगों जैसे जीर्ण उदर रोग व कब्ज की चिकित्सा के लिए हरड़ को श्रेष्ठ माना गया है।

35. यकृत् (Liver) और प्लीहा (Spleen) के रोगों के लिए पिप्पली का (*Piper longum*) प्रयोग सर्वोत्तम है।

36. टूटी हड्डियों को जोड़ने के लिए लाक्षा या लाख (Lac) सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

37. चर्बी और वात की अधिकता से होने वाले रोगों की चिकित्सा के लिए गुग्गुलु (*Commiphora mukul* Engl.) सर्वश्रेष्ठ औषधि है। व्रण और घावों को भरने के लिए भी गुग्गुलु बहुत उपयोगी औषधि है।

38. अतिसार (Diarrhoea) और पेचिश (Dysentery) के लिए कुटज (*Holarrhena antidysenterica* Wall.) सबसे अच्छी औषधि है।

39. बवासीर, कुष्ठ जैसे कष्टसाध्य चर्मरोगों एवं घातक प्रकार के अर्बुद (Tumour) की चिकित्सा के लिए भल्लातक या भिलावा (*Semecarpus anacardium* Linn.f.) श्रेष्ठ औषधि है।

40. कृमि (Bacteria, virus, bacillii and intestinal worm) एवं कृमि से उत्पन्न रोगों को नष्ट करने के लिए विडंग या वायविडंग (*Embelia ribes* Burm.f.) सर्वश्रेष्ठ है।

41. स्मरण-शक्ति बढ़ाने के लिए ब्राह्मी (*Bacopa monnieri* Pennell) श्रेष्ठ दवा है।

42. वात-संस्थान अथवा नाड़ी संस्थान (Nervous system) के रोगों की चिकित्सा के लिए लहसुन (*Allium sativum* Linn.) सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

43. अजीर्ण की चिकित्सा के लिए अदरक सर्वश्रेष्ठ है।

44. श्वास (Asthma) और कास (Bronchitis) की चिकित्सा के लिए वासा, पिप्पली एवं कण्टकारी या कटेली (*Solanum xanthocarpum* Schrad. & Wendl) सर्वश्रेष्ठ है।

45. वाजीकरण गुणों की वृद्धि के लिये अश्वगंधा एवं कौञ्च चूर्ण का सेवन श्रेष्ठ है।

46. अश्वगंधा, शतावर, सफेद मूसली व कौंच का चूर्ण यौन दुर्बलता के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

47. अष्टवर्ग जीवनीय रसायनों में सर्वश्रेष्ठ है।

48. सब रोगों की एक मात्र निर्विवादित, प्रामाणिक, वैज्ञानिक व प्रभावशाली अनुभूत सर्वश्रेष्ठ औषधि प्राण है।

49. समय पर सात्विक व संतुलित भोजन करना आरोग्य का सबसे बड़ा मंत्र है।

50. नास्तिक वर्जनीय चीजों में सर्वश्रेष्ठ है।

51. लंघन व्याधि विनाश के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

52. आंव, संग्रहणी, पुरानी खांसी व हृदय रोगों के लिए अनार सर्वश्रेष्ठ है।

53. आंव व जीर्ण संग्रहणी के लिए तक्र कल्प सर्वश्रेष्ठ है।

54. भूंई आंवला, पुनर्नवामूल व श्योनाक की छाल का रस हैपेटाइटिस व लिवरसिरोसिस के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

55. जीरा व शतावरी दूध की वृद्धि के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

56. खूबकला, मुनक्का व अंजीर टाइफायड के लिए अचूक व सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

57. पथरी के लिए कुलथी की दाल व पत्थरचट्टा सर्वश्रेष्ठ है।

58. गांठ को कम करने के लिए हरिद्रा सर्वश्रेष्ठ है।

59. घाव को भरने के लिए विधारा सर्वश्रेष्ठ है।

60. पेट के कृमि के लिए मरुआ या आड़ू के पत्तों का रस सर्वश्रेष्ठ है।

61. शोथ को दूर करने के लिए पुनर्नवा सर्वश्रेष्ठ है।

62. शरीर से हो रहे खून के बहाव या रिसाव (ब्लिडिंग) को कम करने के लिए शीशम के पत्ते का रस सर्वश्रेष्ठ है।

63. डेंगु व प्लेटलेट्स की कमी के लिए गिलोय रस, ज्वारा रस, घृत कुमारी व पपीते के पत्रों का रस सर्वश्रेष्ठ है।

64. कैंसर के लिए गेंहू का ज्वारा, घृतकमारी, गिलोय, तुलसी व नीम पत्र सर्वश्रेष्ठ है।

65. मोटापा, कब्ज, कोलेस्ट्रोल, चर्मरोग एवं कैंसर जैसे रोगों में गोमूत्र अर्क सर्वश्रेष्ठ है।

66. भिरड़ के छत्तें से सिद्ध किया हुआ नारियल तेल गंजापन के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

67. अदरक का रस, सफेद प्याज का रस, निम्ब भस्म एक-एक भाग तथा शहद 3 भाग मिलाकर आँख में डालना नेत्र रोगों के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

68. कोलेस्ट्रोल, हृदयरोग व मोटापे के लिए लौकी का रस सर्वश्रेष्ठ है।

69. खीरा, करेला व टमाटर का रस मधुमेह के लिए सर्वश्रेष्ठ है।

नोट :– *हमारे सभी कार्यकर्त्ता गाँव-गाँव व घर-घर जाकर लोगों को इकट्ठा कर सामूहिक रूप से ग्राम निर्माण से राष्ट्र निर्माण व भारत स्वाभिमान संकल्प पत्र के विषयों को कण्ठस्थ करके बतायें या पढ़कर सुनाये।*

आन्दोलन के बारे में पूरी जानकारी के लिए भारत स्वाभिमान संकल्प पत्र का अवलोकन करें।

आज से लगभग 5 वर्ष पूर्व प्रकाशित भारत स्वाभिमान के व्यवस्था परिवर्तन पत्रक के कुछ अति महत्वपूर्ण अंश

भारत का स्वर्णिम अतीत व वर्तमान की चुनौतियां: वैदिक काल भारत का स्वर्णिम समय या युग था। भारत प्रत्येक क्षेत्र में विश्व का सिरमौर रहा है। सम्पूर्ण विश्व धर्म व राजनीति से लेकर शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून, कृषि व अर्थ-व्यवस्थादि में हमारे पूर्वज राजा, महाराजाओं व ऋषि-मुनियों से मार्गदर्शन प्राप्त करता रहा व उनके नैतिक व आध्यात्मिक नेतृत्व में कार्य करता रहा है। महाभारत के बाद से हमारा सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक व राजनैतिक पतन प्रारम्भ हुआ। फिर भी अनेक प्रकार के विघ्नों, बाह्य आक्रमणों व आन्तरिक संघर्षों के बावजूद 18वीं शताब्दी तक भारत आर्थिक, शैक्षणिक व आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व का एक आदर्श राष्ट्र था।

यह बात स्वयं टी. बी. मैकॉले ने भी ब्रिटिश संसद में 2 जनवरी 1835 को स्वीकार की और कहा– 'मैं भारत में पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण– सभी जगह घूमा, लेकिन पूरे भारत में मुझे एक भी भिखारी या चोर दिखाई नहीं दिया। भारत की समृद्धि व उच्च नैतिक मूल्यों को देखते हुए मुझे नहीं लगता कि हम कभी भी भारत पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, जब तक कि हम भारत की रीढ़ की हड्डी आध्यात्मिक व सांस्कृतिक शिक्षा व्यवस्था के स्थान पर यह स्थापित न कर लें कि विदेशी व अंग्रेजी शिक्षा-व्यवस्था भारत की शिक्षा-व्यवस्था से अधिक महान् है।

सातवीं शताब्दी से प्रारम्भ हुए विदेशी आक्रमणों व अन्त में अंग्रेजों के द्वारा देश पर किए गए अत्याचारों, जुल्मों व लूट ने इस देश को पूरी तरह तोड़कर रख दिया। अंग्रजों ने लगभग 350 से 400 लाख करोड़ रुपये की आर्थिक लूट के साथ-साथ इस देश के नैतिक व चारित्रिक मूल्यों से युक्त शिक्षा-व्यवस्था, आदर्शों एवं पूरी सामाजिक संरचना को ही ध्वस्त कर दिया। पूरे देश में जाति, प्रान्त, मजहब व भाषाओं के आधार पर फूट डाली व देशवासियों को लड़ाया, शराब पीना व वेश्यावृत्ति करना सिखाया, जिसको हमारे पूर्वज पाप, अधर्म, अपराध व अनैतिक मानते थे, मांसाहार करना भी घोर पाप समझते थे। किन्तु दुष्ट, क्रूर, निर्दयी अंग्रेजों ने 1760 में शराब की दुकानें, मांस के लिए पशुओं के कत्लखाने व व्यभिचार के लिए वेश्यालय खोल दिये और इस प्रकार देश को क्रूरता के साथ पूरी तरह बर्बाद कर दिया।

अब हमारे सामने सबसे पहली चुनौती यह है कि हमें देश का नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक व आध्यात्मिक उत्थान करना है। जाति-प्रथा, दहेज-प्रथा, बलि-प्रथा व अन्य रूढ़िवादी अज्ञानमूलक भ्रान्त अन्धविश्वासों जैसे कि वहम, जादू-टोना, भूत-प्रेत व अन्य पाखण्डों से देश को बाहर निकालना है। शराब, तम्बाकू व अन्य नशों से देश का सर्वनाश हो रहा है। इन नशों व दुर्व्यसनों से व्यक्ति, गाँव, समाज व राष्ट्र को मुक्त करने के लिए योगाभ्यास, सत्संग, स्वाध्याय, संस्कृति व संस्कारों की परम्परा को पुनः प्रतिष्ठापित करना है। सोलह-संस्कार, पंचमहायज्ञों व चार वर्णाश्रम धर्मों से युक्त सार्वभौमिक व वैज्ञानिक वैदिक संस्कृति को पुनः सामाजिक जीवन में समाहित करना है। गो-हत्या, कन्या-भ्रूणहत्या, दहेज-हत्या आदि पापों व जुए आदि सामाजिक बुराइयों से इस देश को मुक्त कराना है तथा रक्त-दान, नेत्र-दान व वृक्षारोपण आदि पुण्य-कार्यों को प्रोत्साहन देना है।

मैकाले का षड्यंत्र

भारत में चल रही शिक्षा पद्धति का प्रारूप लगभग 200 वर्ष पूर्व टी.बी. मैकॉले द्वारा भारत को सदियों तक गुलाम रखने के लिये तैयार किया गया था। मैकॉले इस सत्य को भली-भाँति जानता था कि नीच या हीन चरित्र के लोग कभी भी उच्च चरित्र के लोगों को गुलाम नहीं बना सकते।

मैकॉले ने कहा था– "We must do our best to form a class who may be interpreters between us and the millions whom we govern; a class of persons, Indian in blood and colour, but English in taste, in opinions, in words and in intellect" (Macaulay 1835)

अर्थात् मैकाले मानता था कि भारत में लागू की गई अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति से पढ़कर निकलने वाले विद्यार्थी रूप, रंग, खून व शरीर से भारतीय और विचार, आचरण, मान्यताओं व आत्मा से अंग्रेज होंगे।

मैकॉले द्वारा निर्मित भारत की वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था में भारतीयों के स्वाभिमान व आत्मसम्मान को नष्ट करने के लिए तथा देश के बच्चों का नैतिक व चारित्रिक पतन करने हेतु हम भारतीयों के मन-मस्तिष्क में बचपन से ही अपने पूर्वजों के ज्ञान, जीवन व चरित्र के बारे में, एक षड्यन्त्र के तहत झूठी, मनगढ़न्त, निराधार व अपमानजनक बातें पढ़ाई जा रही हैं, जिससे हम भारतीय हर बात में पश्चिम के लोगों अर्थात् अंग्रेजों, पश्चिम के विचार, दर्शन और संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ मानकर स्वयं से व अपने पूर्वजों से घृणा करने लगे हैं। आजादी के इन 66 वर्षों के बाद भी यह घृणित व अपमानजनक षड्यन्त्र हमारी शिक्षा-व्यवस्था में एक कलंक की तरह आज तक जारी है। हम इस षड्यन्त्र को पूरी तरह समाप्त कराकर सम्पूर्ण शिक्षा-व्यवस्था का भारतीयकरण या स्वदेशीकरण करायेंगे।

अपराधियों के लिए कठोर कानून जरूरी

भ्रष्टाचारी, बलात्कारी, आतंकवादी, मिलावट करने वाले तथा जहरीला प्रदूषण फैलाने वालों को मृत्युदण्ड या आजीवन कारावास जैसे कठोर दण्ड दिलवाने के लिए नये कानून बनवाने और इन अपराधियों को सजा मिलने में देरी न हो इसके लिए जिला या राज्यस्तर पर विशेष न्यायालयों की स्थापना करवानी है जहाँ 2 से 3 महीनों में सुनवाई पूर्ण करके दण्डात्मक कार्यवाही पूरी की जा सके। सज्जनों को सम्मान व संरक्षण तथा अपराधियों को दण्ड न मिलने के कारण ही देश में सामाजिक अन्याय, असुरक्षा व अविश्वास की भावना पैदा होती है।

देश की दुर्दशा व गलत नीतियों के लिए जिम्मेदार कौन?

1. राजनेता
2. ईमानदार लोगों की राजनीति से घृणा
3. प्रतिष्ठित व स्थापित लोगों में साहस का अभाव

मैंने यह अभियान क्यों शुरू किया?

मैंने अपनी सम्पूर्ण प्रतिष्ठा दाँव पर लगाकर कि लोग क्या कहेंगे? या जमाना क्या कहेगा? इसकी परवाह किए बिना इन अधिकांश भ्रष्ट, बेईमान व ताकतवर लोगों को चुनौती दी है और इन भ्रष्ट राजनैतिक व्यवस्थाओं व नीतियों को बदलने का एकतरफा दृढ़ संकल्प किया है। सच बात तो यह है कि हमारा यह अभियान किसी के खिलाफ बगावत नहीं है और न ही कोई विद्रोह या बखेड़ा। मैंने देश के प्रति अपना कर्त्तव्य, धर्म, जिम्मेदारी या राष्ट्रधर्म मानकर इस आन्दोलन को प्रारम्भ किया है।

हमारा उद्देश्य देश की नीतियों एवं कानूनों को अच्छा बनवाकर गरीबी, भूख, अभाव, बेरोजगारी, अशिक्षा व भ्रष्टाचार से मुक्त शक्तिशाली भारत बनाना है। लेकिन मुझे पूरी आशंका है कि सरकारें चलाने वाले व देश की नीतियाँ बनाने के लिए जिम्मेदार अधिकांश भ्रष्ट व बेईमान नेता इस आन्दोलन को अपने खिलाफ ही मानेंगे। लेकिन फिर भी मैं मानता हूँ कि देशभक्त व ईमानदार नेता व देश के करोड़ों लोग हमारे साथ खड़े होंगे और अन्ततः देवत्व विजयी होगा व असुरत्व पराजित होगा। असत्य, अधर्म, पाप व अन्याय हमेशा से पराजित होते आये हैं तथा आगे भी पराजित ही होंगे।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, महर्षि वसिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र व महान् कूटनीतिज्ञ चाणक्य से लेकर महर्षि दयानन्द आदि हमारे सभी पूर्वजों ने सदैव पाप, अन्याय, अधर्म व असत्य का प्रखर विरोध किया है। अन्याय व पाप के विरोध व विनाश के अतिरिक्त हमारे सभी महापुरुषों ने और किया ही क्या है?

एक सामूहिक भय या डर व स्वामीजी का उत्तर

भारत-स्वाभिमान आन्दोलन के लक्ष्य, उद्देश्य व नीतियों आदि के बारे में सब-कुछ सुनकर लोग कहते हैं, ''बाबा! आप कर तो सब-कुछ ठीक रहे हैं, हम सब भारतीय भी यही चाहते हैं कि यह स्वाभिमान का काम तो होना ही चाहिए।'' फिर मैं पूछता हूँ कि तुम डरते क्यों हो? तो वे उत्तर देते हैं:

1. बाबा ये भ्रष्ट व बेईमान लोग आपके जीवन को कहीं खतरा पैदा न कर दें। हम आपको खोना नहीं चाहते।
2. ये लोग बहुत ताकतवर हैं, इनके पास अथाह धन-सम्पत्ति है; ये लोग बाहुबली हैं, ये बड़े पापी व निर्दयी हैं, ये कुछ भी कर सकते हैं।
3. ये बेईमान लोग आपके खिलाफ चरित्रहनन का कोई भी खतरनाक षड्यन्त्र रच सकते हैं और आप पर झूठे आरोप लगाकर अथवा कानूनी दाव-पेचों में फँसाकर आपको बदनाम करने का घृणित प्रयास कर सकते हैं। सरकारों के पास बहुत ताकत होती है, उसका दुरुपयोग करके आपको बदनाम करने, कुचलने या दबाने का कोई भी असफल घृणित प्रयास कर सकते हैं अथवा झूठे मुकद्दमों द्वारा खतरनाक धाराओं में फँसाकर आपकी प्रतिष्ठा पर प्रहार कर सकते हैं।

स्वामीजी ने आज से लगभग 5 साल पहले ये उत्तर दिया था जो व्यवस्था परिवर्तन नाम के पत्रा में छपा था। उसे ही हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

पापी लोगों के तन, मन, विचार व जीवन, पाप से इतने कमजोर हो जाते हैं कि वे शक्ति व सम्पत्ति

युक्त होते हुए भी शक्तिहीन रहते हैं और वे खुद ही अपने पाप से मरे हुए होते हैं, वे कभी भी किसी पुण्यात्मा को नहीं मार सकते। उदाहरण के लिए– रावण, कंस, दुर्योधन व शिशुपाल आदि भगवान् श्रीराम व योगेश्वर श्रीकृष्ण का कुछ भी नहीं बिगाड़ पाए, जबकि शक्ति, सम्पत्ति व संख्या में रावण व कंस आदि अधिक शक्तिशाली थे। आप कहेंगे कि वे तो महापुरुष या भगवान् थे, आप तो एक अदने से संन्यासी या इंसान हो, तो मैं आपसे कहूँगा मैं भगवान् नहीं हूँ लेकिन मुझे भगवान् ने इसी कार्य के लिए उत्पन्न किया है, मैं ईश्वर का अमृत पुत्र हूँ। मैं इन पापियों से नहीं मरूँगा और यदि इतने से भी तुम सन्तुष्ट नहीं हो पाते हो तो अन्त में आप सबकी शक्ति, सम्पत्ति व देश के 121 करोड़ लोगों की संख्या जब मेरे साथ है तो शक्ति, सम्पत्ति व संख्या में भी इनसे हम कम नहीं, अपितु अधिक ही हैं, ये पापी मेरे जीवन का अन्त नहीं कर पायेंगे, अपितु ऐसा सोचने वालों का अपने पाप से स्वतः ही अन्त हो जायेगा। यदि कोई मेरे इस भौतिक शरीर का अन्त भी कर दे, तो भी राष्ट्रहित में मैंने जो वैचारिक क्रान्ति पैदा की है, उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं मिटा सकती।

हमारा संकल्प

1. मैं सत्ता व सम्पत्ति के प्रलोभन से दूर रहकर भारत-स्वाभिमान आन्दोलन की नीतियों के अनुरूप शक्तिशाली भारत बनाने के लिए अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा लगाऊँगा तथा इसके लिए मैं आत्मबलिदान (कुर्बानी, शहादत) के लिये भी तैयार रहूँगा।
2. मैं स्वदेशी का पूर्ण आग्रह रखूँगा तथा शून्य तकनीकी से बनी किसी भी विदेशी वस्तु का प्रयोग नहीं करूँगा।
3. मैं स्वयं भ्रष्टाचार से दूर रहूँगा तथा देश से भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए पूर्ण संघर्ष करूँगा।
4. मैं किसान, मजदूर, गरीब व अमीर सबको समान रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, समृद्धि एवं सम्मान दिलाने के लिए संकल्पित रहूँगा तथा नियमित योगाभ्यास करते हुए स्वयं स्वस्थ रहूँगा एवं स्वस्थ समाज व राष्ट्र का निर्माण करूँगा।
5. मैं भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गन्दगी, गरीबी, भूख, अभाव व अशिक्षा आदि से मुक्त वैभवशाली भारत बनाने के लिए चुनाव के समय राष्ट्रहित में मतदान अवश्य करूँगा तथा दूसरों को भी मतदान के लिए प्रेरित करूँगा।

वैदिक शौर्य मन्त्र

❋ **उत्तिष्ठत सं नह्यध्वमुदाराः केतुभिः सह।**
सर्पा इतरजना रक्षांस्यमित्राननु धावत।। **–अथर्व४ ११/१०/१**

वीरो उठो, कमर कस लो, झण्डे (धर्मध्वज या राष्ट्रध्वज) हाथों में पकड़ लो। जो भुजंग हैं, लम्पट हैं, देशद्रोही हैं, राक्षस हैं, शत्रु हैं, उनको परास्त करके देवत्व की विजय व असुरत्व की पराजय करो।

❋ **अहं स यो नववास्त्वं बृहद्रथं स वृत्रोव दासं वृत्रहाऽरुजम्।**
यद् वर्धयन्त प्रथयन्तमानुषग्दूरे पारे रजसो रोचनाऽकरम्॥ **–ऋग्४ १०/४९/६**

सुनो, मैं वह हूँ जिसने गरीबों का खून चूस-चूस कर, भ्रष्टाचार करके देश को लूटकर नयी-नयी हवेलियाँ या महल खड़ी कर लेने वाले, बड़े-बड़े रथ-बग्घियों या गाड़ियों पर सैर-सपाटे करने वाले दस्युओं, भ्रष्टाचारियों व अपराधियों को बात की बात में धूल में मिला छोड़ा है। अत्याचार के बल पर फूलने-फलने वाले दुष्ट चोरों को मैंने टाँग पकड़ कर ऐसा उछाला है कि वे आकाश के भी परली पार जाकर गिरे हैं।

❋ **कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।** **–अथर्व४ ७/५०/८**

मैं हाथ पर हाथ धर कर बैठने वाला नहीं हूँ। मेरे दाहिने हाथ में कर्म है और बाएँ हाथ में विजय रखी है।

❋ **एक एवाऽग्निर्बहुधा समिद्धः, एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः।**
एकैवोषाः सर्वमिदं वि भात्येकं वा इदं वि बभूव सर्वम्॥ **–ऋग्४ ८/५८/२**

'अकेली आग कितनी चमक से चमकती है! अकेला सूर्य विश्व को प्रकाशित करता है। अकेली उषा सब दृश्यमान वस्तुओं को चमका रही है। अकेला परमेश्वर सर्वत्र व्याप्त है।'

❋ **बाहू मे बलमिन्द्रꣳ हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रामुरो मम॥** **–यजुः४ २०/७**

मेरी भुजाओं में इन्द्र का-सा बल है, हाथों में कर्म और सामर्थ्य है। मेरी आत्मा दुःखियों का कष्ट दूर करने वाली है, मेरी छाती स्वयं चोटें खाकर दूसरों को बचाने वाली है।

❋ **अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदाचन।** **–ऋग्४ १०/४८/५**

सुनो, मेरा परिचय सुनो! मैं इन्द्र हूँ, बाँका वीर हूँ, धन-दौलत का प्रलोभन व मृत्यु मुझे परास्त नहीं कर सकते।

❋ **इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः॥** **–ऋग्४ ९/६३/५**

हे कर्मशील जन सुनो! शौर्य व ऐश्वर्य को बढ़ाओ, स्वयं को पूर्ण रूप से श्रेष्ठ बनाओ और असुरत्व का संहार करो।

❋ **अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन्।**
अर्कस्त्रिधातू रजसो विमानोऽजस्रो घर्मो: हविरस्मि नाम॥ **–यजुः४ १८/६६**

'मैं अग्नि हूँ, दहकता हुआ देदीप्यमान अन्नारा हूँ, स्वभाव से ही जागरूक हूँ। मेरी आँखों में तेज है, मेरे मुख में अमृत है। मैं सूर्य हूँ, शरीर, मन व आत्मा के तीनों तेजों से युद्र हूँ, सारे भूमण्डल को अपने कदमों से माप लेने वाला हूँ, अक्षय हूँ, जलता हुआ यज्ञकुण्ड हूँ व आहुति हूँ।

❋ **यद्वदामि मधुमत्तद्वदामि यदीक्षे तद्वनन्ति मा।**
त्विषीमानस्मि जूतिमान् अवान्यान् हन्मि दोधतः॥ **–अथर्व १२/१/५८**

जिससे बात करता हूँ, मीठा बोलता हूँ; जिसकी ओर दृष्टि करता हूँ, वह मुझसे स्नेह करने लगता है। एक ओर तो मेरा यह मधुर रूप है; किन्तु साथ ही ऐसा तेजस्वी और वेगवान् भी हूँ कि जो दुष्ट मुझे अपना क्रोध दिखाते हैं, उन असुरों का मैं तत्काल अन्त कर देता हूँ।

वेदों के ये मन्त्र हमारे हृदय में शौर्य, उत्साह, पराक्रम व आत्मविश्वास का भाव जाग्रत करने वाले हैं। भ्रष्टाचारियों, असुरों व नरपिशाचों को अपने-आप दण्ड देना तो कानून के अनुसार अपराध है, परन्तु ऐसे अपराधियों के लिये मृत्युदण्ड का कानून बनवाने के लिये हम संगठित होकर संघर्ष करेंगे।

सद्विचार-प्रवाह

❋ योग एवं यज्ञ जीवन के दो पुण्य प्रवाह हैं, दो पंख हैं, जो हमारे जीवन को निरन्तर उत्कर्ष की ओर ले जाते हैं तथा भोग जीवन का अपुण्य प्रवाह है जो मनुष्य को निरन्तर पाप एवं पतन की ओर ले जाता है।

❋ **संश्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि। मयि एव अस्तु मयि श्रुतम्॥ (अथर्ववेद)**

❋ हम वेदोक्त पथ पर ही सदा आगे बढ़ें। मेरा श्रुत-ज्ञान मुझमें स्थिर रहे।

❋ गुरुदर्शन या गुरुभक्ति का अर्थ है– गुरु के चरित्र को आत्मसात् करना तथा दक्षिणा का उद्देश्य है– गुरु द्वारा संचालित सेवा-यज्ञ में सहयोग करना।

❋ **निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्। अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥**

❋ जग चाहे निन्दा करे या स्तुति, लक्ष्मी (धन) आये या जाए व मृत्यु आज हो जाये या युगों के बाद, परन्तु सत्य व धर्म पथ से धैर्यवान् व्यक्ति विचलित नहीं होते।

❋ **प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः, प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः। विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः, प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति॥**

कुछ लोग विघ्न-बाधाओं से भयभीत होकर किसी पुण्य कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते, कुछ प्रारम्भ करके बीच में ही विघ्नों से भयभीत होकर रुक जाते हैं, उत्तम कोटि के लोग वे हैं जो विघ्न-बाधाओं, भयंकर संकटों व प्रतिकूलताओं में भी नहीं रुकते और वे अन्त में विजयी होकर ही विराम लेते हैं।

❋ जीवन एक खेत की तरह है एवं विचार उसमें एक बीज की तरह है। जैसे हमारे विचार होंगे, वैसा ही हमारा व्यक्तित्व, व्यवहार, स्वभाव व आचरण होगा।

❋ देश एवं देशवासियों की सेवा का सबसे श्रेष्ठतम माध्यम योग है।

- जीवन भगवान् की कृपा का प्रसाद व मृत्यु उसके घर का आमन्त्रण है। न भोगो, न भागो, बस जागो; ज्ञान ही समाधान है।
- अपने हृदय में यह विचार अखण्ड बनाए रखो कि यह जीवन देश की सेवा एवं भगवान् की भक्ति के लिए है।
- देश में नेतृत्व हमेशा लगभग 1% लोग करते हैं। 9% लोग उन 1% लोगों की मुख्य शक्ति होते हैं तथा 80% लोग इन 10% लोगों का अनुसरण करते हैं। तथा शेष 10% लोग अज्ञान, दुराग्रह, स्वार्थ व अहंकार के वशीभूत होकर सदा श्रेष्ठ एवं सात्विक लोगों का विरोध करते हैं।
- भारत-स्वाभिमान आन्दोलन के माध्यम से जो संकल्प हमने लिया है और जो स्वर्णिम भारत का सपना हमने देखा है, यही संकल्प और सपना था – महर्षि दयानन्द, तात्या टोपे, नाना साहेब पेशवा, मंगल पाण्डे, रानी लक्ष्मीबाई, तिलक, गोखले, महात्मा गाँधी, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद व रामप्रसाद बिस्मिल आदि शहीदों अथवा क्रान्तिवीरों का। देश व देशवासियों से प्रेम करने वाला कोई भी व्यक्ति या संगठन इस आन्दोलन से जुड़े बिना नहीं रह सकता। हर सच्चे भारतीय के हृदय का संकल्प है– भारत-स्वाभिमान। यदि माँ भारती के इन महान् सपूतों का यह सपना, संकल्प, विचार व आन्दोलन उचित था तो भारत स्वाभिमान का सामाजिक व आध्यात्मिक आन्दोलन भी उचित है। हम क्रान्तिवीरों व महापुरुषों के स्वप्नों व संकल्पों का भारत बनायेंगे। इसी उद्देश्य के लिये इस समय इस युग में भगवान् ने हमें जन्म दिया है।
- जिन पवित्र विचारों ने मुझे ऊँचा उठाया, मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया व अग्निपथ पर आगे बढ़ाया, मैं आश्वस्त हूँ कि उन्हीं पवित्र विचारों से मेरे देश का प्रत्येक व्यक्ति जागेगा व देश का स्वाभिमान जागेगा।
- देश से मुझे धन, सत्ता, सम्पत्ति, सम्मान व जीवन मिला है। इस देश की माँ, बहन, बेटियों, बच्चों व बुजुर्गों की आँखों के आँसू मेरी पीड़ा हैं व देश की खुशहाली मेरी प्रसन्नता है।
- ऐ मेरे प्यारे भारतवासियो ! असम्भव को सम्भव करने की अपार क्षमता, सामर्थ्य व ऊर्जा तुम्हारे भीतर सन्निहित है। काल के भाल पर अपनी शक्ति, साहस व शौर्य से नया इतिहास लिखो। आजादी कुर्बानी, शहादत या आत्मबलिदान माँगती है।
- देश की हानि दुष्टों की दुष्टता से कम तथा सज्जन व्यक्तियों की उदासीनता से अधिक होती है। अतः अब मौन तोड़ो! स्वयं जागो! और देश को जगाओ! और देश से आसुरी शक्तियों को परास्त करने के लिए आगे आओ।
- विकास की कसौटी यह नहीं कि एक समृद्ध व्यक्ति ने कितनी सारी सम्पत्ति अर्जित कर ली है, अपितु यह है कि देश व दुनिया के अन्तिम (आम) आदमी को शिक्षा, चिकित्सा, सामाजिक न्याय व सम्मान हम कितना दे पा रहे हैं।
- मैं अकेला क्या कर सकता हूँ, इसके बजाय हमेशा यह सोचें कि मैं क्या नहीं कर सकता! दुनिया में कुछ भी असम्भव नहीं, सब-कुछ सम्भव है।

- सत्य, सदाचार एवं मर्यादा के बन्धन में स्वयं को सदा बाँधे रखना, यह बन्धन सुख-शान्ति, समृद्धि एवं मुक्ति के लिए है। हमारा सामूहिक राष्ट्रीय जीवन वैभवपूर्ण तथा वैयक्तिक जीवन तप व संयमपूर्ण होना चाहिये। इससे समाज व राष्ट्र में समरसता, सुख-समृद्धि व शान्ति बढ़ेगी व देश की दरिद्रता दूर होगी। हम दरिद्रता को आध्यात्मिकता नहीं मानते।
- मैं समाज की भ्रष्ट व्यवस्थाओं से व्यथित होकर हार मानकर बैठने वाला व्यक्ति नहीं हूँ। मैं अन्तिम श्वास तक सत्य के लिए संघर्ष करके विजय पाने वाला योद्धा हूँ।
- भारत की स्वतन्त्रता के सम्पूर्ण संग्राम में 7 लाख 25 हजार 850 क्रान्तिवीरों की शहादत हुई। ये सभी क्रान्तिवीर अंग्रेजों की जेलों में या तो सीधो गाँसी चढ़ाये गए या अंग्रेजी तोपों से बाँधकर उनके शरीर उड़ाए गए या फिर अंग्रेजी अत्याचारों को सहन न कर पाने के कारण तड़प-तड़प कर मर गए। भारत की आजादी, लगभग सवा 4 करोड़ (4 करोड़ 25 लाख) लोगों के अभिक्रम, परिश्रम, तपस्या व त्याग का परिणाम है।
- जिस देश का नेतृत्व पराक्रमी, स्वाभिमानी, विनयशील, संयमी, सदाचारी, पारदर्शी व दूरदर्शी नहीं होता वह राष्ट्र कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकता।
- मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व में मुझे अपना वतन दिखता है। मेरे वतन से, मेरा तन है। अपना हृदय, मन, मस्तिष्क, आपकी अस्थियाँ, मांसपेशियाँ व अपने रक्त की एक-एक बूँद मैंने देश की मिट्टी से पायी है। अत: जब तक देह में प्राण रहेंगे तथा खून की आखिरी बूँद शेष रहेगी, मैं तब तक देश के लिए काम करूँगा। देश के लिए जिऊँगा तथा देश के सम्मान व स्वाभिमान के लिए मुझे अपने प्राणों की भी आहुति देनी पड़े तो भी पीछे नहीं हटूँगा।
- अपनी प्रसुप्त शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक, संगठनात्मक शक्ति का कभी भी मूल्यांकन कम करके नहीं आँकना। अपना उचित मूल्यांकन न करने के कारण ही हमारे भीतर बार-बार निराशा, अविश्वास व आत्मग्लानि का भाव पैदा होता है।
- मैं जीवन में कभी भी राजनैतिक पद ग्रहण नहीं करूँगा, यह मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा है। मैं राष्ट्रहित में देशभक्त, ईमानदार व कर्त्तव्यनिष्ठ लोगों को सत्ता के शीर्ष पर स्थापित करने के लिए अपने पवित्र राष्ट्रधर्म का निर्वहन कर रहा हूँ और करता रहूँगा।
- मेरे जीवन का एकमात्र ध्येय देवत्व की विजय व असुरत्व की पराजय है और इसके लिए मैं जीवन पर्यन्त संघर्ष करने व आत्मबलिदान के लिए तैयार हूँ।
- स्वदेशी उत्पादों के प्रयोग में भी संस्थान द्वारा निर्मित उत्पादों को प्राथमिकता देना, क्योंकि संस्थान आपको न्यूनतम मूल्य पर अच्छी से अच्छी दवा व स्वस्थ उत्पाद (दैनिक जीवन में उपयोगी च्यवनप्राश, मंजन, टूथपेस्ट, साबुन व शैम्पू आदि) उपलब्ध कराता है तथा उत्पादों के विक्रय से प्राप्त लाभांश का पूरा उपयोग गरीबों व जनसामान्य की सेवा एवं राष्ट्र-निर्माण के पवित्र उद्देश्य के लिए ही किया जाता है।

दान से जीवन-दान व राष्ट्र-उत्थान

- देशवासियों से प्राप्त सम्पूर्ण दान, धन व संसाधनों का उपयोग हमने पतंजलि योगपीठ ट्रस्ट व भारत-स्वाभिमान आन्दोलन के माध्यम से पूर्ण पवित्रता व ईमानदारी के साथ देश एवं देशवासियों की भलाई के लिए किया है। यही आर्थिक व चारित्रिक शुचिता व ईमानदारी देश व दुनिया में हमारे संस्थान एवं संगठन की सबसे बड़ी ताकत है। संस्थान व संगठन को प्राप्त दान व धन का कभी भी व्यक्तिगत सुख व स्वार्थों के लिए प्रयोग नहीं किया है। यही हमारा लगभग दो दशकों का गौरवशाली, विश्वसनीय इतिहास है।
- हमने रोगियों को दवा उपलब्ध कराकर अपना स्वार्थ सिद्ध नहीं किया, अपितु रोगों से सन्तप्त करोड़ों लोगों की जिन्दगी बचाई है। संस्थान के समर्थकों, प्रशंसकों व समर्थ लोगों से दान लेकर हमने लाखों-करोड़ों लोगों को जीवन-दान दिया है तथा राष्ट्र का उत्थान किया है। सत्कर्मों हेतु दान देना पुण्य व धर्म है तथा सेवा-कार्यों हेतु दान न देना पाप व अधर्म है।
- जब पाप, अन्याय, अधर्म, भ्रष्टाचार, अपराध, असुरक्षा व अव्यवस्था शिखर पर होती है, तभी किसी क्रान्ति का जन्म होता है। पाप का विकराल रूप ही उसका काल बन जाता है और वह क्रान्ति सफल होती है। भ्रष्टाचार व पाप का चरम-उत्कर्ष ही हमारे इस संघर्ष की सफलता का सूचक है।
- किसी भी व्यक्ति, धार्मिक, आध्यात्मिक व सामाजिक संस्था या संगठन की नीतियों, सिद्धान्तों व मान्यताओं के बारे में व्यक्तिगत टिप्पणी करना हमारे संगठन की संस्कृति नहीं है।
- श्रीराम जैसी मर्यादा व चरित्र तथा श्रीकृष्ण जैसी नीति व कार्यकुशलता इस संगठन के आदर्श हैं।
- बाधाओं में रुकना नहीं, प्रलोभनों में झुकना नहीं, निन्दाओं से विचलित नहीं होना। बडी सोच, कड़ी मेहनत व पक्के इरादे के साथ 'चरैवेति चरैवेति' निरन्तर जीवन-पथ पर आगे बढ़ते रहना, एक दिन सफलता अवश्य मिलेगी।
- मैं एक व्यक्ति नहीं, सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधि हूँ, मैं ऋषिपुत्र, आर्यपुत्र व भारतमाता तथा ईश्वर का पुत्र हूँ। मेरे प्रत्येक अच्छे या बुरे आचरण से पूरा राष्ट्र प्रभावित होता है।
- मैं पहले भारतीय हूँ, बाद में हिन्दू, मुसलमान, सिख व ईसाई आदि हूँ। मनुष्यता मेरी जाति, मानवता मेरा धर्म व राष्ट्रहित में कर्म करना मेरे जीवन का लक्ष्य है।
- इस पत्रक में वर्णित विचारधारा, सिद्धान्त व मान्यताओं के अलावा हमारा न तो कोई दूसरा गुप्त एजेण्डा है और न ही कोई साम्प्रदायिक अवधारणा है।

विदेशी कम्पनियों की लूट के षड्यन्त्र का चक्रव्यूह

विदेशी कम्पनियों की मूल पूँजी व वर्तमान आर्थिक साम्राज्य 2010-11

विदेशी पूँजी निवेश (एफ.डी.आई.) का पूरा सच

(करोड़ रुपये में)

भारत में बड़ी एफ.एम.सी.जी., दवाई व एग्रो केमिकल कम्पनियाँ								
क्र.सं.	कम्पनी का नाम	मूल देश व (व कम्पनी)	निवेश वर्ष	प्रारम्भिक निवेश	मार्केट कैपिटलाइज़ेशन	वार्षिक टर्नओवर (2010-11)	वार्षिक लाभ	कुल सम्पत्ति
1.	आई.टी.सी.	ब्रिटेन-बी.ए.टी.	1910		156976.56	32830.43	5069.42	16653.76
2.	हिन्दुस्तान यूनीलीवर	ब्रिटिश-डच-यूनीलीवर	1933	24 लाख	82605.93	21348.01	2306.63	2679.98
3.	पेप्सीको	अमेरिका	1989		नॉन-लिस्टेड	लगभग 10000.00		
4.	कोको-कोला	अमेरिका	1956		नॉन-लिस्टेड	लगभग 6500.00		
5.	नेस्ले	स्विट्जरलैंण्ड	1959		40906.78	6411.31	818.66	855.41
6.	कोलगेट पॉमोलिव	फ्रांस-ग्रूपे डेनॉन	1937	1.5 लाख	13330.70	2417.99	402.58	384.09
7.	फिलिप्स इंडिया	निदरलैण्ड् (डच)	1956	10 लाख	डी-लिस्टेड 2004	3314.30	117.50	820.10
8.	बाटा	बरमूडा-स्विट्जरलैंण्ड	1931	70 लाख	4194.82	1295.16	12.27	468.95

संदर्भ-स्त्रोत : www.moneycontrol.com

भारत में बड़ी विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ (एम.एन.सी.) (करोड़ रुपये मे लगभग)

क्र.सं.	कम्पनी का नाम	मूल देश (व कम्पनी)	वार्षिक टर्न-ऑवर
1.	मारुति सुजुकी	जापान - सुजुकी	38000.00
2.	नोकिया	फिनलैण्ड	23000.00
3.	वोडाफोन	ब्रिटेन	22000.00
4.	हुण्डई	साऊथ कोरिया	20000.00
5.	हैवलेट पैकर्ड (हेच.पी.)	अमेरिका	18500.00
6.	हिन्दुस्तान यूनीलीवर	ब्रिटिश-डच-यूनीलिवर	21300.00
7.	सैम्संग	साऊथ कोरिया	16000.00
8.	एल.जी.	साऊथ कोरिया	16000.00
9.	होल्किम (अम्बुजा/ए.सी.सी. सीमेन्ट)	स्विड्जरलैण्ड	16000.00
10.	आई.बी.एम.	अमेरिका	14000.00

गत्-वर्ष 2010-11 की अन्तिम तिमाही में भारत की जी.डी.पी. की दर 8.1% थी परन्तु वर्ष 2011-12 की अन्तिम तिमाही में यह दर गिरकर मात्र 6.1% रह गयी है, जो विदेशी कम्पनियों की लूट का ही परिणाम है।

नोट: 1. स्वदेशी-विदेशी उत्पाद सूची पुस्तिका के अन्त में दी गयी है। यद्यपि सूची प्रकाशन में पर्याप्त सावधानी रखी गई है तथापि किसी भी नवीन जानकारी से हमें अवश्य अवगत करवायें जिससे आगामी संस्करण में आवश्यक संशोधन किये जा सकें।

2. आप जहाँ भी रहते हैं, उसके आस-पास ग्रामीणों एवं लघु उद्यमियों द्वारा आपके दैनिक प्रयोग की कई वस्तुएँ बनाई जाती हैं। आप प्राथमिकता के आधार पर उनका प्रयोग कर गाँव को स्वावलम्बी बनायें।

3. रातों-रात कोई भी स्वदेशी वस्तु या कम्पनी आर्थिक आधार पर, कम्पनी के शेयरों की खरीद से विदेशी हो सकती है। भारत के बाजार में वैश्वीकरण की प्रक्रिया के बाद बहुत सारे ब्राण्ड, वस्तुएँ स्वदेशी से विदेशी हो जाते हैं। कृपया आप अपने स्तर से अखबारों एवं पत्रिकाओं के माध्यम से इस सन्दर्भ में ताजा जानकारी करते रहें।

उत्पाद	विदेशी (बहिष्कार करें)	स्वदेशी (स्वीकार करें)
टूथपेस्ट/दंत मंजन	अधिकतर टूथपेस्ट हड्डियों के चूरे से बनते हैं। कोलगेट, हिन्दुस्तान लीवर (क्लोजअप, पेप्सोडेन्ट, ऐम, सिबाका), एक्वाफ्रेश, एमवे, (फोरहन्स), ओरलबी, क्वान्टम, आदि।	दन्तकांति, दन्त मंजन (पतंजलि), मंजन- एमडीएच, विको बज्रदन्ती, वैद्यनाथ, गुरुकुल फार्मेसी, चॉइस, नीम, एंकर, मिस्वाक, बबूल, प्रॉमिस, आदि।
टूथब्रश	कोलगेट, क्लोजअप, पेप्सोडेन्ट, एक्वाफ्रेश, सिबाका आदि।	पतंजलि टूथब्रश, प्रोमिस, अजय, अजन्ता, मोनेट, रोयल, क्लासिक, डॉ० स्ट्रॉक आदि।
नहाने का साबुन	हिन्दुस्तान लीवर (लक्स, लिरिल, लाईफबॉय, लेसांस, डेनिम, केमे, डॉव, रेवलॉन, "यर्स, रेक्सोना, ब्रीज, हमाम, ओके) पॉण्ड्स, डिटोल, क्लियरसिल, पामोलिव, एमवे, जॉनसन बेबी आदि।	ओजस, कायाकान्ति, कायाकान्ति एलोवेरा (पतंजलि), निरमा, मेडीमिक्स, नीम, निमा, जेस्मीन, मैसूर सेंदल, कुटीर, सहारा, हिमानी ग्लिसरीन, गोद. रेज (सिंथोल, फेयरग्लो, शिकाकाई, गंगा), विप्रो, संतुर आदि।
शैम्पू	कोलगेट पामोलिव (हैलो, पामोलिव) हिन्दुस्तान लीवर (लक्स, क्लि. निक, सनसिल्क, रेवलॉन, लेक्मे) प्रोक्टर एवं गेंबल (पेन्टीन, मेडीकेयर) पोण्ड्स, ओल्ड स्पाइस, शावर टू शावर, हेड एंड शोल्डर, जॉनसन बेबी आदि।	केश कान्ति (पतंजलि), विप्रो, पार्क अवेन्यू, स्वातिक, अयूर हर्बल, केशनिखार, हेयर एण्ड केयर, नाइ"ल, अर्निका, वेलवेट, डाबर वाटिका, बजाज, नाईल, लेवेण्डर, गोदरेज आदि।
कपड़े व बर्तन धोने के साबुन, पाउडर व नील शेविंग क्रीम	हिन्दुस्तान लीवर (सर्फ, रिन, सनलाइट, व्हील, ओके, विम) एरियल, चेक, हेन्को, रिविल, एमवे, क्वान्टम। ऊनी कपड़ों के लिए-वुलवॉश, ईजी। नील-रॉबिन ब्लू, टीनापाल, स्काईलार्क आदि।	उज्जवल केक, उज्जवल पाउडर (पतंजलि), टाटा शुद्ध, निमा, मोदी, केयर, सहारा, स्वास्तिक, विमल, हिपोलीन, फेना, ससा, टी सीरीज, डॉ० डेट, घड़ी। ऊनी कपड़ोंके लिए-जैंटिल। नील-उजाला, रानीपाल, निरमा, चमको, डिप आदि।
शेविंग क्रीम व ब्लेड	ओल्डस्पाइस, पामोलिव, पॉण्ड्स, जिलेट, इरास्मिक, डेनिम यार्डले आदि। जिलेट (7 ओक्लोक, इरास्मिक) विल्मैन, विल्टेज आदि।	पार्क अवेन्यु, प्रीमियम, वीजॉन, इमामी, बलसारा, गोदरेज, निविया आदि। टोपाज, गेलेन्ट, सुपरमेक्स, लेजर, एसक्वायर, "ल्वर/"न्स, प्रीमियम आदि।
क्रीम, पाउडर व सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्री	हिन्दुस्तान लीवर (फेयर एवं लवली, लेक्मे, लिरिल, डेनिम, रेवलोन), प्रोक्टर एवं गेम्बल (आयल एंव ओले, क्लियरसिल, क्लियरटोन) चार्मिस, पॉण्ड्स, ओल्ड स्पाइस, डेटाल, नाइसिल, चार्ली, जॉनसन बेबी आदि।	ऐलोवेरा जैल, कायाकान्ति, नीम, कांतिलेप, तेजस ब्यूटी क्रीम, तेजस एन्टी स्किल क्रीम (पतंजलि), बोरोप्लस, अयूरइमामी, विको, बोरोप्लस, बोरोलीन, हिमानी गोल्ड, नाईल, लेवेण्डर, हेयरएण्डकेयर, निविया, ह्वेन्स, "थोलग्लोरी, वेलवेट (बेबी) आदि।
रेडिमेड वस्त्र	रैंगलर, नाइक, एडीडास, न्यूपोर्ट, प्यूमा आदि।	पतंजलि परिधान, केम्ब्रिज, पार्क अवेन्यू, ओक्जेम्बर्ग, बॉम्बे डाइंग, रफ एंड टफ, ट्रिगर जीन्स, पतंजलि वस्त्रम आदि।
घड़ी	राडो, रॉलैक्स, स्वीसको, सीको आदि।	टाइटन, एचएमटी, मैक्ज़िमा, प्रेस्टिज, अजन्ता।
पेन, पेन्सिल	पारकर, निकलसन, रोटोमेक, स्विसएयर, एडजेल, राइडर, मित्सुबिशी, फ्लेयर, यूनिबाल, पायलट, रोलगोल्ड आदि।	कैमल, किंग्सन, सेलो, विल्सन, टूडे, नटराज, ऐम्बेसेडर, लिंक, मोन्टेक्स, स्टीक, संगीता, लक्सर, अप्सरा आदि।
कोल्ड-ड्रिंक्स	कोका कोला (कोक, फैन्टा, स्प्राईट, थम्सअप, गोल्डस्पॉट, लिम्का), पेप्सी (लहर, 7 अप, मिरिण्डा, स्लाइस) टीम, सिट्रा, मेकडोवल।	एप्पल जूस, गुलाब शर्बत, बादाम शर्बत (पतंजलि), दूध लस्सी, छाछ, जूस, नींबू पानी, नारियल पानी, शेक, ठंडाई, जलजीरा, रूहअफजा, रसना, फ्रूटी, गोदरेज जंपईन आदि।

चाय व कॉफी	लिप्टन (टाइगर, ग्रीन लेबल, येलो लेबल, चीयर्स) ब्रुक बॉण्ड (रेड लेबल, ताजमहल) गॉडफ्रे फिलिप्स, पोलसन, गुडरिक, सनराईज। कॉफी– नेस्ले, नेस्कैफे, रिचबू (चाय व कॉफी पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है)	चाय–दिव्य पेय (पतंजलि), टाटा, ब्रह्म पुत्र, असम, गिरनार। कॉफी–इण्डियन कैफे, एम.आर.।
शिशु आहार व दूध–पाउडर	नेस्ले (लेक्टोजन, सेरेलक, नेस्टम, एल.पी.एफ., मिल्क मेड, नेस्प्रे, एवरीडे, गाल्टको) ग्लेक्सो (फैरेक्स) आदि।	पतंजलि शहद, पतंजलि जन्मघुट्टी, दालों का पानी, उबले चावल, फलों का रस। अमूल, इण्डाना, सागर, तपन, मिल्क केयर आदि।
आइसक्रीम	अधिकतर आइसक्रीमों में जानवरों की आँतों की परत होती है। वॉल्स, क्वालिटी, डोलप्स, कैडबरी आदि।	घर की बनी आइसक्रीम, कुल्फी, अमूल, वाडीलाल, मिल्क फूड आदि।
नमक	अन्नपूर्णा, कैप्टन क्रुक (हिन्दुस्तान लीवर), किसान (ब्रुकबॉण्ड), सिल्सबरी आदि।	सामान्य नमक, सैंधा नमक (पतंजलि), लो–सोडियम व आयरन–45 अंकुर, टाटा, सूर्या, ताजा, तारा, अंकुर नमक।
आलू चिप्स/ नमकीन	अंकल, पेप्सी (रफल्स, हास्टेस, लेज), फनमंच, कुरकुरे आदि।	बिकानो नमकीन, हल्दीराम, घर में बने चिप्स, बीकाजी, एवं एवन आदि।
टमाटर सॉस, फ्रूट जैम	नेस्ले, ब्रुक बॉण्ड (किसान) ब्राउन एण्ड पालसन, आदि।	फ्रुट जैम, एपल जैम, मिक्स जैम (पतंजलि) घर में बना सॉस। इण्डाना, स्प्रिया, रसना आदि।
बिस्कुट/ चॉक्लेट	अधिकतर चॉकलेट में आर्सेनिक नामक जहर होता है। कैडबरी (बोर्नविटा, 5 स्टार) लिप्टन, हार्लिक्स, न्यूट्रीन, इक्लेयर्स, ब्रिटानिया आदि।	गुड़+मूगंफली, बादाम ज्यादा स्वास्थप्रद है। आंवला कैन्डी, आरोग्य बिस्कुट, बेल कैन्डी, कैंडी (पतंजलि)। पारले, बेकमेन्स, क्रीमिका, शाग्रीला, इन्डाना, अमूल, रावलगांव आदि।
पानी	एक्वाफिना, किनले, प्योर–लाईफ, ईवियन, सैन–पैलेग्रीमों, पैरियर आदि।	घर का उबला साफ पानी, यैस, गंगा, हिमालया, कैच, रेल–नीर, बिसलेरी आदि।
टॉनिक	बूस्ट, पोलसन, बोर्नवीटा, होर्लिक्स, कोम्लान, स्पर्ट, प्रोटिनेक्स।	बादाम पाक, च्यवनप्राश, अमृत रसायन (पतंजलि), न्यूट्रामूल, माल्टोवा।
घी एवं खाद्य–तेल	नेस्ले का घी, डालडा, आई.टी.सी. व हिन्दुस्तान लीवर के सभी ब्राण्ड।	आरोग्यम् सरसों तेल (पतंजलि) परम घी, अमूल घी, गाय का देशी घी।
टी.वी., फ्रीज, वाशिंग मशीन व इलेक्ट्रोनिक गुड्स	सोनी, फिलिप्स, हुंडई, सनसुई, आइवा, शार्प, एलजी, देवू, सैन्यो, नेशनल पेनासोनिक, कैनवुड, थॉमसन, सैमसंग, हिताची, तोशीबा, कोनिका, पायोनियर, केल्विनेटर, व्हिर्लपूल, केनस्टार, इलेक्ट्रोलक्स, आई.एफ.बी. वोल्टस।	ओनिडा, बी.पी.एल., विडियोकोन, अकाई, टी.–सीरीज, सलोरा, वेस्टर्न, क्राउन, टेक्सला, गोदरेज।
मोबाईल, टेलीफोन सेवाप्रदाता	नोकिया, एल.जी., सोनी, सेमसंग। सेवा प्रदाता – वोडाफोन, हच, यूनिनॉर।	अजन्ता, ओरपेट, ऊषा–लक्सस, माइक्रोमेक्स, ऑनिडा, विडियोकॉन, जेन मोबाईल, टाटा, टी–सीरीज, कार्बन, बीटल, ईन्टैक्स, मैक्स। सेवा प्रदाता–एम.टी.एन.एल, बी.एस.एन.एल., टाटा, एयरटेल, आईडिया, रिलायंस।
वाहन	कावासाकी, होण्डा, हुण्डई, सन्ट्रो, फोर्ड रॉयल–ईन–फील्ड, मर्सडिज, टोयटा, करोला, स्कोडा, निशान, कायनैटिक, सीवरलैट, देव, मीत्सूबिसी, रोल्स रॉयल, सन मोटर्स, सूजूकी।	बजाज, टी.वी.एस., टाटा, तूफान, स्वराज–माजदा, अम्बेसडर, इन्डस, अजन्ता, हिन्दुस्तान मोटर्स, मारूति, महेन्द्रा।
बीज एवं कीटनाशक	हिन्दुस्तान लीवर, पायनियर, हेक्स्ट, फाईजर, सिजेन्टा, मोनसेन्टो, कारगिल। इन सभी कम्पनियों के बीजों एवं कीटनाशकों का बहिष्कार करें।	स्थानीय स्तर के पारम्परिक बीजों व कीटनाशकों का उपयोग करें।
सीमेन्ट	हॉलसिम, लाफाज, ए.सी.सी., हैडलबर्ग, सिम्पोर सिमेन्ट, ईटल सिमेन्ट।	गुजरात अम्बुजा, अल्ट्राटेक, ग्रेसिम, इण्डिया "मेन्ट, जे.के. "मेन्ट, जे.पी. "मेन्ट, सेन्चुरी "मेन्ट, मद्रास "मेन्ट, आधुनिक एम.एस.पी., टॉपसम, स्टार, मेक्स।

दैनिक योग का अभ्यास-क्रम

प्रारम्भ : तीन बार **ओ३म्** का लम्बा उच्चारण करें।

गायत्री-महामन्त्र : **ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥**

महामृत्युञ्जय-मन्त्र : **ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥**

संकल्प-मन्त्र : **ओ३म् सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै॥**

प्रार्थना-मन्त्र : **ओ३म् असतो मा सद् गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय । ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥**

सहज-व्यायाम : यौगिक जोगिंग के 12 अभ्यास (समय-लगभग 5 मिनट)

सूर्य-नमस्कार : 3 से 5 अभ्यास (समय- 1 से 2 मिनट)

भारतीय-व्यायाम : मिश्रदण्ड अथवा युवाओं के लिये बारह प्रकार की दण्ड व आठ प्रकार की बैठकों का पूर्ण अभ्यास (समय-लगभग 5 मिनट)

मुख्य-आसन :

बैठकर करने वाले आसनः मण्डूकासन (भाग 1 व 2), शशकासन, गोमुखासन, वक्रासन।

पेट के बल लेटकर करने वाले आसनः मकरासन, भुजंगासन, (भाग 1,2 व 3) शलभासन (भाग 1, 2)। **पीठ के बल लेटकर करने वाले आसनः** मर्कटासन (1, 2, 3), पवनमुक्तासन (भाग 1 व 2) अर्द्धहलासन, पादवृत्तासन, द्वि-चक्रिकासन (भाग 1 व 2) व शवासन (योगनिद्रा)। (समय-10 से 15 मिनट, प्रत्येक आसन की आवृत्ति- 3 से 5 अभ्यास)

सूक्ष्म-व्यायाम : हाथों, पैरों, कोहनी, कलाई, कंधों के सूक्ष्म व्यायाम व बटरफ्लाई इत्यादि लगभग 12 प्रकार के सूक्ष्म व्यायाम, प्राणायाम के पहले अथवा बीच में भी किये जा सकते हैं। प्रत्येक अभ्यास की आवृत्ति- 5-10 बार (समय-लगभग 5 मिनट)।

मुख्य प्राणायाम एवं सहयोगी क्रिया

1. **भस्त्रिका-प्राणायाम** : लगभग 5 सेकण्ड में धीरे-धीरे लम्बे गहरे श्वास लेना व छोड़ना-कुल समय-3 से 5 मिनट।
2. **कपालभाति-प्राणायाम** : 1 सेकण्ड में एक बार झटके के साथ श्वास छोड़ना-कुल समय-15 मिनट।
3. **बाह्य-प्राणायाम** : त्रिबन्ध के साथ श्वास को यथाशक्ति रोककर रखना- 3-5 अभ्यास।

   (अग्निसार-क्रिया) : मूल-बन्ध के साथ पेट को अन्दर की ओर खींचना व ढीला छोड़ना-3-5 अभ्यास।
4. **उज्जायी-प्राणायाम** : गले का आकुञ्चन करते हुए श्वास लेना व बाईं नासिका से छोडना - 3-5 अभ्यास।
5. **अनुलोम-विलोम-प्राणायाम** : दाईं नासिका बन्द करके बाईं से श्वास लेना व बाईं को बन्द करके दाईं से श्वास छोड़ने का क्रम, इसी प्रकार बाईं ओर से करना, एक क्रम का समय 10 सेकण्ड-कुल अभ्यास समय-15 मिनट।
6. **भ्रामरी-प्राणायाम** : आँखों व कानों को बन्द करके नासिका से भ्रमर की तरह गुंजन करना - 5 से 7 बार।
7. **उद्गीथ-प्राणायाम** : दीर्घ स्वर में ओ७म् का उच्चारण- 5 से 7 अभ्यास।
8. **प्रणव-प्राणायाम (ध्यान)** : आँखें बन्द करके, श्वासों पर या चक्रों में ओम् का ध्यान मुद्रा में ध्यान करना-समय-जितना उपलब्ध हो।

देशभक्ति-गीत : समय लगभग 2-3 मिनट

स्वाध्याय-चिन्तन : जीवन दर्शन, स्वाभिमान संकल्प-पत्र, ग्राम निर्माण से राष्ट्र निर्माण व संगठन के अन्य प्रासंगिक साहित्य का क्रमबद्ध- वाचन/समय लगभग 5 मिनट।

एक्यूप्रेशर : समय की उपलब्धता अनुसार।

समापन : सिंहासन, हास्यासन, 3-3 अभ्यास (समय- 2 मिनट)

शान्ति-पाठ : **ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥**

विशेषः योगाभ्यास के क्रम में व्यायाम, सूक्ष्म-व्यायाम व आसनों को पहले या बाद में भी किया जा सकता है। शीतकाल में व्यायाम व आसन पहले तथा प्राणायाम बाद में एवं ग्रीष्म काल में प्राणायाम पहले करवाकर व्यायाम व आसन बाद में कर सकते हैं।

श्रद्धेय स्वामी जी की भीष्म प्रतिज्ञा

श्रद्धेय स्वामी जी ने एक बार नहीं सैकड़ों व हजारों बार सार्वजनिक रूप से यह भीष्म प्रतिज्ञा की है कि ''मैं कभी भी कोई चुनाव नहीं लड़ूँगा और न ही कभी कोई राजनैतिक पद ग्रहण करुँगा, चाहे 2 साल लगें, 10 साल या पूरा जीवन लगे, भारत को आध्यात्मिक व आर्थिक महाशक्ति व विश्वगुरु बनाना मेरा संकल्प है। मैं रहूँ या न रहूँ, चाहे दुनिया की लाखों मुसीबतें आयें, चाहे मौत भी आये तो भी मैं आप सब राष्ट्रभक्तों को साथ लेकर कालेधन, भ्रष्टाचार व व्यवस्था परिवर्तन के आंदोलन के साथ निःस्वार्थ व निष्काम भाव से योग-आयुर्वेद व स्वदेशी की सेवा अन्तिम सांस तक करता रहूँगा।''

श्रद्धेय स्वामी जी के हृदय में जो पुकार उठ रही है, जब आप शान्त होकर चिन्तन करेंगे तो आपके भीतर से भी परमात्मा की ओर से यही प्रेरणा, पुकार व आवाज उठेगी, क्योंकि आत्मा की मूल प्रकृति व स्वाभाव तो एक ही है।

नम्रनिवेदन– यद्यपि इस आन्दोलन के आयाम बहुत व्यापक हैं तथा एक छोटी सी पुस्तिका में विस्तार से सभी मुद्दों का समग्र समावेश सम्भव नहीं है। अतः संक्षेप में आन्दोलन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक दृष्टिकोण को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। सभी प्रबुद्धजनों, राष्ट्र के हितचिन्तक सभी देशभक्त नागरिकों एवं वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं से विनम्र आग्रह है कि वे अपने सुझाव हमें तुरन्त भेजें, जिससे कि अगले संस्करण में आवश्यक संशोधन किया जा सके।

योग कक्षाएँ – मानव सेवा से राष्ट्र सेवा, व्यक्ति-निर्माण, चरित्र-निर्माण से लेकर युग निर्माण, संगठन व आंदोलन के लिए सात्विक कार्यकर्त्ताओं के निर्माण, रोग, नशा, व्यसन, अज्ञानमुक्त उच्च चेतनायुक्त व दिव्य जीवन निर्माण के लिए निःशुल्क योग की कक्षाएँ ही संगठन की आधारशिला हैं। ये हमारी शक्तिपीठ या शक्तिकेन्द्र हैं। अतः प्रत्येक गाँव व शहर में नियमित योग कक्षाओं का निरन्तर संचालन हमें करना है।

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदः तपोदीक्षामुपनिषेदुरग्रे।

ग्राम समिति – ग्राम, प्रखण्ड, बूथ व वार्ड समितियाँ- हमारे आंदोलन की धुरी या केन्द्र हैं। परिवर्तन की परिधि या दायरा सारा देश है। देश में परिवर्तन लाने में हम तभी सक्षम होंगे जब हमारा केन्द्र मजबूत होगा। एक-एक गाँव में जब 100 जवान, 100 किसान व 100 महिलाएँ खड़ी हो जायेंगी, तो आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक रूप से हम जो चाहते हैं देश हित में वह सब कुछ कर पायेंगे। **समितियों का निर्माण तथा वहाँ सेवा व आन्दोलन के तीन-तीन प्रकल्पों का निरन्तर संचालन- यही संगठन की सर्वोच्च प्राथमिकता है।**

संस्थान व संगठन की सेवाएँ

1. हमने योग व आयुर्वेद को शून्य से शिखर तक स्थापित कर घर-घर व देश तथा दुनियाँ के अन्तिम व्यक्ति तक योग को पहुँचाया।
2. रोग, नशा, हिंसा व अज्ञान से मुक्त तथा उच्च चेतना से युक्त जीवन जीने के लिए करोड़ों लोगों का चरित्र निर्माण किया।
3. हमारे निष्ठावान योग शिक्षक भाई-बहन देश भर में लाखों नि:शुल्क योग की कक्षाएं संचालित कर रहे हैं।
4. योग, आयुर्वेद व अध्यात्म को मूल में रखकर आज पतंजलि योगपीठ, पतंजलि योग समिति, भारत स्वाभिमान, महिला पतंजलि योग समिति, युवा भारत व किसान पंचायत संगठनों के माध्यम से लाखों सक्रिय व पूर्णकालिक कार्यकर्ता तथा करोड़ों देशभक्त भाई-बहन कालाधन, भ्रष्टाचार व भ्रष्टव्यवस्था के खिलाफ सम्पूर्ण क्रान्ति के अभियान में मिलकर लगे हुए हैं।
5. देश के करोड़ों लोगों ने श्रद्धा व विश्वास पूर्वक संस्थान को जो दान दिया उसे 100 प्रतिशत प्रामाणिकता के साथ हमने व्यक्ति व राष्ट्र निर्माण में लगाया है। आज प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से 200 देशों के 100 करोड़ से अधिक लोग योगपीठ की सेवाओं से लाभान्वित हुए हैं। इसका यदि आर्थिक मूल्यांकन किया जाए तो लाखों करोड़ रुपये होगा। 10 करोड़ से अधिक लोगों को शिविरों में प्रशिक्षण दिया है। साथ ही आस्था व अन्य टी.वी. कार्यक्रमों से प्रतिदिन लगभग 10 करोड़ लोग परोक्ष लाभ प्राप्त कर रहे हैं।
6. पतंजलि योगपीठ प्रथम व द्वितीय चरण विश्वस्तरीय योग, आयुर्वेद व भारतीय ऋषि संस्कृति की सेवा के साथ-साथ भारत स्वाभिमान के सर्वोच्च केन्द्र के रूप में कार्य कर रहा है।
7. पतंजलि विश्वविद्यालय, पतंजलि आयुर्वेद कॉलेज, योगग्राम, पतंजलि ग्रामोद्योग, गोशाला एवं गुरुकुल का आदर्श रूप में संचालन।
8. बिहार बाढ़, सुनामी से लेकर मुम्बई के आतंकी हमले के समय पीड़ितों की सेवा के साथ-साथ शहीदों का सर्वप्रथम राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान एवं किसी भी राष्ट्रीय आपदा के समय पूरी प्रामाणिकता व पारदर्शिता के साथ सेवाएं दी हैं।
9. योगपीठ में गरीब लोगों के लिए विशेष उपचार की व्यवस्था, गरीब लोगों के विश्राम के लिए विशाल वाल्मिकी धर्मशाला व हजारों लोगों के लिए प्रतिदिन नि:शुल्क लंगर की व्यवस्था के साथ-साथ पूरे देश में रक्तदान, वृक्षारोपण, गरीब कन्याओं का विवाह, कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में अभियान व नशामुक्ति का व्यापक आंदोलन पूरे जोरों पर चल रहा है।
10. योगपीठ में एक हजार से अधिक पूर्णकालिक सेवाव्रती युवक-युवतियों के निर्माण का कार्य चल रहा है तथा देशभर में 1 करोड़ से अधिक कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के सेवा कार्य द्वारा भारत को विश्व की आध्यात्मिक व आर्थिक महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठापित करने का पावन अनुष्ठान जारी है।

पूर्णकालिक व सेवाव्रती कार्यकर्त्ताओं का आह्वान

सेवाव्रती कार्यकर्ताओं के जीवन का एक मात्र लक्ष्य देश, धर्म, संस्कृति व मानवता की निःस्वार्थ व निष्काम भाव से सेवा करना है। अपने पूर्वज ऋषि-ऋषिकाओं, वीर-वीरांगनाओं को अपना आदर्श मानकर 100% प्रामाणिक जीवन जीना है।

जिनके हृदय में आत्म गौरव, आत्म वैभव, राष्ट्र गौरव, राष्ट्र वैभव कूट-कूट कर भरा है, ऐसे कोई भी भाई-बहन चाहे वे किसी भी वंश व जाति से हों, सवर्ण, पिछड़े, अतिपिछड़े, शोषित व वंचित सभी का स्वागत है।

हरिद्वार मुख्यालय में सेवाव्रती का 1 से 2 वर्ष का प्रशिक्षण होगा। इसमें संगठन के सिद्धान्त व विचारधारा से लेकर उसको भारतीय ऋषि संस्कृति बोध के साथ आंदोलन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक परिवर्तन के बारे में गम्भीरता व प्रामाणिकता के साथ प्रशिक्षण दिया जायेगा।

सेवाव्रतियों का ऋषियों जैसा ज्ञान, जीवन व चरित्र रहे, इसके लिए एक बहुत ही अनुशासित दिनचर्या या जीवनचर्या में रहने का अभ्यास कराया जाता है।

गुरुकुल कार्य योजना – महर्षि दयानन्द सरस्वती कहते हैं कि जो देश धर्म जाति व मानवता का उपकार करना चाहे वह यत्न पूर्वक ब्रह्मचारी रहे। संसार का जितना उपकार एक ब्रह्मचारी कर सकता है दूसरा नहीं कर सकता। स्वामी दयानन्द व स्वामी विवेकानन्द दोनों ही कहते थे कि मेरे जैसे अनेक संन्यासियों की इस देश को आवश्यकता है। श्रद्धेय स्वामी जी महाराज भी अपने जैसे एक हजार ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारिणियाँ बनाना चाहते हैं। जो इस पूरे आंदोलन का नेतृत्व करें और तात्कालिक, मध्यकालिक व दीर्घकालिक योजना के तहत् उनको तैयार किया जा सके। हम आगामी 50 वर्षों की योजना के तहत् संगठन में सक्रिय कार्यकर्त्ता, पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता, सेवाव्रती व गुरुकुल में नये आचार्य तैयार कर रहे हैं तथा इसको और बड़ा स्वरूप दे रहे हैं।

जो भाई-बहन सेवाव्रती कार्यकर्त्ता के रूप में अथवा गुरुकुल में ऋषियों की परम्परा से पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके अपना पूरा जीवन देश-धर्म-संस्कृति के लिए अर्पित करना चाहते हैं, वे पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार में सम्पर्क कर सकते हैं–

❋ पतंजलि योगपीठ ❋

दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग, निकट बहादराबाद, हरिद्वार-249405

फोन : 01334-240008

(प्रातः 6 से सायं 10 बजे तक)

पतंजलि
स्वदेशी केन्द्र

विदेशी कम्पनियों की लूट के षड्यंत्र से देश को बचाने के लिए चरणबद्ध तरीके से पूरे देश में एक मजबूत स्वदेशी तन्त्र स्थापित करने की योजना है। स्वदेशी विचार, सिद्धान्त एवं संस्कृति को सम्पूर्ण राष्ट्र में स्थापित करने के लिए देशभर में वर्ष 2013 में 3 से 5 हजार की आबादी वाले बड़े गांव तथा छोटे कस्बों में स्वदेशी केन्द्रों की स्थापना व स्वदेशी प्रचारकों की नियुक्ति की राष्ट्रव्यापी मुहिम से देश में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से

यदि आप भी अपने गांव में स्वदेशी केन्द्र खोलना चाहते हैं तो विस्तृत विवरण अंदर देखें।

पतंजलि स्वदेशी केन्द्र

भ्रष्ट विदेशी कम्पनियों की लूट से राष्ट्र को बचाने के लिए, स्वदेशी की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए तथा स्वदेशी से स्वावलम्बी भारत की परिकल्पना को मूर्त्तरूप देते योग गुरू परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज व आयुर्वेद शिरोमणि आचार्य बालकृष्ण जी की पावन प्रेरणा व संकल्पों को साकार करते हुए अब हम वर्ष 2012 में सम्पूर्ण भारत में ग्राम व तहसील स्तर पर एक लाख से अधिक पतंजलि स्वदेशी केन्द्रों की स्थापना करने जा रहे हैं। यह योजना देश में वर्षो से शोषित हो रहे किसानों व घरेलू उद्योग चला रहे कारीगरों को बाजार उपलब्ध करायेगी तथा देश के हजारों युवाओं के लिए रोजगार का अवसर व लाखों परिवारों के लिये आर्थिक सम्पन्नता का स्रोत साबित होगी। यह अवसर प्रत्येक व्यवसायकर्ता के लिए वैभवशाली राष्ट्र के निर्माण हेतु एक दायित्व, कर्तव्य एवं सेवा का माध्यम है।

इन पतंजलि स्वदेशी केन्द्रों पर पतंजलि आयुर्वेद द्वारा निर्मित्त नित्य उपयोग के उत्पाद दन्त मंजन, शहद आदि स्वास्थ्यवर्धक आँवला रस व एलोवेरा जूस, च्यवनप्राश, बादाम पाक, शुद्ध स्वदेशी व सस्ता नमक, शुद्ध सरसों का तेल, त्वचा व शरीर की प्राकृतिक सुरक्षा हेतु एलोवेरा जैल, जड़ी बूटियों से निर्मित सभी प्रकार के साबुन तेजस ब्यूटी क्रीम, एंटी रिंकल क्रीम, बालों की सुरक्षा के लिये केश-कान्ति शैम्पू, एन्टी डेन्ड्रफ, मिल्क प्रोटीन युक्त शैम्पू व रीठा केश कान्ति शैम्पू, पतंजलि हैण्ड-वॉश, पतंजलि बाम व पीड़ान्तक तेल, क्रेक-हिल क्रीम, दाँतों की मजबूती व सुरक्षा के दन्त कान्ति विश्व का सर्वश्रेष्ठ टूथपेस्ट, स्वास्थ्यवर्धक आरोग्य व नवरत्न आटा, दलिया, बेसन व शुद्ध आरोग्य मसाले, गाँव में निर्मित आटा, दलिया, बेसन, दाले, मंगोड़ी, पापड़ व आचार, मुलहेठी व तुलसी युक्त स्वास्थ्यवर्धक चाय, घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित अगरबत्ती, मोमबत्ती, आर्ट एवं क्राफ्ट के सुन्दर उत्पाद झाड़ू आदि लगभग 100 से अधिक मुख्य घरेलू उत्पाद इन पतंजलि स्वदेशी केन्द्रों पर उपलब्ध होंगे।

पतंजलि स्वदेशी केन्द्र खोलने के लिए नियम एवं अर्हताएं

1. पतंजलि स्वदेशी केन्द्र खोलने के इच्छुक व्यक्ति के पास कम से कम 300 से 500 वर्ग फीट का स्थान तथा कम से कम एक से दो लाख रुपये की निवेश क्षमता हो।
2. स्वदेशी केन्द्र खोलने का पंजीकरण शुल्क 1100 रुपये रहेगा तथा स्वदेशी केन्द्र संचालक को योग, आध्यात्म, संस्कृति व स्वदेशी के प्रचार हेतु कम से कम 11 योग संदेश के सदस्य बनाने पर ही स्वदेशी केन्द्र का पंजीकरण किया जाएगा।
3. स्वदेशी केन्द्र खोलने के लिए अन्य/मुख्य दस्तावेज - 4 पासपोर्ट फोटो, पहचान-पत्र, बिक्री कर के पंजीकरण की प्रति, किराया अनुबन्ध जहां पर पतंजलि स्वदेशी केन्द्र, खोलना है, यदि खुद की दुकान है तो उसके दस्तावेज, बैंक खाते का विवरण, निर्धारित स्थान का फोटो मानचित्र, अधिकृति प्रतिनिधित्व (यदि कोई है)।
4. स्वदेशी केन्द्र को देय लाभांश प्रतिशत (%)- औषधियाँ 16 प्रतिशत वैट रहित, प्रसाधन और खाद्य उत्पाद 10 प्रतिशत वैट रहित।
5. स्वदेशी केन्द्र पर लगभग 100 से अधिक प्रकार के स्वास्थ्य वर्धक खाद्य उत्पाद एवं हर्बल कास्मेटिक्स स्वदेशी घरेलू उत्पाद उपलब्ध करवाये जाएगें।

विशेषः पतंजलि स्वदेशी केन्द्र पर पतंजलि द्वारा निर्धारित उत्पादों की ही बिक्री होगी उस पर कोई भी विदेशी वस्तु तथा कोई भी नशीले/मांसाहारी/अभक्ष्य पदार्थों बिक्री नहीं की जाएगी।

स्वदेशी केन्द्र की विस्तृत जानकारी, स्वदेशी उत्पादों की पूरी सूची एवं आवेदन पत्र का प्रारूप प्राप्त करने के लिए हमारी वेबसाइट- www.patanjaliayurved.org देखें।

भारतीय आयुर्वेदिक कम्पनियों व पतंजलि आयुर्वेद के उत्पादों की मूल्य सूची

क्र.सं.	उत्पाद	पतंजलि आयुर्वेद एण्ड दिव्य फार्मेसी		अन्य आयुर्वेदिक कम्पनियाँ	
		परिमाण	मूल्य	मूल्य	प्रतिशत महंगे
1.	मोती पिष्टी	2 ग्राम	60.00	570.00 से 736.00	850% से 1127%
2.	प्रवाल पिष्टी	5 ग्राम	15.00	103.50 से 114.00	590% से 660%
3.	प्रवाल पंचामृत	5 ग्राम	80.00	400.00 से 462.00	400% से 478%
4.	बादाम पाक	500 ग्राम	225.00	910.00	304%
5.	अविपत्तिकर चूर्ण	100 ग्राम	30.00	76.00 से 105.83	1537% से 253%
6.	अश्वगंधा चूर्ण	100 ग्राम	30.00	64.00 से 82.00	113% से 173%
7.	अकीक पिष्टी	5 ग्राम	15.00	25.00 से 40.00	67% से 167%
8.	स्पेशल च्यवनप्राश (केसर)	1 किग्रा.	215.00	570.00	165%
9.	चन्द्रप्रभा वटी	20 ग्राम	35.00	58.00 से 66.80	66% से 91%
10.	बादाम रोगन	60 मिली.	100.00	180.00	80%
11.	गिलोय सत	5 ग्राम	10.00	13.00 से 15.00	30% से 50%

विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों तथा पतंजलि आयुर्वेद के मुख्य घरेलू उत्पादों की मूल्य सूची

क्र.सं.	पतंजलि के नैसर्गिक, आयुर्वेदिक व प्राकृतिक उत्पाद	परिमाण (रुपये में)	पतंजलि मूल्य	विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के मूल्य	प्रतिशत अधिक मंहगा
1.	एलोवेरा जैल	150 मिली.	75.00	292.50 से 518.64	290% से 592%
2.	तेजस एंटी रिंकल क्रीम	50 ग्राम	150.00	248.75 से 1299.00	66% से 766%
3.	तेजस ब्यूटी क्रीम	75 ग्राम	70.00	103.13 से 371.25	47% से 430%
4.	केश कांति मिल्क प्रोटीन हेयर क्लिंज़र	200 मिली.	95.00	138 से 501.41	45% से 428%
5.	एलोवेरा जूस प्लेन	1 लीटर	180.00	684.25	280%
6.	शुद्ध शहद	500 ग्राम	90.00	283.50	215%
7.	तेजस बॉडी लोशन	100 मिली.	60.00	84 से 132.25	40% से 120%
8.	पतंजलि बाम	25 ग्राम	40.00	52.78 से 66.67	32% से 67%
9.	दंत कांति टूथ पेस्ट	100 ग्राम	35.00	43.75 से 45.00	25% से 29%
10.	टूथ ब्रश	1 नग	8.00	20.00	150%
11.	आरोग्य बिस्कुट	100 ग्राम	10.00	12.35 से 25.00	23% से 150%

पतंजलि आयुर्वेद व दिव्य फार्मेसी के सभी उत्पादों की मूल्य सूची आप हमारी वेबसाईट : www.patanjaliayurved.org पर देख सकते हैं।

इसी प्रकार से हमारे अन्य उत्पादों के मूल्य भी अन्य विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से 2 से 10 गुना तक सस्ते हैं।

100% स्वदेशी

100% शुद्धता व प्रामाणिकता की गारंटी

विदेशी कंपनियों से 2 से 10 गुणा सस्ते व सबसे अच्छे
पतंजलि के ही उत्पाद खरीद कर 50% से 1500% तक की बचत करें

1 देश का पैसा देश में रहेगा व सेवा में लगेगा
2 हमारा धन तो बचेगा साथ ही देश भी बचेगा

पतंजलि आयुर्वेद

एक ईस्ट इंडिया कंपनी ने देश को लूटा व गुलाम बनाया, अब तो 5 हजार से अधिक विदेशी कंपनियाँ देश को लूट रही हैं... आएं! स्वदेशी अपनाएं देश बचाएं।

हमारे सभी उत्पाद एवं वैद्यों से स्वास्थ्य परामर्श सेवा आपके शहर के सभी पतंजलि चिकित्सालयों, आरोग्य केन्द्रों, स्वदेशी केन्द्रों व आपके शहर के प्रतिष्ठित स्टोर्स पर उपलब्ध है।

पतंजलि आयुर्वेद व दिव्य फार्मेसी के सभी उत्पादों की मूल्य सूची आप हमारी वेबसाईट : www.patanjaliayurved.org पर देख सकते हैं।

प्रकाशन सहयोग : पतंजलि आयुर्वेद
डी-38, औद्योगिक क्षेत्र, हरिद्वार-249401, उत्तराखण्ड (भारत)

राष्ट्रसेवा में समर्पित पतंजलि योगपीठ के विभिन्न सेवा प्रकल्प

योग, आयुर्वेद, स्वदशी, वदिक ज्ञान एवं स्वाभिमान का महातीर्थ है पतंजलि योगपीठ। भारतीय शिक्षा पद्धति, स्वदेशी चिकित्सा व्यवस्था, स्वदेशी अर्थव्यवस्था, कुदरती खेती (गोधन व पशुधन आधारित), स्वदेशी उद्योग एवं ग्रामोद्योग आदि के माध्यम से जिस स्वदेशी व्यवस्था परिवर्तन की हम बात करते हैं उसके एक आदर्श व्यवहारिक स्वरुप को हमने धरातल पर उतारा है।

पतंजलि योगपीठ

योगग्राम

पतंजलि विश्वविद्यालय

आचार्यकुलम् शिक्षण संस्थान

पतंजलि ग्रामोद्योग एवं विषमुक्त कुदरती खेती प्रशिक्षण केन्द्र

पतंजलि गौशाला